पारलौकिक शक्तियों पर मेरे अनुभव

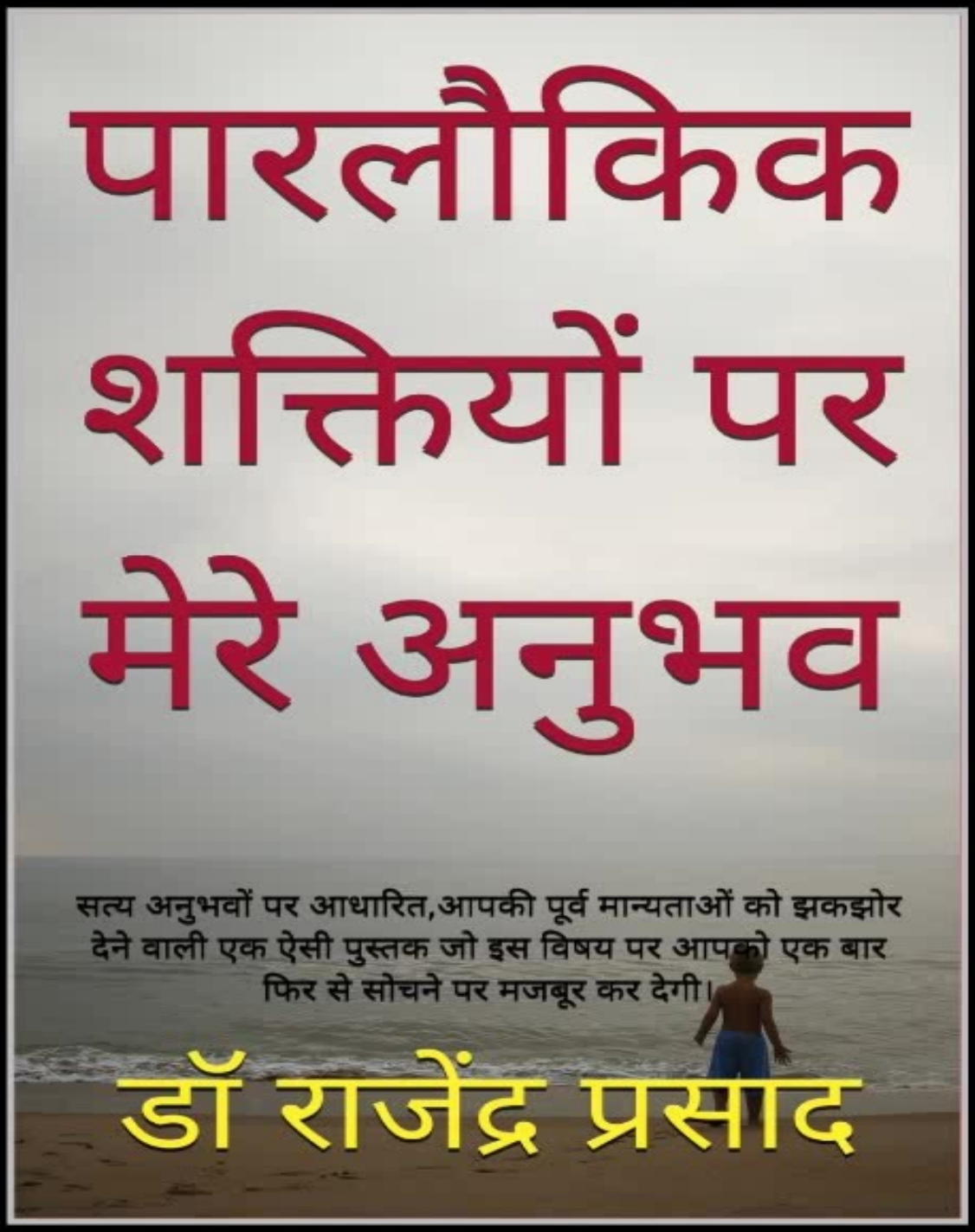

सत्य अनुभवों पर आधारित,आपकी पूर्व मान्यताओं को झकझोर देने वाली एक ऐसी पुस्तक जो इस विषय पर आपको एक बार फिर से सोचने पर मजबूर कर देगी।

डॉ राजेंद्र प्रसाद

पारलौकिक शक्तियों पर मेरे अनुभव

सत्य अनुभवों पर आधारित, आपकी पूर्व मान्यताओं को झकझोर देने वाली एक ऐसी पुस्तक जो इस विषय पर आपको एक बार फिर से सोचने पर मजबूर कर देगी।

डॉ राजेंद्र प्रसाद

कॉपीराइट © 2021 डॉ राजेंद्र प्रसाद

सर्वाधिकार सुरक्षित

इस पुस्तक में वर्णित पात्र और घटनाएँ काल्पनिक हैं। किसी भी जीवित या मृत वास्तविक व्यक्ति से इसकी समानता महज संयोग है और लेखक का ऐसा कोई इरादा नहीं है।

प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना इस पुस्तक के किसी भी भाग को पुनरुत्पादित नहीं किया जा सकता, या पुनर्प्राप्ति प्रणाली में संग्रहीत नहीं किया जा सकता, या किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम से, इलेक्ट्रॉनिक, यांत्रिक, फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग या अन्यथा प्रसारित नहीं किया जा सकता।

आईएसबीएन-13: 9781234567890

आईएसबीएन-10: 1477123456

कवर डिज़ाइन: डॉ राजेंद्र प्रसाद

कांग्रेस की लाइब्रेरी नियंत्रण संख्या:

2018675309

अमेरिका के संयुक्त राज्य अमेरिका में छपी

समर्पण

यह पुस्तक मेरे माता पिता को समर्पित है जिनके बिना आज मैं यहाँ तक नहीं पहुंच पाता, उनके चरणों में सादर प्रणाम वे जहाँ भी हो वही से मुझे आशीर्वाद दे ताकि मैं इसी तरह आगे बढ़ता रहूँ ।

अंतर्वस्तु

शीर्षक पेज
कॉपीराइट
समर्पण
पाठकों से गुफ़्तगू
प्राक्कथन
पारलौकिक शक्तियों द्वारा लिखवाई गयी यह पुस्तक
पारलौकिक शक्तियों पर अलग-अलग धर्मों की मान्यताये
मेरे फूफा और डायन
त्रिकालदर्शी काजल
किसी साधना में गुरु की जरुरत है या नहीं ?
एक जादूगर से मुलाकात
ऊर्जा चिकित्सा (एनर्जी हीलिंग)
स्वामी जी
मेरे गुरु से मेरी मुलाकात
लोना चमारिन
शंका-समाधान
मेरे शुरुआती दिनों के कुछ अनुभव
बूढ़े बाबा और विकलांग लड़का
तारा माँ का वह साधक
सरकारे हुजूर
चलते चलते

धन्यवाद और आभार

पाठकों से गुफ़्तगू

प्रिय पाठकगण,

यह पुस्तक **"पारलौकिक शक्तियों के मेरे अनुभव"** लेखक डॉ. राजेंद्र प्रसाद, जो आपके हाथ में है की रचना भी एक तरह से पारलौकिक घटना है। मैं लेखक से तरक़ीबन ३०-३१ वर्षों से परिचित हूँ। मेरे उनके बहुत से शौक और दिलचस्पियाँ मिलती-जुलती है। इसलिए बात करने के लिए हमें किसी भी प्रकार की औपचारिकता निभाने की जरुरत नहीं पड़ती। पिछले एक-डेढ़ दशक से अमूमन सप्ताह में तीन से चार बार फ़ोन पर बात हो ही जाती है। प्रायः बातें अपने शौकों के इर्द-गिर्द ही होती है इसलिए हम दोनों अगर किसी और वज़ह से व्यस्त नहीं हों, तो बात करना पसंद भी करते हैं। यह मेरा सौभाग्य है की वे अपने सारे अनुभव जो की भिन्न-भिन्न प्रकार के होते हैं, अपने पारस्परिक शौकों के अलावा का जिक्र मुझसे करते रहे हैं. मैं भी उनकी बातों को ध्यान से सुन कर अपनी प्रतिक्रिया देता रहा हूँ।

जहाँ तक मुझे याद है १०-११ साल पहले जब उन्होंने पहली दफा अपने पारलौककक शक्तियों के अनुभवों का जिक्र किया था तो मुझे थोड़ा अचरज सा हुआ था, हालांकि एक अच्छे मित्र की तरह मैंने उनको सुना तो जरूर पर अपनी प्रतिक्रिया देने में सचेत रहा । इसकी पहली वज़ह मेरा इन सब चीजों का ज्ञान या दूसरे शब्दों में अनुभव नहीं था। और दूसरा मैं अपने मित्र को हतोत्साहित नहीं करना चाहता था। फिर बहुत दिनों तक इस विषय पर कोई चर्चा नहीं हुई और बात आयी गयी हो गयी। पर अचानक उन्होंने अपने कुछ अनुभव सुनाये जो अविश्वसनीय थे। मेरे अंतरमन में एक कौतूहल सा था। फिर एक सिलसिला सा चल पड़ा, थोड़े-थोड़े अंतराल पर वे अपने अनुभव साझा करने लगे और मैं एक अच्छे श्रोता की तरह उनको सुनता और अपनी राय देता। पर मै महसूस करता की उसकी वे ज्यादा परवाह नहीं करते। और अगर मैं अपनी बात कहुँ तो मुझे भी कुछ ज्यादा यकीं नहीं होता या दूसरे शब्दों में कहें तो कुछ बातें मेरे समझ से परे होती थीं।

इधर कुछ चंद महीने पहले थोड़े वे बीमार से थे तो उन्होंने फिर से इन सब बातों का जिक्र मुझसे किया तो मैंने उनको सुझाव दिया कि आप जो अपने अनुभव मुझसे साझा करते हैं तो क्यों नहीं इन सबों का जिक्र एक पुस्तक में करते हैं, उससे आपका वक़्त भी कटेगा और कोरोना का जो पीरियड या लॉक-डाउन चल रहा है का सदुपयोग भी होगा। शुरू में तो वह कुछ सकपकाए क्योंकि उनको पुस्तक लिखने का कोई अनुभव नहीं था, पर मैंने अपनी ओर से उनका पूरा हौसला अफजाई की तो वे तैयार तो हो गए पर उन्होंने एक शर्त रखी की मैं उनकी मदद करूँगा, ख़ास कर प्रूफ रीडिंग इत्यादि में। मैंने भी उनको कहा नेकी और पूछ-पूछ।

मेरे पूरे आश्वासन के बाद उन्होंने लिखना तो आरम्भ कर दिया पर बीच-बीच में मेरी राय हर प्रकार की लेते रहे। मैं भी अपनी तरफ से उनको सुझाव देता रहा ख़ास कर पुस्तक के ले-आउट, पुस्तक के संभावित पन्नों तथा पुस्तक का नामकरण या शीर्षक के मुताल्लिक। अगर मैं कहुँ की श्री राजेंद्र जी इन सब चीजों के लिए मुझ पर निर्भर थे तो यह अतिशयोक्ति ही होगी। वे खुद एक आले दर्जे के क्रिएटिव व्यक्ति हैं, उनका किसी पर पर निर्भर होना स्वभाव ही नहीं है। पर शायद पुस्तक लेखन का उनका प्रथम अनुभव था तो मेरी राय या मंतव्य उनके लिये उत्प्रेरक का काम करते हों तो आश्चर्य नहीं ।

ये मेरा सौभाग्य कहें या श्री राजेंद्र जी का मेरे प्रति स्नेह और विश्वास की प्रत्येक अध्याय के समाप्ति पर वे पाण्डुलिपि मेरे पास मेल से भेज देते प्रूफ रीडिंग के लिए और मैं प्रूफ रीडिंग के साथ-साथ यदा-कदा अपने सुझाव उनके पास मेल से ही अग्रसर करता तो वे उसे बेहिचक अपनी लेखनी में शामिल करते। मैं भी एक पाठक के हैसियत से सुझाव दिया करता । वैसे मुझे इसका एहसास था कि वे मेरे सुझाव को तरजीह देते रहें हैं। और मैं भी ईमानदारी और अपनी समझ से जो सर्वश्रेष्ठ होता वही राय देता हूँ।

पर जो एक बात मैं जिसका जिक्र यहाँ करना चाहता हूँ वो यह है कि जब मैं इस पुस्तक के अन्तिम अध्याय का प्रूफ रीडिंग कर रहा था तो कुछ अजीब विचार मेरे मन में उठ रहे थे; इसकी दो वज़ह थी एक तो पुस्तक का रिकॉर्ड टाइम में पूर्ण होना बावजूद इसके कि लेखक को किताब लिखने का कोई भी तजुर्बा न होना दूसरा मैं अपनी ख़ुद की प्रूफ रीडिंग की असमान्य

गति से अभिभूत था, विशेष कर तब जब कि पुस्तक का विषय मेरे अनुरूप नहीं था। पर अब मैं इस बात को शिद्दत से महसूस कर रहा हूँ कि जब मैं लेखक का साथ इस पुस्तक को अंजाम तक पहुंचाने में जुड़ा हुआ था तो मैं एक अज़ीब सी मानसिक जुनून की स्थिति में मुब्तला था। और अब जब मैं आप सबों से मुखाबित हूँ तो यकीनी तौर पे कह सकता हूँ कि इस किताब की पैदाईश पारलौकिक ही है। इसे सिर्फ महसूस ही किया जा सकता है।

अंततः मैं एक बात जरूर कहना चाहता हूँ कि पूरे पुस्तक पढ़ने के बाद मैंने महसूस किया ख़ास कर अन्तिम अध्याय में कि वे एक विलक्षण प्रतिभा के स्वामी हैं उनके अनुभव और उनकी व्याख्या इस बात के प्रमाण हैं। मैं हिन्दी के सभी पाठकगणों से जिनको इस तरह के विषय में रुचि है से आग्रहपूर्ण निवेदन करूँगा कि आप अपने मंतव्य पुस्तक के एक या दो अध्याय पढ़ कर न बनायें। मैंने इन विषय पर अनेकों किताबों (हिन्दी और अंग्रेजी) का अध्यन किया है और मैं दावे से कह सकता हूँ कि यह पुस्तक अन्य कई पुस्तकों से ज्यादा कुछ अपने पाठकों को प्रदान करने की क्षमता रखती है।

शुभकामनाओं सहित,

सुमन श्रीवास्तव

प्राक्कथन

तंत्र मन्त्र यन्त्र, भूत प्रेत, डायन चुड़ैल, तांत्रिक, मांत्रिक, ओझा, मीडियम, प्लेंचेट और देवी देवता पर बहुत सी किताबे लिखी जा चुकी है इसलिए आपके मन में यह सवाल उठेगा की इस पुस्तक में ऐसा नया क्या है जिसके लिए यह पुस्तक पढ़ी जाये ? ऐसी किताबे मैंने भी पढ़ी है, इनमे अधिकांश विदेशी लेखकों के द्वारा लिखी गयी है और इनमे इन घटनाओं पर उनका अनुभव और विश्लेषण दिया रहता है। विदेशी पुस्तकों में इस विषय पर जानकारी के लिए माध्यम (मीडियम) का प्रयोग किया जाता है। उनकी पुस्तकों में मंत्र, तंत्र का जिक्र नहीं मिलता। इसलिए मैंने महसूस किया की एक ऐसे पुस्तक की जरुरत है जिसमे मंत्र, तंत्र, यन्त्र, अदृश्य शक्तियों और उन्हें वश में करने के उपायों का वर्णन हो खास तौर पर भारत में प्रचलित प्रयोगों का वर्णन हो और वह दुसरो के नहीं किसी व्यक्ति के खुद के अनुभब पर आधारित और प्रामाणिक हो, पर ऐसी कम ही पुस्तकें मैंने देखी है जो किसी के व्यक्तिगत अनुभव पर लिखा गया हो। इसलिए मैंने यह पुस्तक लिखी जो मेरे अपने अनुभवों पर आधारित है। इसलिए आपको इस पुस्तक में ऐसी जानकारियां मिलेगी जो आपको अन्य पुस्तकों में नहीं मिलेगी जैसे भूत प्रेत, अदृश्य शक्तियां होती है या नहीं, क्या इन शक्तियों का प्रयोग कर मानसिक या शारीरिक रोग पैदा या ठीक किये जा सकते हैं, क्या ओझा, तांत्रिक वास्तव में इससे ग्रस्त लोगों को ठीक करते हैं या वे मनोविज्ञान का सहारा लेते हैं, क्या देवी-देवता होते हैं, क्या ईश्वर हैं और अगर हैं तो कौन सा धर्म सही है या गलत, क्या परमात्मा, अल्लाह, ईशु मसीह और अलग अलग धर्मों के देवता अलग-अलग है या एक ही ईश्वर को हम भिन्न नामों से पुकारते है, भूत, भगवान कहाँ रहते हैं, क्या मंदिरो में भगवान रहते हैं, क्या पारलौकिक शक्तियां आपकी मदद कर सकती है, क्या ये आपस में बात कर सकते हैं, क्या इन्हे गुलाम बनाया जा सकता है और मनचाहा काम लिया जा सकता है, क्या जिन्न परी होते हैं, क्या भूत ग्रस्त व्यक्तियों को ये दिखाई पड़ते हैं, मरने के बाद क्या होता है, क्या पुनर्जन्म होता है, क्या हमें कर्मों का फल भोगना पड़ता है, क्या पारलौकिक शक्तियां भूत भविष्य बतला सकते हैं, क्या इनसे खोये व्यक्तियों का पता लगाया जा सकता है, तंत्र सीखना सही है या गलत, इस मार्ग में कहाँ लोग गलती करते हैं, रेकी, प्राणिक हीलिंग सही है या ढकोसला, इन सब और आपके बहुत से अन्य अनुत्तरित सवालों के जवाब मेरे अनुभव के आधार पर इस पुस्तक में आपको मिल जायेगे। एक बात यहाँ मैं और कहना चाहता हूँ, यदि

आप तंत्र, मंत्र सीखने के लिए यह पुस्तक खरीद रहे हों तो इसे मत ख़रीदे क्योंकि आपको निराशा होगी। यह पुस्तक तंत्र मंत्र सिखाने के लिए नहीं लिखी गयी है।

मै बचपन से ही बहुत जिज्ञासु था और हर नयी चीज जानने की की मुझे जिज्ञासा रहती थी और इसी जिज्ञासा ने मुझे ये अनुभव दिये, आप यह भी कह सकते हैं की यह मेरा सौभाग्य था की अचानक मुझे इन शक्तियों की जानकारी मिलती चली गयी। यह पुस्तक किसी विशेष वर्ग के लोगों के लिए नहीं यह उन सभी के लिए है जो इन विषयो पर जानने का शौक रखते हैं और उन लोगों के लिए भी है जो इस मार्ग में आगे बढ़ने की सोच रहे हैं। लोगो की निजता कायम रखने के लये इस पुस्तक के पात्रों और जगह के नामों को बदल दिया गया है। किसी पुस्तक को लिखने का यह मेरा पहला प्रयास है इसलिए कुछ गलतियों का होना स्वाभाविक है, आशा करता हूँ पाठक इसके लिए मुझे क्षमा कर देगें और उसे नजरअंदाज कर देगें। इस पुस्तक से सम्बंधित आपके कोई सवाल हो या आप इस विषय पर अपना कोई अनुभव मेरे साथ साझा करना चाहते हों तो आप उसे मेरे इ-मेल पर भेज सकते हैं। इस पुस्तक को लिखने में जिन लोगों ने प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से मेरी सहायता की है उन्हें मै तहेदिल से धन्यवाद् करता हूँ।

राजेंद्र प्रसाद

इ-मेल – पैरानॉर्म534@जीमेल.कॉम

पारलौकिक शक्तियों द्वारा लिखवाई गयी यह पुस्तक

मैं यह पुस्तक लिखना खत्म कर चुका था और अब इसका अंग्रेजी अनुवाद जारी था। ऐसे समय में तीन चार दिनों से जब मै फुर्सत में होता था या टहलता था मेरे अंदर से यह आवाज आनी लगी कि इस पुस्तक में यह अध्याय जोड़ो। फिर उसके बाद यह विचार भी आने लगे की इसमें ये सब बाते लिखो। ऐसा लग रहा था की कोई शक्ति मुझे इसे लिखने के लिए प्रेरित/मजबूर कर रही हो। इसलिए मुझे आज बैठकर इसे लिखना ही पड़ा। इस पुस्तक की शुरुआत करने से लेकर अब तक मुझे लगता रहा कि कोई ऊपरी शक्ति मुझसे यह पुस्तक लिखवा रही है। कुछ बातों का मैं इस सन्दर्भ में जिक्र करना चाहूँगा जिससे आपको भी इस बात का अनुभव हो सके। जैसा कि मैं पहले हीं आपको बतला चुका हूँ कि मैं कोई पेशेवर लेखक नहीं। आज से ६ महीने पहले मेरे मन में यह ख्याल भी नहीं आया कि इस विषय पर कोई पुस्तक लिखी जाय। लेकिन मेरे मन में यह ख्याल उठने लगें की मुझे इस विषय पर यह एक पुस्तक लिखनी चाहिए। पर मुझे इस बात का कोई अंदाज नहीं था कि पुस्तक कैसे लिखी जाती है। फिर मैंने इस ख्याल को मन से निकलना चाहा पर यह ख्याल था कि मुझे छोडता ही नहीं था। अंत में मैंने इस बात का जिक्र अपने दोस्त श्री सुमन श्रीवास्तव से किया। मैंने अपने इन अनुभवों को कई बार उन्हें बताया था पर उन्होंने इसपर ज्यादा रूचि नहीं दिखलाई थी पर आश्चय की बात यह थी कि इस बार उन्होंने मुझे लिखने के लिए प्रेरित किया। एक बात का और ख्याल मेरे मन में उठा कि पुस्तक छपवायी कैसे जाएगी क्योकि नए लेखक को खुद अपना पैसा लगाकर कोई पुस्तक छपवानी पड़ता है ऐसा मैं अपने कुछ दोस्तों का अनुभव सुन चुका था। इसलिए अब मैंने इस बात पर सोचना ही छोड़ दिया क्योंकि मैं क्यों एक ऐसी पुस्तक पर खर्चा करता जिसका कोई भविष्य ही नहीं था। दूसरे ही दिन जब मैं इंटरनेट पर ऐसे ही कुछ देख रहा था की मेरे सामने एक लेख अमेजॉन के किंडल पब्लिकेशन पर आ गया और मैंने उसे पढ़ा और मुझे यह जानकार आश्चर्य हुआ की इसपर मुफ्त में भी पुस्तक छपवाई जा सकती है। अब पुस्तक नहीं लिखने का कोई कारण मेरे सामने नहीं था। इसलिए पुस्तक लिखने के बारे में मुझे अब गंभीरता से सोचना पड़ा। पर पुस्तक का कोई नाम, कथावस्तु मेरे पास नहीं थी। न ही मुझे यह समझ में आ रहा था कि मैं लिखूंगा क्या ? आपको शायद यह बात पढ़कर आश्चय हो कि सुमन जी से मुझे

पूछना पड़ा कि आखिर पुस्तक की प्रस्तावना में क्या लिखा जाता है? वे पुस्तकों को पढ़ने के शौकीन है तब उन्होंने मुझे इसके बारे में समझाया।

कुछ बाते मैं अपने बारे में बतला दूँ कि मैं किस परिस्थिति यह पुस्तक लिखी। मेरे मुँह का एक बड़ा आपरेशन १५ दिन पहले ही खत्म हुआ था और मैं स्वाथ्य लाभ कर रहा था। मेरी नाको में ट्यूब लगा था और मैं केवल उसके द्वारा केवल तरल खाना खा सकता था। मेरे कान, मुँह में अक्सर दर्द रहता था और कमजोरी बहुत थी। क्या ऐसी परिस्थियों में नयी पुस्तक लिखने की कोई सोच सकता है? पर कोई ऊपरी शक्ति थी जो मुझे इसकी प्रेरणा दे रही थी। मुझे क्या लिखना है इसके विचार मेरे मन में पहले से ही आ जाते थे। और तो और मैंने यह पुस्तक मात्र ४ महीनों में लिखकर पूरी कर ली। मेरे दोस्त सुमन जी ने खुद कहा की इसकी प्रूफ रीडिंग मैं करूँगा।

पहले मुझे इसकी चिंता थी कि एक अनजान लेखक की पुस्तक कौन पढ़ेगा पर अब वह चिंता भी ख़त्म हो गयी क्योंकि मैंने सोचा जो शक्ति मुझसे लिखवा सकती है क्या आगे की योजना उसके पास नहीं होगी ? हम ही कितने नादान हैं कि कोई चीज जब हम कर गुजरते है तो तुरंत अपनी पीठ थपथपाने लगते है पर वास्तव में वह शक्ति ही हमसे काम करवाती है और उसका श्रेय हम अपने आप को देते है। एक सुन्दर दृश्य को देखते ही एक कवि तुरंत उसपर कविता लिख देता है जबकि उससे ज्यादा पढ़ा लिखा आदमी चाह कर भी कविता नहीं लिख पाता, कभी आपने यह सोचा की यह प्रेरणा देने वाला कौन है? एक वैज्ञानिक को एक आविष्कार की प्रेरणा कौन देता है हम सभी तो आविष्कार नहीं कर पाते? वास्तव में एक कोई शक्ति है जो पूरी दुनिया को कठपुतली की तरह नचा रही और हम इस गलतफहमी में है कि सब कुछ हमारे सोचने और करने से हो रहा है।

मैंने भारतीय आद्यात्मिक पुस्तकों में आकाशवाणी के विषय में पहले पढ़ा था। आकाशवाणी एक संस्कृत का शब्द है जिसका शाब्दिक अर्थ है आकाश से आती हुई आवाज (सेलेस्टियल अनाउंसमेंट). उनमे लिखा था कि ये आकाशवाणी हुई कि ऐसा होने वाला है और भविष्य के बारे में जानकारी पहले से दी जाती थी। पहले मैं इसे कपोल कल्पना समझता था पर

आज मुझे यह विस्वास होने लगा कि ऐसा होता होगा हम ही शायद अब उतने सवेदनशील नहीं रहे कि उसे ग्रहण कर सके। बहुत से लोग यह समझते है कि कुरान मुहम्मद साहब ने लिखा। अगर आप भी ऐसा समझते है तो आप गलत है। कुरान को पैगंबर मोहम्मद के सहाबी ने लिखा था | पैगंबर मोहम्मद अपने सहाबी को कुरान की आयते पढ़ कर सुनाते थे और वो लोग उसे तुरंत लिख लेते और याद भी कर लेते थे | और पैगंबर को ये आयते ईश्वर अपने एक फरिश्ते द्वारा याद कराते थे, जिनका नाम जिब्रील था |

अल्लाह ने एक अनपढ़ आदमी को इसलिए चुना क्युकि कोई व्यक्ति ये ना कह सके की ये कुरान को मुहम्मद ने ही लिखा है ये कोई ईश्वरीय किताब नही है। परंतु अफसोस की बात है कि कुछ नासमझ लोग अब भी ये कहते है की कुरान को पैगंबर मुहम्मद ने लिखा है | ये बिल्कुल गलत है क्युकि जब पैगंबर मुहम्मद को लिखना पढ़ना आता ही नही था वो किताब कैसे लिख सकते है ?

मैंने कभी आकशवाणी नहीं सुनी न ही मुझे किसी फरिस्ते के कभी दर्शन हुए मुझे तो मेरे मन में कुछ करने या लिखने के ख्याल आ जाते थे। अब इसे आप क्या कहेगे ? क्या यह किसी अदृस्य शक्ति या पारलौकिक शक्ति की प्रेरणा थी इसक निर्णय करना मैं आपपर छोड़ता हूँ।

पारलौकिक शक्तियों पर अलग -अलग धर्मों की मान्यताये

अदृश्य शक्तियों पर तक़रीबन हर धर्म में विश्वास किया जाता है और बहुत देशों में तो इनके बारे में जानने और उन्हें वश में करने के लिए अनेकों विधियाँ उपयोग में लायी जाती हैं।

इस्लाम में तंत्र, मंत्रो के उपयोग पर मनाही है पर उर्दू में आपको ऐसी बहुत सी किताबे मिल जाएगी जिसमें इस्लामी तंत्र का विस्तृत बर्णन है। खास तौर पर जिन्न, परी को वश में करने की

विधि, हानी पहुंचाने वाली बुरी शक्तियों को पकड़ने, जलाने, या बोतल में बंद करने, हमजाद सिद्धि, खजाने को खोजने आदि की जितनी विधियों का उल्लेख इनकी किताबों में मिलता है वह कही और नहीं मिलता। इस्लाम में कुरान के आयतों से रोगों को ठीक किया जाता है तथा भूत प्रेतों को भगाया जाता है। जिन्न के बारे में तो कुरान मे एक पूरा सूरा (अध्याय) ही है। सूरा अल-जिन्न इस्लाम के पवित्र ग्रन्थ कुरआन का 72 वां सूरा है। सूरा 15 हिज्र की आयत 27 में स्पष्ट किया गया है कि मनुष्य और जिन्न दोनों का अलग-अलग अस्तित्व होता है और खुदा ने ही दोनों की सृष्टि की है। जिन्न मनुष्य से पहले पैदा किए गए थे। इसके आयत 26-27 में साफ़-साफ़ बताया गया है कि मनुष्य की सृष्टि जिस तत्व से हुई है वह मिट्टी है और जिन्नों की सृष्टि जिस तत्व से हुई है वह है अग्नि। सूरा 7 में स्पष्ट शब्दों में कहा गया है कि जिन्न मनुष्यों को देखते हैं, किन्तु मनुष्य उनको नहीं देखते, जिन्न ऊपर के लोकों की ओर उड़ सकते हैं, किन्तु एक सीमा से आगे नहीं जा सकते। जिन्न का अपना एक स्थायी बाह्य अस्तित्व होता है और वे मनुष्य से अलग एक दूसरी ही जाति के अदृश्य प्राणी हैं।

बौद्ध धर्म सुनते ही हमें उनकी अहिंसा का सन्देश याद आता है पर क्या आपको मालूम है कि बौद्ध धर्म में भी तंत्र का विस्तृत वर्णन है, तिब्बत में इसे बहुत ही प्रयोग में लाया जाता है और इसे वज्रयान के नाम से जाना जाता है। वज्रयान के साथ-साथ मन्त्रायण, गुह्यमन्त्रायण, तांत्रिक बौद्ध धर्म तंत्र और "गुप्त मंत्र" से जुड़ी बौद्ध परम्पराये मध्ययुगीन भारत में विकसित हुए और तिब्बत, पूर्वी एशिया, मंगोलिया और अन्य हिमालयी राज्यों में फैल गए। इसमें मंत्र, धरणी, मुद्रा, मंडल, देवताओं और बुद्ध की कल्पना का उपयोग करने वाले अभ्यास शामिल हैं। कहते है की वज्रयान के तंत्र और वंश को बौद्ध शाक्यमुनि द्वारा पढ़ाया गया था।

सिख धर्म में भी भूत-प्रेत आदि पर विश्वास करने से मना किया गया है पर खुद गुरुनानक की जीवनी में एक तांत्रिक प्रयोग का उल्लेख है। अपने देश, विदेश की यात्रा के दौरान गुरुनानक असम पहुंचे थे वहां उनके सहयोगी मरदाना को भूख लगी तो गुरुनानक ने उन्हें शहर जाकर भिक्षा मांग कर लाने को कहा।

जब मरदाना दो दिनों तक नहीं लौटा तो गुरुनानक खुद उसे ढूढ़ने निकले तब उन्हें मालूम पड़ा कि मरदाना को तो भेड़ बनाकर कैद कर लिया गया है तब वे अपनी शक्तियों से उसे फिर से इंसान बनाकर लौटा लाये।

यूरोपीय देशों में भी अदृश्य शक्तियों पर विश्वास किया जाता है। इन शक्तियों की जानकारी के लिए वे मीडियम का उपयोग करते हैं। मीडियम ऐसे व्यक्ति होते हैं जिनमें अदृश्य शक्तियों से संपर्क करने की योग्यता होती है। पर यूरोपीय देशो को तंत्र, मंत्र की जानकारी ही नहीं, हां कुछ यंत्रो का सिमित प्रयोग वे भी करते हैं जैसे प्लेन्चेट । इसलिए उनकी पुस्तकों में मंत्रो, गुरु और खास तौर पर भारत में उपयोग में लायी जाने वाली पद्धतियों का उल्लेख नहीं मिलता।

अफ्रीका, तिब्बत, मिश्र, भारत में सदियों से इनका प्रयोग किया जाता रहा है। अफ्रीका, नाइजीरिया, घाना आदि देशों में माने जाने वाले धर्म को वूडू के नाम से जाना जाता है। यहाँ यह माना जाता है कि मृतकों की आत्माएं जीवित दुनिया के साथ-साथ रहती हैं, आत्माओं का प्रत्येक परिवार में अपनी स्वयं की महिला पुजारिन होती है जिसे एक ऐसे देवता के रूप में देखा जाता है, जो अन्य सभी देवताओं का मालिक है। उसके नाम पर कोई मंदिर नहीं होता है। लोग संकट के समय में उससे प्रार्थना करते हैं। यहाँ जोम्बी बनाये जाने की भी परंपरा है। जोम्बी एक जीवित लाश को कहा जाता है। इससे गुलामो की तरह काम लिया जाता है ये अपने दिमाग का उपयोग नहीं कर सकते है।

भारतवर्ष में तो मंत्र, तंत्रो के प्रयोग की इतनी विविधता पायी जाती है की आश्चर्य होता है। यहाँ तो इसके लिए अलग से एक तंत्र शास्त्र है जिसके जनक शिव माने जाते हैं। यहाँ तो अलग-अलग कामों के लिए इन्हें वर्गीकृत किया गया है जिन्हे अभिचार कर्म के नाम से जाना जाता है। प्रायः छहः प्रकार के अभिचारों का वर्णन मिलता है **1. मारण, 2. मोहन, 3. स्तंभन, 4. विद्वेषण, 5. उच्चाट्टन और 6. वशीकरण।** मारण से प्राणनाश करने, मोहन से किसी के मन को मुग्ध करने, स्तंभन मंत्र द्वारा विभिन्न घातक वस्तुओं या व्यक्तियों का निरोध, स्थितिकरण या नाश करने, विद्वेषण से दो अभिन्न हृदय व्यक्तियों में भेद या द्वेष उत्पन्न करने, उच्चाटन से किसी के मन को चंचल, उन्मत्त या अस्थिर करने तथा वशीकरण से राजा या किसी स्त्री अथवा अन्य व्यक्ति अथवा

पशु के मन को अपने वश में करने की क्रिया संपादित की जाती है। यहाँ तो कुछ ऐसे मन्त्र भी हैं जिनसे रोगो को ठीक किया जा सकता है, जैसे पीलिया, सरदर्द, माइग्रेनम, कानदर्द, दांत दर्द, कमर दर्द आदि को ठीक करने के लिए यहाँ अलग-अलग मंत्र मिलते हैं।

मैं कौन हूँ ?

इस पुस्तक को पढ़ने के पहले आप यह जरूर जानना चाहेंगे कि मैं कौन हूँ क्या मैं कोई

तांत्रिक हूँ, पुजारी हूँ, या साधू हूँ, तो मैं आपको बतला दूँ की मैं ऑफिस में काम करने वाला एक आम इंसान हूँ। मेरा परिवार एक साधारण मध्यम वर्गीय परिवार है। मेरे पिता सरकार में एक अच्छे ओहदे पर थे। घर के एक कमरे के एक भाग में कुछ देवताओं की मूर्तियां और तस्वीरें रखी थी और घर का वही भाग हमारा मंदिर था। माँ घर का काम देखती थी। वे प्रतिदिन नहाने के बाद अगरबत्ती या दिया इस छोटे मंदिर में जला देती थी और लगभग ५ मिनट तक सब देवताओं को प्रणाम या अभिषेक करती थी। पिता शंकर के भक्त थे और प्रतिदिन नहाने के बाद वे १० से १५ मिनट तक उनकी और अन्य देवताओं की पूजा करते थे और कुछ स्त्रोतों का भी नियमित पाठ करते थे तभी वे खाना खाते थे, और हम भाई - बहन नहाने के बाद एक अगरबत्ती पूजास्थल पर जला देते थे पर यह हमारा प्रतिदिन का नियम नहीं था।

घर के कुछ नियमों का भी पालन हमें करना पड़ता था जैसे रात नौ बजे के पहले हमें घर आ जाना पड़ता था, हमें अकेले सिनेमा जाना मना था, पूरा परिवार एक साथ सिनेमा देखने जाते थे और यह भी ध्यान रखा जाता था कि फिल्म बच्चों को देखने के लायक है या नहीं। हमारे पढ़ने, खाने और सोने का समय निर्धारित था। किसी मित्र के साथ बाहर जाने के पहले यह बतलाना पड़ता था कि हम कहाँ और क्यों जा रहे हैं और तब अनुमति मिलने पर ही हम जा सकते थे। बचपन से मै बहुत ही जिज्ञासु था और हर चीज के बारे में मै यह जानना चाहता था कि वे कैसे काम करती हैं। खिलौने से मैं कुछ ही समय खेलता था और जल्द ही उसे उसे तोड़कर यह

देखने लगता था कि वह काम कैसे करती है। बचपन में मैं रेडिओ, वायरलेस, दूरबीन, प्रोजेक्टर आदि बनाया करता था। शुरू से ही केवल एक ही चीज से मुझे लगाव नहीं था और वह चीज थी राजनीति। दसवीं तक आते-आते मैंने पढ़ाई पर ध्यान देना शुरु किया। दसवीं में पूरे प्रान्त में टॉप टेन लड़कों में मेरा नाम आया। उस समय स्कुल के नंबर के आधार पर ही कॉलेजों में एडमिशन होता था। इसलिए प्रान्त के सबसे अच्छे कॉलेज में मुझे दाखिला मिला और मै हॉस्टल में रहकर पढ़ने लगा।

कॉलेज में छह महीने बिताने के बाद मेरे साथ एक ऐसी घटना घटी जिसने मेरे जीवन को बदल कर रख दिया। पहले मेरे सर में दर्द रहने लगा। यह दर्द धीमा था पर लगातार रहता था। इसके साथ ही मैंने महसूस किया कि किसी चीज को पढ़ने के बाद समझने में मुझे परेशानी होती है और मेरी यादास्त भी कम होती चली जा रही है। मुझे एक न्यूरोलॉजिस्ट को दिखलाया गया। उसने कहा ये एक प्रकार का डिप्रेशन है जो इस उम्र में लड़कों को हो जाया करता है। उसने इसके लिए उसनें दवाये लिख दी। इन दवाओं के प्रभाव से मैं दिन में १४ घंटे सोया रहने लगा। डॉक्टर्स से पूछने पर उन्होंने कहा कि सोना इनकी सेहत लिए अच्छा है। अब ऐसी स्तिथि में कॉलेज में कैसे रहता? इसलिए मुझे मेरे पिता अपने साथ घर ले आये। मेरी पढ़ाई छूट गयी। फिर मुझे दूसरे डॉक्टर्स से भी दिखलाया गया जिन्होंने मेरी दवा बदली। मेरी नींद कुछ कम हुई। इन सबके कारण पढ़ाई में मैं एक साल पीछे चला गया और अब मै पहले जैसा पढ़ नहीं पता था। इस दौरान कई और डॉक्टर बदले गए और मै पहले से धीरे-धीरे ठीक होता गया। पर मै अपने जीवन का अमूल्य समय गवाँ चुका था। मैं डॉक्टरी पढ़ना चाहता था पर मेडिकल कम्पटीशन में मुझे अच्छे अंक नहीं मिले इसलिए मै मेडिकल कॉलेज में एडमिशन नहीं ले पाया। बाद में मैंने सामान्य कॉलेज से बीएससी और एमएससी किया। इसके बाद मुझे एक ऑफिस में अकाउंटेंट के काम पर संतोष करना पड़ा। मेरे पिता ने मुझे कहा चलो एक तरह से तुम्हारे लिए यह ठीक ही है, तुम्हे केवल १० से ५ काम करना पड़ेगा उसके बाद का समय तुम अपनी दूसरी शौक को पूरा करने में लगा सकते हो, तुम्हारे शौक भी तो इतने सारे हैं और उनके बिना तुम रह भी नहीं सकते। बाद में मैंने यह सोचा कि मुझे शायद यही करना था, अगर मै डॉक्टर हो गया रहता तो शायद यह किताब मैं नहीं लिख पाता। पढ़ने का मुझे शुरू से ही शौक था मै हर चीज के बारे में जानना चाहता था। अपनी बीमारी से तो मै परेशान था ही मैंने सोचा

कि क्यों न खुद अपनी बीमारी के बारे में जाना जाये खुद क्यों न अपनी दवाई खोजी जाये? मैंने एलोपैथी की किताबों का अध्यन शुरू किया और खुद अपनी दवाएँ खोजकर उनका इस्तेमाल करना शुरू किया और मै अब अपने आप को पहले से ज्यादा बेहतर महसूस करने लगा, पर मैंने पाया कि इस पद्धति से मेरी बीमारी पूरी तरह ठीक नहीं हो सकती;, मुझे उम्र भर दवा लेते रहना पड़ेगा। तब मेरा ध्यान अन्य चिकित्सा की अन्य पद्धतियों की ओर गया और तब मैंने आयुर्वेद, होमियोपैथी का भी अध्ययन किया। रोगों को ठीक करने वाली पद्धतियों पर मेरी रूचि बढ़ी और तब मैंने एक्यूप्रेशर, मैग्नेटोथैरेपी, नेचुरोपैथी यहाँ तक कि एनर्जी - हीलिंग का भी का भी अध्यन किया।

बाद में भविष्य जानने की ओर मेरी रूचि बढ़ी तब मैंने, हस्तरेखा, ज्योतिष, अंक विज्ञान का भी अध्यन किया। तंत्र-मंत्र की किताबों की ओर भी मेरा ध्यान गया और मैंने उनकी भी बहुत सी किताबे पढ़ी। मैंने कुछ मन्त्रो को किताबों के अनुसार सिद्ध कर इस्तेमाल किया पर हर बार मुझे असफलता मिली और मै यह सोचने लगा की कही यह सब बकवास तो नहीं?

मेरे फूफा और डायन

एक बार मेरे फूफा मेरे घर पर कुछ दिनों के लिए आये। मैंने सुन रखा था की उन्होंने किसी बच्चे को डायन के चंगुल से मुक्त किया था। तंत्र-मंत्र में शुरू से मेरी रूचि थी इसलिए मै उनके मुँह से इस कहानी को सुनना चाहता था। मेरे फूफा काफी गम्भीर स्वभाव के थे और कम ही बोलते थे इसलिए इसके बारे में उनसे पूछने में मुझे संकोच होता था पर वे मुझे मानते बहुत थे इसलिए मैंने हिम्मत जुटाइ और एक दिन अकेले में मैंने उनसे इसके बारे में पूछा, थोड़े आनाकानी के बाद उन्होंने मुझे अपनी आपबीती सुनाई।

मैंने उनसे कहा कि डायन के बारे में किताबो से मुझे ज्यादा जानकारी नहीं मिली है इसलिए पहले इनके बारे में आप मुझे बतलाये।

उन्होंने कहा कि भूत-प्रेत, चमत्कार, काली शक्तियों और अलौकिक ताकतों से भरी इस दुनिया में बहुत कुछ ऐसा है जो इंसानी समझ से बिल्कुल परे है, इतना कि विज्ञान भी इनके होने का कारण कभी स्पष्ट नहीं कर पाया है। महाराष्ट्र के लातूर जिले में बसा एक छोटा सा गांव है हारांगुल, जिसके बारे में यह माना जाता है कि यही से डायनों का उद्भव हुआ था । अक्सर लोग यह सोचते हैं कि डायने बूढी और बदसूरत होती है, उनके पैर उलटे रहते है। पर यह धारणा बिलकुल गलत है डायनें खूबसूरत और जवान भी हो सकती है और उनके पैर भी उलटे नहीं रहते। डायने बड़ी गुप्त रूप से रहती है क्योंकि गाँव में यह पता लग जाने के बाद इनका गाँव में रहना मुश्किल हो जाता है और इन्हे समाज से बहिस्कृत कर दंड भी दिया जाता है। उन्होंने कहा कि उनके बारे में किसी किताब में तुम्हे जानकारी नहीं मिलेगी क्योंकि यह विद्या कही लिखी नहीं मिलती केवल गुरु को इसके बारे में जानकारी होती है और वह केवल अपने शिष्यों को खुद बतलाता है। फिर भी कुछ न कुछ इनके बारे में पता चल ही जाता है और उन्ही के आधार पर लोग इनके बारे में बतलाते हैं। मैंने इनके बारे में गाँव के बुजुर्गों जो सुना है वही तुमको बतला देता हूँ।

प्रायः सभी गाँव में काला जादू करने वाली कुछ औरतें होती हैं जिन्हे डायन के नाम से जाना जाता है। ये अपनी तंत्र शक्ति का इस्तेमाल दुसरो को दुःख देने के लिए करती हैं। इनके तंत्र बहुत शक्तिशाली होते हैं और जैसे-जैसे ये बूढी होती जाती हैं इनकी शक्ति बढ़ती जाती है। इनका मंत्र छोटा और कुछ ही शब्दों का होता है। जिस परिवार को इन्हे दुःख देना होता है उनके दरवाजे पर ये अपनी माहवारी के कपडे गाड़ देती है जिससे उस परिवार में देवी-देवता आने से कतराने लगते हैं और इन्हे अपना काम करने में आसानी हो जाती है। इनकी साधना बड़ी गोपनीय होती है। ये दीपावली की रात १२ बजे के बाद अपने गाँव को मन्त्र से बांधकर शमशान में इकट्ठा होती हैं और अपने गुरु के मार्गदर्शन में नग्न होकर, कमर में झाड़ू बांधकर अपने ही मलमूत्र से लीप पोतकर एक गोल घेरा बनती है और उसके चारो और पैर में घुँघरू बांधकर नाचती हैं और उसके बाद वहीं डायन विद्या सीखती हैं।

बहुत सी औरते यह विद्या सीखना नहीं चाहती क्योकि डायनो का अंत बहुत ही कस्टकर होता है। किसी भी डायन को अपने जीवन काल में ही कुछ चेलिन बनाना अनिवार्य होता है।

गाँव में गरीब और निम्न जाती के लोगों पर बड़ी जाती के पैसे वाले लोग बहुत जुल्म ढाते है, कुछ लोग उनका बलत्कार कर देते है और वे कुछ नहीं कर पाती, कुछ औरतो को संतान नहीं होता या जब वे विधवा हो जाती है तो उनके अपने रिस्तेदार ही उसकी संपत्ति हड़प जाते हैं। डायन ऐसी ही स्त्रियों को चुनती है जो सताई हुई हो, जो किसी से बदला लेना चाहती हो या उनमे ईष्या की भावना भरी हुई हो। तब वे उसे बस में करकर ४/५ मंत्र सिखा देती है और उसे इस लाइन में ले आती है।

पहली बार कोई औरत किसी से बदला लेने के लिए यह विद्या सीखती है। इनका गुरु इन्हे मंत्र सिखाने के बाद इनसे अपने परिवार के किसी सदस्य, चाहे वह उसका पति हो, दामाद हो या बेटा की बलि मांगता है जो इन्हे देना ही पड़ता है नहीं तो ये पागल हो जाती है। जिस व्यक्ति की बलि देना ये स्वीकार करती है, इनका पहला जादू उसी पर चलता है और उसकी असामयिक मौत हो जाती है।

इस विद्या को सीखने के बाद ये पहले उसका परीक्षा किसी पेड़ या जानवर पर करती है और अगर वो पेड़ सूख जाता है या जानवर मर जाता है तब यह मान लिया जाता है की अपनी विद्या में ये निपुण हो गयी है।

डायन को ख़त्म करना किसी साधारण तांत्रिक के वश की बात नहीं होती क्योंकि इनका भूत हरदम इनके साथ रहता है और पल-पल इनको सब बातों की सूचना देता रहता है,, साथ ही साथ ये अपने पिंड को छुपा कर रखती है जिसे ढूढ़े बिना इनका कुछ नुक्सान पहुचान मुश्किल होता है।

मैने तब पूछा कि सुना है की आपने डायनो के चंगुल से किसी बच्चे को आजाद कराया था, इस घटना के बारे में मुझे बतलाये। तब उन्होंने कहा की गाँव में एक घर में एक छोटे बच्चे की असामयिक मौत हो गयी थी। हिन्दुओ में लाश को जलाने की परंपरा है पर बच्चों की असामयिक मौत पर उन्हें दफ़नाने का रिवाज है। इसलिए उस परिवार ने बच्चे को शमशान में

ले जाकर गाड़ दिया गया। उसके जनाजे में शामिल होने वाले कुछ लोग एक शादी में बगल के गाँव गए थे जहाँ से लौटते-लौटते आधी रात हो गयी। गाँव के रास्ते के बीच में ही शमशान पड़ता था। शमशान के बगल से गुजरते हुए उन्हें वहां कुछ हलचल दिखाई दी। दूर से ही उन्होंने देखा की कुछ औरते एक गोलाकार घेरा बना कर नाच रही है और साथ साथ कुछ गा भी रही है। ये लोग उस झुण्ड से दूर छुप कर खड़े थे। ध्यान देने पर उन्हें गाने के कुछ बोल सुनाई दिए और उन्होंने पाया किया कि उस गीत के बोल बहुत ही अश्लील थे। उन्होंने यह भी देखा कि वे उसी स्थान के पास नाच रही थी जहाँ उन्होंने दो दिन पहले बच्चे के शरीर को दफ़नाया था। बच्चे की कब्र खुदी हुई थी और उनके गोद में एक जिन्दा बच्चा था जिसे दुलार कर रही थी। यह सब देख कर उन्हें समझ में आ गया की ये सब डायन है और ये उसी बच्चे जिसको इन्होने दो दिन पहले दफनाया था जिन्दा करके दुलार कर रही थी। वहां रहना खतरनाक समझकर ये लोग गाँव की ओर चल पड़े।

दूसरे दिन उन्होंने यह बात अन्य गाँव वालों को बतलाया और देखते ही देखते यह बात पूरे गाँव में आग की तरह फैल गयी।

इस बात को मेरे फूफा और उनके दोस्तों की मंडली ने भी सुना। मेरे फूफा बहुत निडर थे, उन्होंने दोस्तों के बीच यह प्रस्ताव रखा कि इस बच्चे को हमें जिन्दा गाँव लाना चाहिए। फूफा ने अपने साथियों से उनका विचार पूछा। सब इस बात से सहमत थे कि बच्चे को जिन्दा ले आना चाहिए। तब फूफा ने पूछा की इस काम में कौन-कौन उनका सहयोग देगा तो उनके बहुत से दोस्त पीछे हट गए आखिर डायनो का खतरा कौन मोल लेना चाहता है। पर उनके ४ दोस्त इसके लिए तैयार हो गए। यह निश्चय किया गया कि इस काम को अगर करना है तो देर नहीं करनी चाहिए और उन्होंने उसी रात यह काम करने की ठान ली।

फूफा और उनके चार दोस्त उसी दिन आधी रात को एक एक टॉर्च और डंडा लेकर शमशान की ओर चल पड़े। शमशान के नजदीक पहुंचने पर वे एक जगह छुप कर बैठ गए। आधी रात के करीब उन्होंने १०-१२ औरतो को शमशान में इकट्ठा होते देखा। उन औरतों ने एक जगह पर अपना सब वस्त्र उतार दिया और एक घेरा बनाकर नाचने गाने लगी। कुछ समय बाद उन्होंने

अपने साथ लाये पूजा सामग्री से पूजा करना शुरू कर दिया। पूजा समाप्त कर वे उसी बच्चे के कब्र की ओरे बढ़ चली। कब्र के पास पहुंच कर उन्होंने फिर कुछ देर पूजा की और बड़ी सावधानी से उस कब्र को खोदकर उसमे से उस बच्चे की लाश को निकाल कर अपनी गोद में ले लिया। बच्चे के शरीर में कोई हरकत नहीं थी और वह मरा हुआ था। अब उन्होंने फिर से पूजा शुरू की और उन्होंने देखा की बच्चे के शरीर में हरकत होने लगी और वह जिन्दा हो गया। इसके बाद उन्होंने उसे नहलाया और फिर तेल लगाया। फिर कुछ औरते उसे गोद में लेकर अपना दूध पिलाने लगी। इसी तरह बच्चे के साथ वे बहुत देर तक खेलती रही। इसके बाद उन्होंने बच्चे को वही लिटा दिया और सब नदी की ओरे चल पड़ी। नदी शमशान से कुछ ही दूरी पर बहती थी। जब वे काफी दूर निकल गयी तब इन्होने विचार किया की यही बच्चे को उठा लेने का सही समय है। वे सब बच्चे की ओर दौड पड़े, फूफा ने उस बच्चे को गोद में उठाया और सब गाँव की तरफ दौड़ कर भाग चले। जैसे ही उन्होंने बच्चे को उठाया पता नहीं उन्हें कैसे पता चल गया और वे चिल्लाते हुए इनके पीछे दौड़ चली पर ये लोग रुके नहीं और गाँव की सीमा में प्रवेश कर गए। गाँव में घुसते ही उनका शोर बंद हो गया और वे शमशान की ओर लौट गई ।

गाँव पहुंच कर उन्होंने बच्चे को देखा वह अब भी जिन्दा था और पूरी तरह ठीक था जमीन के अन्दर में रहने के कारण शरीर पर कुछ जगह कीड़ो के कटाने का निशान थे। बाद में उन्होंने उस बच्चे को उसके माता पिता को दे दिया। उन्होंने बताया की वह बच्चा आज भी जीवित है।

इस बात की सच्चाई को परखने के लिए मेरी यह तीब्र इच्छा थी की मैं गाँव जाकर उस बच्चे से मिळू पर मै जनता था कि मुझे परिवार की ओर से इसकी अनुमति नहीं मिलेगी। इसे बाबजूद मै इस घटना के बारे में इसलिए लिख रहा हूँ की मुझे अपने फूफा की बातों पर पूरा विश्वास था और उनके ऐसा शांत आदमी मुझसे क्यों गलत कहेगा और इससे उनको क्या फायदा मिलता ?

त्रिकालदर्शी काजल

एक दिन दोपहर के समय मै बाजार जा रहा था। बाजार जाने के रास्ते के बीच में ही शहर की कचहरी पड़ती थी। और दिनों की तरह आज भी कचहरी में बहुत भीड़ थी और मै उन सब को देखता हुआ आगे बढ़ता जा रहा था। एक जगह पर मुझे लोगों की भीड़ दिखी जो एक आदमी को घेरकर खड़े थे। मेरी यह जानने की उत्सुकता हुई की वह वह आदमी क्या बेच रहा है। इसलिए मै भी वहां जाकर भीड़ में शामिल हो गया।

उस आदमी के हाथ में एक डिबिया थी जिसमें काला काजल लगा था। वह बतला रहा था कि यह सिद्ध काजल है और उसके द्वारा विधिवत सिद्ध करके बनाया गया है इसलिए कोई भी आदमी इसे सीधे प्रयोग में ला सकता है। उसके अनुसार इस काजल को अगर एक १०-१२ साल के बच्चे को दिखाया जाय तो आवाहन करने पर उसे पीर बाबा उस डिबिया में दिखाई देंगे। उनसे दर्शक बहुत सी जानकारी ले सकते है। जैसे किसी व्यक्ति का अगर अपहरण कर लिया गया हो तो बाबा से कहने पर बाबा बच्चे को वह जगह दिखला देंगे जहाँ वह इस समय है और उस जगह का नाम और पता भी इससे पता चल जायेगा। किसी का भूत और भविष्य के बारे में भी इससे पता लगाया जा सकता है। अगर किसी को लाटरी या सट्टे का नंबर पता लगाना है तो वह जानकारी भी बाबा दे सकते हैं। वह व्यक्ति एक बच्चे पर यह प्रयोग कर के भी दिखला रहा था पर यह जानना मुश्किल था की वह एक अनजान बच्चा था या उसी के द्वारा सिखाया पढ़ाया बच्चा था। साथ ही साथ मुझे यह भी शक हो रहा था की जिस व्यक्ति ने उसे सिद्ध न किया हो उसके द्वारा इससे काम लिया जा सकता है या नहीं। इतना होते हुए भी मेरे मन में उस डिबिया को खरीद लेने की तीब्र इच्छा जागृत हो गयी। मैंने उसका दाम पूछा तो वह मुझे जरुरत से ज्यादा लगा पर मैंने सोचा की जिस तरह के काम इस डिबिया से लिए जा सकते है उसे देखते हुए वह दाम उचित ही है। मेरे पास उस समय उतना पैसा नहीं था। उस ज़माने में हमें पॉकेट मनी के नाम पर बहुत कम पैसे मिलते थे इसलिए मैं उसे लिए बिना वहाँ से चला आया पर वह डिबिया रास्ते भर मेरे दिमाग में घूमती रही।

घर पहुँच कर मुझे याद आया की इस विद्या के बारे कही मैंने पढ़ा है और थोड़ा याद करने के बाद मुझे याद आ गया की मेरे पास तन्त्र-मन्त्र की एक पुरानी किताब है उसी में शायद इसका जिक्र है। मैंने तुरंत उस किताब को ढूढ़ कर निकाला। यह प्रयोग उस किताब में हजरत सिद्धि के नाम से दिया हुआ था। तब मेरे मन में विचार उठने लगे की क्यों न मै ही इसे सिद्ध करने की कोशिश करू? किताब पढ़कर मैंने उस मंत्र को सिद्ध करने की विधि पढ़ी जो मुझे आसान लगी। तब मैंने निश्चय कर लिया की मै इसे मंत्र को सिद्ध करके देखूँगा। मेरे कोई गुरु नहीं थे पर मैंने फिर भी निश्चय किया की मै इसे सिद्ध करूँगा क्योंकि इस मन्त्र से में किसी भूत-प्रेत जिन्न जैसे खतरनाक चीज की तो सिद्धि मै नहीं कर रहा जिससे कोई खतरा हो।

पाठकों की जिज्ञासा को शांत करने के लिए मै इस प्रयोग का विवरण यहाँ दे रहा हूँ। एक बात के लिए मै आपको पहले से ही सावधान कर दूँ कि इस विवरण को पढ़कर आप इस मन्त्र को सिद्ध करने न बैठ जाए क्योंकि इसमें पूरा मंत्र और उसकी पूरी विधि नहीं दी गयी है और ऐसे भी किसी किताब या इंटरनेट से मन्त्र लेकर गुरु के बिना किसी भी मंत्र को सिद्ध नहीं करना चाहिए नहीं तो आप खतरे में पड़ सकते है और मन्त्र सिद्ध होने की सम्भावना भी कम ही होती है।

हजरत साधना एक ऐसी गुप्त साधना है जो साधक को दिव्य दृष्टि प्रदान करती है। इस्लाम में सुलेमानी साधना को बहुत महत्व दिया जाता है। सुलेमानी तंत्र साधना में से ही एक है हजरत साधना जो भविष्य दिखाने के साथ कई ऐसे काम कर सकती है जिसकी साधक कल्पना भी नहीं कर सकता। इस साधना को सिद्ध करने के बाद किसी बच्चे के अंगूठे पर काजल लगाकर भूत भविश्य की कोई घटना दिखाई जा सकती है, खोए वस्तुओं व्यक्तियों का पता लगाया जा सकता है। आपने जादू मंत्र वाली फिल्मों में देखा होगा की हीरो अपने आँख में ऐसा काजल लगाता है जिससे उसको मायाजाल और गायब की हुई चीजे दिखाई पड़ने लगती है यह साधना साधक को ऐसी ही दृष्टि प्रदान करता है।

ज्यादातर लोग यह समझते है की यह एक मुस्लिम साधना है पर यह सच नहीं हिन्दू मुस्लिम दोनों ही धर्मों में इसका उल्लेख है और कोई भी इसे कर सकता है। हिन्दू धर्म में माँ काली अथवा हनुमान जी के मंत्र से हजरत सिद्ध किया जाता है।

हजरत साधना २१ दिनों की होती है। इसके लिए हकीक की माला ली जाती है और पच्छिम की दिशा में बैठकर उल्टी माला फेरते हुए निम्न मंत्र का जाप कर एक पीर को सिद्ध किया जाता है जो हमारे सवालों का जवाब देता है। मंत्र का जाप जुम्मे के दिन से शुरू किया जाता है।

ख्वाजा खिज्र जिन्द पीर
मैदर मादर दस्तगीर
मेरा पिरान पीर
करो घोड़े पर भीड़
चढ़ो हजरत पीर
हाजर सो हाजर

मंत्र आपको विचित्र लग सकता है पर इनमे किसी तरह का बदलाव नहीं किया जाना चाहिए। इसी मंत्र का उलटी माला से जाप करते हुए चमेली के तेल से जलते हुए दिए के ऊपर कोई बरतन रखकर काजल बनाया जाता है।

हिन्दू मंत्रो की सिद्धि में माला के मनके आगे की तरफ निकाले जाते है जबकि मुस्लिम मंत्र सिद्ध करने में मनको को पीछे की तरफ ले जाते हुए मंत्र का जप किया जाता है इसे ही उलटी माला कहते है।

मंत्र सिद्ध हो जाने पर हजरत साधना का प्रयोग एक ऐसे बालक पर किया जाता जाता है जिसकी उम्र १० साल से अधिक न हो और जो मन से साफ़ और पवित्र हो। उसके अँगूठे के नाखून पर सिद्ध काजल लगा दिया जाता है। बालक को कहा जाता है की काजल में अपना मुँह देखे। जब उसे अपना चेहरा दिखने लगता है तो उसे कहा जाता की देखो एक मैदान दिखेगा।

मैदान दिखने के बाद झाड़ू वाले को बुलाकर वह झाड़ू लगवाया जाता है और उसके बाद पानी वाले को बुलाकर उस स्थान पर पानी का छिड़काव करवाया जाता है। इसके बाद उसी स्थान पर चटाई गद्दे और तख़्त लगाने को कहा जाता है। इसके बाद बालक को कहा जाता है की पीर साहब से अर्ज करो की उनका भक्त उन्हें याद कर रहा है कृपया मुंशी को साथ लेकर हाजिर हो। पीर बाबा के हाजिर होने के बाद आपको जो जानकारी चाहिए उसके बारे में पीर साहब से पूछा जाता है अगर बालक को समझ में नहीं आये तो मुंशी जी को लिख कर बतलाने को भी अर्ज किया जा सकता है। जब आपका काम हो जाये तो पीर साहब से तकलीफ देने के लिए माफ़ी मांगी जाती है और अगुठे की स्याही धो दी जाती है। प्रश्न करने के समय लौंग इलायची और लोहबान की धूप दी जाती है।

हिन्दू मंत्रो की सिद्धि के लिए नवरात्र का समय उपयुक्त रहता है, जबकि मुस्लिम मंत्र की शुरुआत किसी भी जुम्मे के दिन से की जा सकती है। नवरात्र के आने में काफी समय था इसलिए मैंने मुस्लिम मंत्र को ही सिद्धि के लिए चुना। एक बात मैं और स्पष्ट कर दूँ की सिद्धि के समय पश्चिम के बजाये पूर्व की ओरे ही मुँह करके मैंने मंत्र का जाप किया और माला भी सीधी ही फेरी क्योकि मेरा विश्वास था की हर दिशा में ईश्वर है और माला का उपयोग केवल मंत्रो की गिनती ठीक रखने के लिए किया जाता है।

२१ दिन पूरा होने के बाद मेरा पाठ पूरा हो गया और मैंने काजल भी बना ली अब केवल उसका प्रयोग कर देखना था की मंत्र सिद्ध हुआ या नहीं। इस काम के लिए मुझे एक लडके की जरुरत थी। एकाएक मुझे याद आया की मेरे चाचा के लड़के की उम्र भी १० साल के करीब है इसलिए मैंने उसके ऊपर प्रयोग करने का मन बना लिया। चाचा का लड़का भी राजी हो गया। मैंने एक दिन विधि पूर्वक पीर साहब का आह्वान किया और मेरे आश्चर्य का ठिकाना न रहा लडके को काजल में पीर साहब दिखने लगे। अब मुझे कुछ विशेष सवाल पूछना तो था नहीं इसलिए मैंने पूछा कृपया दिखाए की मेरी छोटी चाची इस समय क्या कर रही हैं। लड़के को कुछ समय बाद चाची जी दिखने लगी। उसने बताया कि चाची जी पलंग पर बैठकर स्वेटर बुन रही है। इसके बाद मैंने पीर साहब से तकलीफ के लिए माफ़ी मांगी और उन्हें विदा कर दिया।

उस समय गर्मी का मौसम था और गर्मी में कोई स्वेटर नहीं बुनता इसलिए मुझे बच्चे की बात गलत लगी। अब मुझे यह देखना था की बच्चे को सही दिखा है या नहीं इसलिए मै उसी शाम चाची के यहाँ गया और उनसे पूछा आज दोपहर आप सोई हुए थी तो उन्होंने कहा नहीं आज मुझे नीद नहीं आ रही थी इसलिए मैंने एक पुराना स्वेटर निकला और यही पलंग पर बैठ कर उसे बुना। मेरे आश्चर्य का ठिकाना न रहा लडके को एकदम सही घटना दिखी थी।

मै अब इसपर कुछ और प्रयोग करना चाहता था पर हर समय यह काम नहीं किया जा सकता था क्योकि बच्चे को स्कूल जाना था पढ़ाई करना था और जब हम अकेले होते तभी यह प्रयोग किया जा सकता था। एक दिन मैंने सोचा अंगूठे का नाखून तो बहुत छोटा होता है इसलिए उसमें देखने में असुविधा होती होगी तो क्यों न एक बड़ी डिब्बी में काजल लगाकर उपयोग में लाया जाय। ऐसा सोचकर मैने मैं एक बड़ी काजल की डिब्बी बनाई। कुछ दिनों बाद मैंने उसका प्रयोग किया और चाचा के लड़के ने बोला की इसमें साफ़ साफ़ दिख रहा है।

उस दिन कुछ खास पता लगाना तो था नहीं तो मैंने उससे कहा कि पीर साहब से अर्ज करो की अमर टॉकीज में चल रहे फिल्म को दिखलाये। उस समय मुझे याद है की अमर टॉकीज में कुरबानी फिल्म लगी थी और चाचा के लड़के ने बतलाया कि लैला ओ लैला गाना चल रहा है और वह ५ मिनट तक उसे देखता रहा। मैंने पूछा क्या यह रंगीन दिख रहा है

तो उसने कहा- हाँ ।

इसके बाद बहुत दिनों तक उस डिब्बी को प्रयोग करने का अवसर मुझे नहीं मिला। एक दिन लड़के ने कहा की पीर साहब तो ऐसे ही आँखो से दिख रहे है मैंने पूछा अभी वे कहाँ है और क्या कर रहे है तो उसने बतलाया की वे सोफे पर बैठे हुए है। मुझे यह समझ में नहीं आया कि यह कैसे हुआ। इसके बाद उसे पीर साहब बच्चे को अक्सर दिखने लगे। कभी वह कहता कि पीर साहब टहल रहे है कभी कहता पीर साहब सामने बिजली के तार पर दौड़ रहे हैं। मैंने एक दिन सोचा पीर साहब से बात की जाए मैंने बच्चे को कहा उनसे बात करवाओ तो वे बात करने को तैयार हो गए। मैंने उनसे पूछा क्या आप कुछ करामात दिखा सकते है तो उन्होंने पूछा क्या

देखना चाहते हो तो मैंने कहा की क्या आप इस ग्लास को इस टेबुल पर से हटाकर दूसरी जगह रख सकते हैं तो उन्होंने ऐसा करने से इनकार कर दिया। तब मैंने पूछा क्या आप घड़ी का समय बदल सकते है तो कुछ आनाकानी के बाद वे तैयार हो गए। उन्होंने कहा घडी का समय बदलकर कुछ और कर दो मैंने ऐसा ही कर दिया। फिर उन्होंने कहा इस घड़ी को एक कपडे से ढक दो मैंने वैसा कर दिया। उन्होंने १ मिनट बाद कहा की अब घडी में समय देखो तो मैंने कपडा उठाकर समय देखा तो मै चकित रह गया घडी में बिलकुल सही समय था। उन्होंने कहा इसके बाद मुझे ये सब काम करने को नहीं कहना।

कुछ दिनों बाद मैंने उनसे पूछा की आप मुझे कोई मंत्र सिखा सकते है तो वे बोले जरूर। इसके बाद उन्होंने मुझे एक मंत्र लिखवाया। मैंने पूछा यह सिद्ध कैसे होगा तो उन्होंने जप की संख्या और तरीका बतलाया। फिर उन्होंने कहा कि इसे केवल शमशान में सिद्ध किया जा सकता है। मैंने कहा मै शमशान में तो जा नहीं सकता कोई और तरीका बतलाये तो उन्होंने कहा तुम्हारे घर के पीछे कुछ जगह है जिसमे तुम सब्जिया उगाते हो। उस जगह एक गड्ढा कर दो और उसमे कसाई के पास जाकर मीट के बेकार फेकने वाले भाग को ले आओ और उससे गड्ढे को भर दो। तुम इस गड्ढे के ऊपर आसन लगाकर मंत्र सिद्ध कर सकते हो। उन्होंने कहा की जाप के लिए हड्डियों की ही माला बना लेना। उनकी बातो से मुझे लगा की इस मंत्र की सिद्धि का तरीका तो मारण मंत्र ऐसा लग रहा है। यह शक होते ही मैंने मंत्र पर भी गौर किया। संस्कृत मुझे आती थी तो मैंने पाया की वह मारण मंत्र ही था। इसलिए मैंने मंत्र और उसकी सिद्दी की बात ही छोड़ दी। लेकिन इस घटना के बाद मुझे यह लगने लगा की पीर बाबा का संस्कार सही नहीं और मुझे उनसे सावधान रहना पड़ेगा।

लडके को पीर साहब अब हर समय दिखने लगे तो मैंने सोचा की ऐसे तो यह क्या पढ़ाई कर पायेगा इसलिए मैंने पीर साहब से एक दिन अर्ज किया की आप लड़के को हर समय दिखना बंद करे। उन्होंने इसका कुछ जवाब नहीं दिया पर मैंने देखा की कहने का कोई असर पीर साहब पर नहीं पड़ा और पीर साहब उसे अब भी दिख रहे है तो मै चिन्तित हो गया। पर मुझे उन्हें

रोकने का कोई उपाय नजर नहीं आया और मेरा कोई गुरु भी नहीं था जो मुझे इसका कारण और उपाय बतलाता। इस क्षण मुझे महसूस हुआ की किसी साधना में गुरु का कितना महत्व होता है। अगर मेरे कोई गुरु होते तो वे इसका उपाय बतलाते या अपनी शक्तियों से पीर बाबा को नियंत्रित करते।

अब घर के लगभग सभी सदस्यों को बाबा के बारे में पता चल चुका था। जब चाचा को यह बात पता चली तो वे चिन्तित हुए कि लड़के के दिमाग पर इसका क्या असर पड़ेगा यह पढ़ाई कैसे कर पायेगा। तब उन्होंने गाँव से एक तांत्रिक को बुलवाया। दो दिनों बाद वो तांत्रिक घर पर पहुंच गए। वे एक सीधे सादे अधेड़ उम्र के नाटे व्यक्ति थे। मेरी भी उनसे मुलाकात हुई तो मैंने उनसे पूछा कि वे किसकी और किस बिधि से आराधना करते हैं तो उन्होंने बतलाया की वे काली माँ की आराधना तांत्रिक पद्धति से करते है। मैंने पूछा तांत्रिक पद्धति से क्यों तो उन्होंने कहा की इस पद्धति में ज्यादा कर्मकांड की जरुरत नहीं और मेरे अनुभव से आज के ज़माने में तांत्रिक मंत्र वैदिक मंत्रो से जल्द सिद्ध किये जा सकते है। मैंने पूछा कि अगर आपको एतराज न हो तो ये बतलाये की आपने कहाँ काली माँ को सिद्ध किया और आपको यह अनुभव कैसे हुआ कि माँ का मन्त्र सिद्ध हो गया है तब उन्होंने बतलाया की यह सिद्धि उन्होंने गाँव के काली मंदिर में की। साधना के अंतिम दिन उन्हें आधी रात को काली माँ की छवि एक परछाई के रूप में उनका दर्शन हुआ और तब उन्हें यह एहसास हुआ की उनकी साधना सफल हो गयी है। उन्होंने बतलाया की तब से हर जगह उन्होंने माता के मंत्र का प्रयोग कर सफलता पाई है और इसके अलावा उन्हें और कोई मंत्र सिद्धि करने की कभी जरुरत महसूस भी नहीं हुए न ही उन्होंने प्रयास किया।

दूसरे दिन उन्होंने चाचा के लड़के को बैठाया और उससे पीर बाबा को बुलाने को कहा। जब चाचा के लड़के ने कहा कि वे आ गए है तो उन्होंने बाबा से सिर्फ इतना कहा कि यह आपके रहने की सही जगह नहीं आप मेरे साथ चले मै आपको उचित स्थान दूँगा। उन्होंने पीर बाबा के जवाब का भी इन्तजार नहीं किया और चाचा के लड़के को जाने को कह दिया। इसके बाद वे अपनी पूजा में लग गए। उनकी पूजा में ज्यादा पूजन सामग्री की जरुरत नहीं थी उनकी मुख्य

पूजा माँ के मंत्र का जाप था। उन्होंने तीन दिन तक मंत्र जाप किया। मैंने गौर किया कि वे सफाई का भी कोई खास ख्याल नहीं रखते कभी- कभी तो वे नहाये बिना भी पूजा पर बैठ जाते थे। जब उन्हें खाने के लिए बुलाया जाए वे खा लेते थे और फिर मंत्र जाप पर बैठ जाते थे। वे तम्बाकू का सेवन करते थे और तम्बाकू भी वे वही मंत्र जाप के बीच खा लेते थे और हाथ भी नहीं धोते थे क्योकि वे तांत्रिक विधि से पूजा कर रहे थे जिसमे ज्यादा पवित्रता की जरुरत नहीं होती। तीन दिन बिताने के बाद वे चले गए और चाचा के लडके को फिर कभी पीर बाबा के दर्शन नहीं हुए और मैंने भी चैन की सांस ली।

किसी साधना में गुरु की जरुरत है या नहीं ?

भारतीय संस्कृति और दर्शन की परम्परा में गुरु को ब्रह्म से भी अधिक महत्व प्रदान किया गया है। लोकमान्यतानुसार प्रत्येक साधक के लिए गुरु की अनिवार्यता इसलिए है क्योंकि आध्यत्मिक साधना में कभी कभी विघ्न उपस्थित हो जाते है, कोई भी विघ्न उपस्थित होने पर साधक गुरु से मार्गदर्शन प्राप्त कर सकता है। साधक एक यात्री की भांति होता है जो लक्ष्य की ओर बढ़ने की लालसा तो रखता है, किन्तु चूँकि उसने लक्ष्य को नहीं देखा होता है, इसलिए उसे ऐसे मार्गदर्शक की आवश्यकता होती है, जो न केवल मार्ग को देखे हो, वरन अच्छी तरह लक्ष्य को भी पहचानता हो। गुरु मिलने पर साधक के हृदय से संशय व आशंका की भावनाएं समाप्त हो जाती हैं। उसे साधना मार्ग में एक मददगार मिल जाता है, जो उसे विघ्नों और बाधाओं से परे निकाल सकता है उसके साधना में निराश होने पर उसमे आत्मविश्वास जगाकर आगे बढ़ा सकता है।

गुरु शब्द की व्युत्पत्ति संस्कृत भाषा से हुई है। इसके दो अक्षर (गु और रु के अर्थ इस प्रकार से हैं--गु शब्द का अर्थ है अज्ञान, रु शब्द का अर्थ है, ज्ञान का तेज, गुरु मानव जाति के आध्यात्मिक अज्ञान रूपी अन्धकार को मिटाते हैं और उसे और ज्ञान प्रदान करते हैं। यदि बच्चों से कहा जाए कि वे आधुनिक विज्ञान की शिक्षा किसी शिक्षक के बिना अथवा पिछले कई दशकों में प्राप्त ज्ञान के बिना ही ग्रहण करें तो क्या होगा? उन्हें संपूर्ण जीवन स्वयं को शिक्षित करने में बिताना

पडेगा फिर भी उसे वह ज्ञान प्राप्त नहीं होगा। इसीलिए हमारी आध्यात्मिक यात्रा में भी गुरु का होना अत्यंत महत्त्वपूर्ण है।

गुरु के बिना सफलता मिलना असम्भव है। अगर गुरु के बिना ज्ञान मिलता तो स्कूलों में गुरु नही होते इंसान अपने आप किताबों पढ़ कर ज्ञान प्राप्त कर लेता और आज तो वैज्ञानिक युग है गूगल पर सर्च करते ही सभी जानकारियां प्राप्त हो जाती है फिर भी विद्यार्थी गुरु बिना आगे नहीं बढ़ पाते यही कारण है गुरु को भगवान का दर्जा दिया गया है क्योंकि गुरु ही है जो हमारे इस जीवन को सही लक्ष्य देते है। आम जीवन में भी हमे गुरु धारण करना ही चाहिए क्योंकि जहाँ पर हमें कोई रास्ता नही दिखता वहा पर गुरु ही मार्गदर्शन करते है।

गुरु की आवश्यकता इसलिए पड़ी क्योकि इंसान जब प्रश्नों में उलझ जाता है तो भगवान से उत्तर पूछता है भगवान आपने मेरे साथ ऐसा क्यों किया आपको ऐसा नही करना चाहिए था लेकिन इन सबका उत्तर भगवान आपको उस समय नही देते जिसके कारण भक्त का विस्वास उठ जाता है। इसका उत्तर देने के लिए ही भगवान शिव ने गुरु की रचना की जो उनकी जगह भक्त के प्रश्नों का जवाब दे, इसलिये गुरु को साक्षात् शिव का रूप भी कहा जाता है।

आध्यात्मिक क्षेत्र में गुरु का महत्व तो और भी बढ़ जाता है क्योंकि सिद्धियों और चमत्कारों के कारण इंसान बार-बार अपने मार्ग से भटक जाता है। आम इंसान तंत्र साधना को क्यों नही मानता क्योकि उसे कभी सफलता मिली ही नही तो वो इन सबको झूठ ही समझेगा इसमें उसकी भी कोई गलती नही। गलती है तो सिर्फ इतनी उसने बिना गुरु के किसी पुस्तक या इंटरनेट पर पढ़कर साधना करने लग गया और इस प्रकार साधना करने में सफलता के एक प्रतिशत चांस है। अगर उसने कोई उग्र साधना कर ली तो उसे विपरीत परिणाम भी मिल सकते हैं। शक्ति को जगाने पर उसे सम्भलना ना आया तो इसके परिणाम घातक होते है। इसलिए जो भी साधना करे अपने गुरु देव की आज्ञा और उनकी देखरेख में ही करे ।

किसी पुस्तक से पढ़कर साधना करने वाला अगर कहीं अटक गया तो उसका मार्गदर्शन कौन करेगा और बिना गुरु के उसे ये नही पता होता साधना करने की सही विधि क्या है तो सफलता

कहाँ से मिलेगी। जब हम गुरु धारण करके साधना करते है तो गुरु के साथ उन सभी सिद्ध महात्माओं की भी जो उनके गुरु परम्परा में आते है शक्तियां हमसे जुड़ जाती है। जब आपसे इतनी शक्तियां जुड़ जाती है तो आपको सफलता मिलने से भला कौन रोक सकता है और यही कारण है गुरुमुखी को साधना एक बार में ही सिद्ध हो जाती है। इसके विपरीत बिना गुरु वाले को सिद्धि तो बहुत दूर की बात है कुछ अनुभव भी नही होता फिर वे दोष देने लगते है तंत्र साधना को। अगर आपको साधना मार्ग पर बढ़ना है तो गुरु धारण करना ही पड़ेगा नही तो आप बीच में लटक जाएंगे। गुरु का महत्व इसी बात से लगाया जा सकता है कि जितने भी भगवान के अवतार हुए उन्होंने भी गुरु धारण किया है।

हम जब भी किसी को गुरु बनाते है तो वो अपने पंथ सम्प्रदाय अनुसार मन्त्र दीक्षा देता है। वो मन्त्र कोई साधारण मन्त्र नही होता उस मन्त्र में पूरी गुरु परम्परा के सभी सिद्ध महात्माओं की शक्ति समाई रहती है। यह मन्त्र किसी को भी बताया नही जाता इसको बड़े गुप्त तरीके से गुरु अपने शिष्य के कान में फूकता है ताकि चारों और विद्यमान अदृश्य शक्तियां भी उसे सुन न पाए।

ये मन्त्र हमे गुरु से अदृश्य रूप से जोडे रखते हैं। गुरु मंत्र का जाप कभी भी वाचिक (बोलकर) या उपांशु (जिस जप में बहुत धीमें होठ और जिव्हा हिले) नही करना चाहिए इसका जप मानसिक होता है।

गुरु का इतना महत्व सुनकर लोग गुरु ढूढ़ना शुरू कर देते हैं और कभी-कभी तो दूसरों की नक़ल कर उनके गुरु को को अपना गुरु बना बैठते हैं। पर आज के ज़माने में गुरु खोजने में बड़ी सावधानी की जरुरत है क्यों आज ९९% गुरु नकली गुरु हैं। वे अपनी राजनैतिक ताकत बढ़ने के लिए, लोगों की मुफ्त में सेवा पाने, शिष्य के पैसों को धोखे से अपना बनाने के लिए और तो और स्त्रियों का शारीरिक शोषण करने के लिए गुरु बने बैठे हैं। कई तो आपको टीवी पर भी दीक्षा दे देंगे और बदले में आपसे बहुत सा पैसा एठ लेंगे। आज एक एक गुरु के लाखो शिष्य होते है। आप खुद सोचिये शिष्य के मुसीबत में पड़ने पर वे उसकी सहायता कैसे करेंगे?

उसी तरह कभी- कभी लोग कही से मंत्र पढ़कर या सुनकर उसे सीखने को लालायित हो जाते हैं और किसी भी पंडित को अपना गुरु बना लेते हैं। पर यह जान ले कि किसी मंत्र का गुरु वही हो सकता है जिसने उस मंत्र को पहले से सिद्ध कर रखा हो क्योकि तभी वह उस मंत्र सिद्धि में आने वाली परेशानियों को पहले से जान सकता है और शिष्य को सावधान कर सकता है या मुश्किल में पड़ने पर उसे उबार सकता है।

इसी की जानकारी देने के लिए भगवान शिव ने असली गुरु की पहचान बतलाते हुए गुरुगीता में कहा है- हे पार्वती ! पाखण्ड को अधिक महत्व देने वाले, ईश्वर को न मानाने वाले, दुराचारी, कृतघ्न, अनुचित कर्म करने वाले, अधीर, ब्यर्थ में तर्क देने वाले, कामी, क्रोधी, हिंसक, मुर्ख, अज्ञानी, पाप कर्म में रुचि रखने वाले गुरुओं से बचना चाहिए।

इससे भिन्न जो सच्चे गुरु हैं, उन्ही की श्रद्धा और भक्ति से सेवा करनी चाहिए। जिनका हृदय निर्मल है, जो शांत है, साधु स्वभाव के हैं, मितभाषी हैं, जो काम क्रोध से रहित हैं, सदाचारी और जितेन्द्रय हैं वही सच्चे गुरु हैं।

गुरु के बारे में एक और प्रश्न अक्सर पूछा जाता है की मेरे पहले से एक गुरु हैं तो मै दूसरा गुरु बना सकता हूँ या नहीं? इसका उत्तर है हां आप जरूर बना सकते हैं। सामान्य जीवन में भी हम कई बार अपने गुरु बदलते हैं, स्कूल में ही हमारे गुरु दूसरे होते हैं और कॉलेज में दूसरे। संगीत और क्रिकेट सीखने के लिए हम अलग- अलग गुरु रखते है। आप खुद ही सोचिये एक गुरु को हर विषय की जानकारी कैसे हो सकती है? आप यह भी जान ले की भगवान् दत्तात्रेय के ही २४ गुरु थे।

एक जादूगर से मुलाकात

एक बार मेरे घर में एक जादूगर कुछ दिनों के लिए ठहरे। वे पिताजी के परिचित थे। मुझे तो जादू से पहले से ही लगाव था इसलिए उनसे कुछ सीखने के लिए मै उनसे नजदीकी बढ़ाने लगा। वे मेरा जादू के प्रति झुकाओ देखकर मुझे कुछ जादू बताने को तैयार हो गए। उन्होंने पहले मुझे कुछ छोटे- छोटे जादू दिखाएं। उन सभी को करने के लिए जादू की दुकानों पर मिलने वाली सामानो की जरुरत होती है इसलिए उनके बारे में यहाँ मै कुछ नहीं लिख रहा। मैंने उनसे कहा कि कुछ ऐसा जादू मुझे सिखाये जिसमें किसी बाहर के सामान की जरुरत न हो। तब उन्होंने कहा ताश का जादू बहुत प्रचलित है आओ मै तुम्हें ताश के कुछ जादू सिखा दूँ। तुम्हे मैं ताश के जादू का एक ऐसा ट्रिक बता देता हूँ जिसे सामान्य लोग नहीं जानते पर जादूगर अक्सर उसी का उपयोग करते है।

उन्होंने बताया की इस ट्रिक को पास कहते है। इस ट्रिक को दिखाने के लिए बहुत प्रैक्टिस और हाथ ही सफाई की जरुरत पड़ती है। इसके लिए जादूगर ताश के पत्तो को आपके सामने फैलाकर आपसे से एक पत्ता निकालने को कहता है। देखने में यह एक सामान्य सी बात लगाती है पर जादूगर इसमें एक ट्रिक का इस्तेमाल करता है वह ताश की गड्डी के सबसे नीचे वाली पत्ती को आपकी आखों से बचाकर देख लेता है। इसके बाद वह तास को बीच से काटता है और उसके आधे भाग को गड्डी के ऊपर ले आता है जिससे गड्डी के सबसे नीचे वाली पत्ती ऊपर चली आती है और जादूगर को यह पता रहता है कि वह कहाँ है। अब जादूगर ताश के पत्तो को आपके सामने फैलाता है और आपसे कोई एक पत्ता निकालने को कहता है। अब यही जादूगर की प्रैक्टिस और तेजी काम में आती है, वह आपके पत्ता निकलने के समय वही पत्ता आपके सामने कर देता है जिसे उसे निकलवाना होता है और आप उसे ही निकलते है। इस तरह जादूगर मनचाहे पत्ते को आपसे खिचवा देता है और आप यह सोचते है कि आपने अपना मनचाहा पत्ता खुद चुन कर निकला है। अब जादूगर को उस पत्ते के बारे में पहले से ही पता रहता है। इसके बाद जादूगर उस पत्ते के बारे में बतलाने के लिए जो विधि उपयोग में लाता है वह आप पर ऐसा प्रभाव डालती है की आप जादूगर को विशेष शक्तियों से सम्पन्न व्यक्ति समझने लगते हैं।

आपको आपकी चुनी पत्ती के बारे में बताने के लिए और आपको विस्मित करने के लिए जादूगर आपसे कहता है कि आप इस पत्ती को टेबल पर रख दे। ध्यान दें अभी तक दर्शक को भी अपनी चुनी हुई पत्ती के बारे में नहीं पता। अब वह उनको अपने एक हाथ की तलहथी से पत्ते को ढक लेने को कहता है। इसके बाद वह आपके दूसरे हाथ की कलाई को अपने हाथ में ले लेता है और आँखे बंद कर ध्यान करने का नाटक करता है और कुछ देर बाद आपको पत्ती की जानकारी देता है। अब वह आपसे पत्ती उठाकर देखने को कहता है और आप हैरत में पड़ जाते हैं जादूगर ने बिलकुल सही कहा है और आप घंटो यह सोचते रहते हैं की जब पत्ती के बारे में आपको हीं पता नहीं था तो जादूगर ने कैसे उसे जान लिया और आप उसको अतीन्द्रिय शक्तियों का स्वामी मान बैठते है।

आपको सोचने पर मजबूर कर देने के लिए कि जादूगर ने आपकी चुनी पत्ती को कैसे जान लिया, जादूगर एक और तरह से इसी ट्रिक को दिखलाता है। जादूगर पहले से यह निश्चित कर लेता है की आपसे कौन सी पत्ती निकलवानी है। अब वह उसी पत्ती का नाम एक कागज पर लिखकर एक लिफाफे में रख देता है। जादू दिखाने के पहले ही जादूगर उस लिफाफे को कमरे में किसी जगह रख देता है। जब वह वही पत्ती आपसे खिचवा लेता है तो आपसे पत्ती देखकर सबको दिखला देने को कहता है। इसके बाद वह कहता है की आज सवेरे ही उसे अपने ध्यान में पता चल गया था आप कौन सी पत्ती उठाएंगे और इसका प्रमाण देने के लिए वह उस लिफाफे को उठाकर लाने को कहता है। लिफाफे को सभी दर्शको के सामने खोला जाता है और सब यह देखकर आश्चर्यचकित रह जाते है की लिफाफे के अंदर रखे कागज पर उसी पत्ती का नाम लिखा लिखा हुआ है।

अपने जाने के एक दिन पहले जादूगर ने कहा आज मैं तुमको एक ऐसी ट्रिक बतला देता हूँ जिसे बाबा लोग आम आदमी को मुर्ख बनाने के लिए इस्तेमाल करते हैं। जादूगर ने मुझे एक सफ़ेद पाउडर दिखाया और बतलाया की यह एक रसायन है जिसे मरक्यूरिक कहते है की मै तुमको चनत्कारी भभूत देता हूँ जिससे तुम्हारे सब कष्ट दूर हो जाएंगे। वह भक्त से एक सिक्का

निकाल कर देने को कहते हैं। वे उस सिक्के को लेकर उसे अभिमंत्रित करने का नाटक करते है और इसी दौरान सिक्के पर यह रसायन लगा देते हैं। फिर वे भक्त को कहते हैं की पहले अपने हाथो को धोकर शुद्ध कर लो। इसके बाद बाबा उसके हाथ में सिक्का देकर उसे मुट्ठी बंद कर लेने को कहते है। भक्त को मुट्ठी के अंदर सिक्का गर्म होता महसूस होता है और कुछ समय में ही वह इतना गर्म हो जाता है की उसे मुट्ठी खोलना पड़ता है और मुट्ठी खोलने पर कहते हैं। बाबा अपने भक्त को वह देखता है की वह सिक्का धीरे धीरे भभूत में बदल रहा है और उसके देखते ही देखते वह सिक्का पूरे भभूत में बदल जाता है और भक्त बाबा का अलौकिक भभूत पाकर उनके जयकारे लगाने लगता है।

वास्तब में यह सब इसी रसायन का काम है। यह रसायन लगा देने से कोई भी धातु की चीज राख में बदल जाती है लेकिन इसकी प्रतिक्रिया को शुरू करने के लिए पानी की जरुरत पड़ती है। बाबा भक्त को हाथ धोकर शुद्ध करने के बहाने उसके हाथ में पानी लगवा देते है और जैसे ही वह उस सिक्के को अपनी मुट्ठी में बंद करता है यह रसायन प्रतिक्रिया करना शुरू कर देता है और सिक्के को राख में बदल देता है जिसे भक्त भभूत मान बैठता है । **बहुत दिनों पहले कुछ लोगो को आपने यह कहते हुए सुना होगा की अगर आप साई बाबा की मन से भक्ति करते हैं और अगर उनकी तस्वीर अगर घर पर है तो उससे साई बाबा का भभूत निकलना शुरू हो जाता है। उस समय दुकानदार तस्वीर पैक करते समय यही रसायन तस्वीर के फ्रेम पर लगा देते थे। तस्वीर को भक्त रोजाना पूजा करने लगता था। फ्रेम पर पड़ा रसायन धीरे धीरे वातावरण के नमी के संपर्क में आता था और फ्रेम राख में बदलने लगता था और भक्त उसी राख को भभूत समझकर खुश को जाता था की बाबा की कृपा उनपर बरस रही है।**

इस प्रयोग को जानने के बाद मैंने एक दिन हिंदुस्तान पत्रिका में एक लेख पढ़ा। इसमें एक पत्रकार ने एक बाबा के सिद्धियों के बारे में लिखा था और उनकी बहुत प्रशंसा की थी। इसी में मैंने पढ़ा की उस बाबा ने सिक्के को भभूत में बदल कर दिखाया था जिससे वह पत्रकार बहुत ही प्रभावित हुआ था। मैंने तुरंत हिंदुस्तान के संपादक को एक पत्र लिखा और कहा कि ऐसे

भ्रामक लेख कैसे वे अपनी पत्रिका बिना ज्यादा खोजबीन किये प्रकाशित कर देते हैं। इन लेखों को प्रामाणिक मानकर हजारों लोग इन बाबाओं के जाल में फ़स जाते हैं। मैंने यह भी लिखा

की बाबा एक रसायन का उपयोग कर लोगों को भ्रमित कर रहे हैं और मैं भी यह प्रयोग दिखला सकता हूँ और बाबा को यह चुनौती भी दी की वह यह मेरे सामने नहीं कर सकते। संपादक ने यह पत्र प्रकाशित कर दिया पर बाबा या पत्रकार की कोई प्रतिक्रिया मुझे नहीं मिला पर मुझे पाठकों के सैकड़ों पत्र मिले जिसमे उन्होंने बतलाया था कैसे किस बाबा ने उनसे पैसे लूटे थे और कैसे उनका कोई काम भी नहीं बना। उन पत्रों में बहुत से नामी संतो और बाबाओ का जिक्र था जिनके नाम को बतलाना यहाँ उचित नहीं।

आज धोखेबाज संत, बाबा, ओझा की भरमार है। यह समझ ले कि आज इस क्षेत्र मे नब्बे प्रतिशत लोग धोखेबाज ही हैं। इन्ही सब के कारण यह ज्ञान अब लुप्त होती जा रही है। आज तो जो सच्चे संत, ओझा हैं वे अपमान से बचने के लिए अपनी पहचान छुपा कर रहने लगे हैं और उन्हें खोजना भी मुश्किल है। लोगो का भूत प्रेत, भगवान् के अस्तिव पर से विश्वास उठ गया है और हजारों लोग आज भी इन नकारात्मक ऊर्जा से प्रभावित हैं पर वे इससे छुटकारा नहीं पाते। आपको क्या इस बात पर विश्वास होगा कि आज ६० प्रतिशत मानसिक और शारीरिक बीमारी वाले लोग नेगेटिव एनर्जी से प्रभावित हैं।

ऊर्जा चिकित्सा

(ऊर्जा उपचार)

जब मै स्नातक में पढ़ रहा था तो एनर्जी हीलिंग के बारे में मैंने सुना; कुछ लोग कहते थे कि यह सही है और कुछ लोग गलत, पर मै यह मानता हूँ कि किसी चीज के बारे में जाने बिना उस पर अपना मत देना गलत है। इसलिए मैंने खुद इनके बारे में जानने की सोची।

इसी चिकित्सा प्रणाली को भारत में आध्यात्मिक चिकित्सा, स्पर्श चिकित्सा के नाम से जाना जाता था जो सदियों से की जाती थी। ऊर्जा चिकित्सा एक ऐसी उपचार प्रणाली है जो शरीर, मन और आत्मा में ऊर्जा के संतुलन और प्रवाह को पुनरस्थापित करती है। यह तकनीक व्यक्ति के भौतिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक पहलुओं के साथ सीधे काम करती है। इसका उपयोग विभिन्न रोगों, विशेष रूप से मानसिक स्वास्थ्य से संबंधित बीमारियों के इलाज के लिए किया जाता है।

यह उपचार शरीर में ऊर्जा प्रवाह की गड़बड़ी के कारण होने वाली बीमारी को ठीक करता है। ऐसा माना जाता है कि जब ऊर्जा का प्रवाह ठीक हो जाता है, तो व्यक्ति अपने आप ठीक हो जाता है। ऊर्जा उपचार की विभिन्न प्रकार की तकनीकें हैं, जो किसी व्यक्ति को ठीक करने के लिए अलग- अलग तरह से काम करती हैं।

ऊर्जा उपचार के 3 महत्वपूर्ण प्रकार हैं।

रेकी हीलिंग:

रेकी की खोज मिकाओ उसुई द्वारा की गयी थी। रेकी शब्द को दो जापानी शब्दों से बनाया गया है, जिसमे **रे** जिसका अर्थ है "ईश्वर का ज्ञान" और **की** का अर्थ है "ऊर्जा"। शरीर को चंगा करने के लिए इस थेरेपी में **की** या ब्रह्मांड की ऊर्जा का इस्तेमाल किया जाता है। इस पद्धति को करने के लिए बहुत सारे हैंड मूवमेंट और विशिष्ट प्रतीकों का उपयोग किया जाता है।

प्राणिक हीलिंग:

प्राणिक हीलिंग की खोज मास्टर चोय कोक सुई ने किया। प्राणिक हीलिंग शरीर की ऊर्जा को ठीक करने के लिए शरीर की जीवन शक्ति का उपयोग करती है। यह थेरेपी विशेष रूप से किसी व्यक्ति की आभा पर काम करती है। इस थेरेपी में, शरीर की विषाक्तता को साफ करने के लिए ऊर्जा का उपयोग किया जाता है।

क्वांटम टचः

क्वांटम-टच की खोज रिचर्ड गॉर्डन ने की। क्वांटम हीलिंग थेरेपी अनुनाद (रिजोनेन्स) के सिद्धांत पर आधारित है। इसमें शरीर में ऊर्जा का स्तर श्वास के माध्यम से बढ़ाया जाता है
जिससे रोग ठीक हो जाते है। क्वांटम हीलिंग शरीर के प्रतिरक्षा प्रणाली पर सकारात्मक प्रभाव डालती है।

ये एनर्जी हीलिंग पद्धतियाँ काम करती है या नहीं इसके लिए इनके बारे में जानना जरुरी था। सबसे पहले मैंने रेकी प्रणाली को पढ़ा। रेकी की किताब पढ़ने के बाद मुझे पता लगा की इसे वही कर सकता है जिसे किसी रेकी के आचार्य ने अपनी ऊर्जा से शक्तिकृत किया हो। मैंने पता किया तो पाया की इसे सीखने में अच्छा खासा पैसा लगता है इसलिए मैंने इसे नहीं सीखा पर इसकी पुस्तकों का अध्यन जरूर किया।

इसके बाद मैंने प्राणिक हीलिंग और क्वांटम हीलिंग की किताबो को पढ़ा। मैंने पाया की उन दोनों के लिए किसी की दीक्षा लेने की जरुरत नहीं आप किताब पढ़कर अभ्यास करने के बाद

इसका उपयोग कर सकते है। तो मैंने इनका अभ्यास करना शुरू कर दिया। मैंने गौर किया की तीनो पद्धतियाँ मूल रूप से एक ही हैं केवल अलग- अलग लेखकों ने थोड़ा बहुत इसके सिद्धांत और उपयोग करने के तरीके में रद्दोबदल कर उन्हें अपने नाम से प्रचारित किया है।

इन पद्धतियों में यह माना जाता है की हमारा शरीर एक ऊर्जा चक्र से घिरा हुआ है जिसे औरा कहते है। जब हम बीमार पड़ते है तो इस औरा के ऊर्जा प्रवाह में भी अवरोध उत्पन्न हो जाता है। अगर हम इस अबरोध को दूर कर दें तो रोग भी अपने आप दूर हो जाता है।

अचानक मुझे याद आ गया की हमारे शास्त्रों में पहले से ही औरा (आभामंडल) का जिक्र किया गया है और बतलाया गया है की जिनका तेज जितना अधिक रहता है उनका आभा मंडल उतना ही बडा रहता है। कई संतो के आभा मंडल तो कई मीटर तक फैले रहते हैं। इसीलिए जैसे ही हम संतो के नजदीक पहुंचते हैं हमें एक अजीब सी शांति महसूस होने लगती है। ठीक इसके विपरीत जब हम किसी बुरे आदमी के पास पहुंचते हैं तो उसका नकारात्मक आभामंडल भी हमें प्रभावित करता है और हमें बेचैनी होने लगती है। तस्वीरों में भी आपने देखा होगा कि महापुरुषों के चित्र में उनके सर के पीछे एक सुनहले रंग का चक्र बनाया जाता है यह चक्र उनके आभामंडल को ही तो दर्शाता है। हमने आभामंडल के ज्ञान को भुला दिया और विदेशियों ने उसपर और खोज की और उसे उपयोग में लाना शुरू किया।

इन चिकित्साओं में इसी आभा मंडल के गतिरोधों को हटाया जाता है। आभामंडल के साफ करने की प्रक्रिया को वे स्वीपिंग कहते है। इस काम के लिए वे एक कटोरी में नमक मिला पानी रखते है और रोगी सामने और पीछे से अपने दोने हाथो को ऊपर से नीचे इस तरह लाते है जैसे वे कुछ निकाल रहे हो और हाथ को उस नमक वाले पानी में झटक देते है। उनके अनुसार ऐसा करने से आभामंडल की नकारात्मक ऊर्जा निकल जाती है। नमक का पानी उस नकारात्मक ऊर्जा को सोख लेता है।

स्वीपिंग की इस प्रक्रिया को पढ़ते ही मुझे याद आया सरदर्द को या शरीर के किसी रोग को हटाने के लिए गाँव के ओझा यही प्रक्रिया तो अपनाते है अंतर सिर्फ इतना रहता है की यह काम

वे हाथ में मोरपंख या नीम की पत्तियां लेकर करते है। नीम की पत्तियां और मोरपंख नकारात्मक ऊर्जा को नष्ट करती है। इसलिए उनकी विधि अधिक कारगर होती है। पर हमने इसे अंधविस्वास कहकर इसका बहिष्कार किया और विदेशियों ने इसे अपना लिया। स्वीपिंग बाद वे रोग ग्रस्त स्थान पर अपना हाथ रखकर उसपर ऊर्जा का प्रवाह कर उसे रोगमुक्त करते है।

हमारे यह संत लोग आशीर्वाद देने के नाम पर अपना हाथ हमारे सर पर रखकर हमें ऊर्जावान ही तो बनाते हैं।

आपने शादियों में देखा होगा की हर रस्म के बाद ५ औरतें दूल्हा- दुल्हिन का चुमावन करती हैं। इसमें वे उनके चारो ओर कभी हल्दी और कभी कुछ अन्य चीजों को घुमाकर फेक देती हैं। आखिर वे क्या करती हैं? वे नकारात्मक ऊर्जा को ही तो हटाती हैं क्योकि इन अवसरों पर इनका प्रभाव जल्द होता है।

हमारी संस्कृति में इसे रस्मों में ही शामिल कर दिया गया है ताकि हम भूल न जाये।

जब मैंने इस पद्धति का अभ्यास कर लिया तो मैं इसका प्रयोग करने का अवसर ढूढ़ने लगा। एक दिन मेरी पत्नी ने कहा को उनकी जांघो में तेज दर्द होने लगा है। मैंने तुरंत उसपर ऊर्जा चिकित्सा का प्रयोग शुरू किया पांच मिनट बाद वे बोली दर्द जांघ से ख़त्म हो गया है पर अब वह दर्द पिंडलियों पर आ गया है। तब मैंने वहाँ पर ऊर्जा देना शुरू कर दिया और कुछ ही देर में वह दर्द भी गायब हो गया। एक बात मुझे परेशान करने लगी की जांघ का दर्द नीचे कैसे आया? क्योकि अगर जांघ में दर्द था तो इसका मतलब वहाँ की मांशपेशियों में खिचाव था, फिर दर्द नीचे कैसे आया? तभी मुझे याद आया कि आयुर्वेद में इन दर्दों को वात रोग के अंदर रखा गया है और वात का अर्थ होता है वायु अर्थात ये रोग वायु की तरह एक स्थान से दूसरे स्थान जा सकते है। उस समय मेरा सर उन ऋषियों के खोज पर और उनके ज्ञान पर झुक गया की कैसे उन्होंने उस ज़माने में इसकी खोज की होगी? मै इस पद्धति का इतना जल्द प्रभाव देखकर चकित रह गया।

इस तरह मैंने बहुत से रोगियों पर इसकी आजमाइस की और मुझे अधिकतर सफलता मिली। हां कुछ रोगियों को एक बार में आराम नहीं मिला उन्हें बार- बार करना पड़ा। शायद आदमी की संवेदनशीलता के आधार पर इसका प्रभाव कम या ज्यादा होता है। मै कोई पेशेवर तो था नही मेरे पास न अधिक रोगी थे न ही समय, इसलिए मै इस पद्धति पर ज्यादा प्रयोग नहीं कर पाया। पर एक बात तो मैंने महसूस किया कि यह पद्धति कारगर है।

स्वामी जी

एक दिन मेरे एक दोस्त ने मुझे कहा कि तुम्हे स्वामी जी से जरूर मिलना चाहिए। वे एक होम्योपैथिक क्लिनिक चलाते हैं और अध्यात्म में उनको बहुत जानकारी है। मै एक दिन फुर्सत में था तो मैं उनसे मिलने चला गया। वे एक अधेड़ उम्र के व्यक्ति थे, उनकी लम्बी सफ़ेद दाढ़ी थी और वे सफ़ेद पठानी सूट और पैजामा पहने थे। उनके क्लिनिक में रोगी कम थे पर मिलने वाले ज्यादा थे। जल्दी ही हममें अच्छी मित्रता हो गयी। वे मेरे अध्यात्म सम्बन्धी सभी प्रश्नों का उत्तर देते थे। उनके क्लिनिक में हर धर्म के लोग आते थे मेरी जान पहचान उनलोगों से भी हो गयी।

एक दिन मैंने उनसे पूछा की क्या अपने मंत्र साधना की है। उन्होंने कहा एक बार की थी। उन्होंने बतलाया की एक बार उनके हाथ एक मंत्र की किताब लगी। उनके पिता बहुत कठोर थे और पढ़ाई में अक्सर उन्हें मार पड़ती थी। उस किताब को पढ़ने के बाद उन्होंने वशीकरण की साधना करने की सोची। उन्होंने उस पुस्तक में बताई गयी विधि के आधार पर उस साधना को कुछ दिनों में पूरा कर लिया। उन्होंने कहा की सबसे पहले उन्होंने इसका प्रयोग अपने पिता पर किया। एक दिन वे पढ़ाई के समय रेडियो सुनने लगे। यह बात उनके पिता को पता लगी तो उन्होंने उसे बुलाया और वे भी बिना डर के उनके पास चले गए क्योंकि उन्होंने पिता पर वशीकरण का प्रयोग कर दिया था। पर उस दिन उनको जबरदस्त मार पड़ी। इस घटना के बाद उन्होंने वह पुस्तक फाड़ के फेक दी और कभी भी मंत्र सीखने की कोशिश नहीं की।

एक दिन हमलोगों कि महफ़िल जमी थी तब उन्होंने कहा मेरे एक प्रश्न का जवाब आपलोग दीजिये और पूछा **"भगवान के माता-पिता कौन हैं?** सबने अपने हिसाब से कुछ न कुछ जवाब दिया। अंत में खुद उन्होंने उत्तर दिया की भगवान् के माता-पिता है लालच और दुःख। अगर ये नहीं होते तो लोग शायद भगवन की खोज भी नहीं करते। उनका यह जवाब सभी को तर्कपूर्ण लगा।

इसी तरह एक दिन उन्होंने यह प्रश्न पूछा की सबलोगों ने यह कहावत सुनी होगी "न नौ मन तेल होगा न राधा नाचेगी" लेकिन क्या आपने कभी सोचा है राधा तो किसी तेली की बेटी नहीं थी और वह नौ मन तेल होने पर ही क्यों नाचेगी। इस प्रश्न का सटीक जवाब किसी को नहीं सूझा। तब उन्होंने कहा यह कहावत ही गलत है। वास्तविक कहावत दूसरी थी पर बोलचाल या मजाक में इसमें न जाने कब किसने इसे बदल दिया और यह इस रूप में प्रचलित हो गया। उन्होंने कहा की वास्तविक कहावत यह थी "न मन का मेल होगा न राधा नाचेगी" उनका यह उत्तर सभी को तर्कपूर्ण लगा।

स्वामी जी के यहाँ एक अधेड़ उम्र के एक व्यक्ति आते थे। उनके बारे में मुझे पता चला की वे इस शहर में ओशो की संस्था के प्रमुख हैं। मेरी उनसे जान पहचान बढ़ी तो मैंने उनसे एक दिन पूछा क्या आपने ओशो से ही दीक्षा ली है। तो उन्होंने कहा हाँ मेरा सौभाग्य था की उस समय वे जीवित थे। मैंने उनसे पूछा -सुना है की दीक्षा देते समय वे शिष्य के माथे को अपनी ऊँगली से छूते और उस समय वे बेहोश होकर गिर पड़ते थे क्या आपके साथ भी ऐसा ही हुआ? तो उन्होंने कहा दीक्षा देते वक्त उन्होंने मेरे भी माथे पर अंगुली रखी थी पर मैं न तो बेहोश हुआ न ही मुझे कुछ महसूस हुआ।

एक दिन मैंने स्वामी जी से पूछा कि आप भगवान, तंत्र-मंत्र कुछ नहीं मानते आखिर आप क्या मानते हैं या करते हैं तो उन्होंने उत्तर दिया मै ध्यान (मैडिटेशन) करता हूँ, इससे सब कुछ प्राप्त किया जा सकता है। मैंने उनसे पूछा ध्यान क्या है। उन्होंने बतलाया ध्यान का अर्थ एकाग्रता नहीं होता बहुत से लोग क्रियाओं को ध्यान समझने की भूल करते हैं- जैसे सुदर्शन क्रिया, भावातीत ध्यान क्रिया और सहज योग। किसी मूर्ति का स्मरण करना भी ध्यान नहीं है, माला जपना भी

ध्यान नहीं है। अक्सर यह कहा जाता है कि पांच मिनट के लिए ईश्वर का ध्यान करो- यह भी ध्यान नहीं, स्मरण हैं। ध्यान है क्रियाओं से मुक्ति, विचारों से मुक्ति। हमारे मन में एक साथ असंख्य कल्पना और विचार चलते रहते हैं। इससे मन-मस्तिष्क में कोलाहल-सा बना रहता है। हम नहीं चाहते हैं फिर भी यह चलता रहता है। हम लगातार सोच-सोचकर स्वयं को कमजोर करते जा रहे हैं। ध्यान अनावश्यक कल्पना व विचारों को मन से हटाकर शुद्ध और निर्मल मौन में चले जाना है। भीतर से जाग जाना ध्यान है। सदा निर्विचार की दशा में रहना ही ध्यान है। सबकुछ कहीं और नहीं आपके अंदर ही है।

बौद्ध दर्शन का एक सूत्र है **'अप्प दीपो भव'** अर्थात अपना प्रकाश स्वयं बनो। गौतम बुद्ध के कहने का मतलब यह है कि किसी दुसरे से उम्मीद लगाने की बजाये अपना प्रकाश (खुद बनो)। एक मात्र ध्यान ही ऐसा तत्व है कि उसे साधने से सभी स्वतः ही सधने लगते है।

आज से ५००० साल पहले शिव ने विज्ञान भैरव तंत्र नामक एक पुस्तक की रचना की। इस पुस्तक में पार्वती शिव से पूछती है---

1.
हे शिव, आपकी वास्तविकता क्या है?

2.
आश्चर्य से भरा यह ब्रह्मांड क्या है?

3.
इस विश्व का बीज क्या है?

4.
विश्व जिसके चारो ओर घूमता है वह केंद्र ث कहाँ है?

5.
इस परिवर्तनशील जीवन से परे क्या है?

6.
अंतरिक्ष और समय, नामों और विवरणों के ऊपर उठकर हम इसमें से कैसे प्रवेश कर सकते हैं? मेरी शंका दूर करे।

तब भगवान शिव परम वास्तविकता को खोजने के लिए ११२ ध्यान के तकनीकों का वर्णन किया है। और कहा कि इनमे से किसी एक ध्यान की तकनीक का उपयोग कर कोई भी उपरोक्त प्रश्नो का उत्तर पा सकता है। जितने भी मठ और सम्प्रदाय हैं वे इनमे से ही किसी एक का उपयोग करते हैं।

स्वामी जी एक सूफी संत सरकारे-हुजूर को बहुत महत्व देते थे। सरकारे हुजूर अब पर्दा कर गए हैं पर वे जब जिन्दा थे तभी से वे उनके पास जाते थे। सरकारे हुजूर की दरगाह हमारे शहर से लगभग ५० किलोमीटर की दूरी पर है। मैंने एक दिन उनसे पूछा मैनें सुना है वे बड़े करिश्माई व्यक्ति थे क्या आपने उनका कोई करिश्मा देखा है या सुना है? स्वामी जी ने कहा ऐसे तो बहुत सी घटनाएं है पर मै तुमको २ घटनाएं बतलाता हूँ। इस शहर के ही एक वार्ड पार्षद है गुप्ता जी वे एक बार सरकारे हुजूर के उर्स में गए थे। रात को जब वे उनसे लौटने की अनुमति लेने गए तो सरकारे हुजूर ने कहा रात बहुत हो गयी है तुम आज रात यही रुक जाओ सवेरे चले जाना। उनकी आज्ञा कोई नहीं टालता था, गुप्ता जी उस रात वहीं रुक गए। रात के करीब २ बजे लोगो ने २ गोली चलने की आवाज सुनी। सुबह लोग यह पता करने निकले की आखिर गोली किसने चलाई तो पता चला सरकारे हुजूर ने ही चलाई थी। गुप्ता जी सवेरे अपने घर निकल गए।

वहाँ जाकर उन्हें पता लगा की उनके घर १०-१२ डकैत घुस आये थे पर वे भाग गए क्योकि न जाने कहाँ से गोली चली और २ डकैतों को लगी उसके बाद सभी डकैत भाग गए। गुप्ता जी को समझ में आ गया की यह किसका काम था। गुप्ता जी उलटे पैर दरगाह पर लौट गए। जब वे

सरकार हुजूर के पास पहुंचे तो उन्होंने मुस्कुरा कर कहा तुम्हारा कुछ नुक्सान तो नहीं हुआ मैंने उन्हें डराकर भगा दिया था।

उन्होंने कहा कि एक बार मेरे पास मेरे एक दूर के रिश्तेदार बिना बताए अपने लडके को लेकर पहुंच गए। उनके लडके को ब्लड कैंसर हो गया था। वे मुझसे कहने लगे इसकी जिंदगी खतरे में है कृपया आप इन्हे सरकारे हुजूर का आशीर्वाद दिला दे। सरकारे हुजूर के पास ऊनके बिना बुलाये जाना मना था इसलिए मै पेशोपेश में पड़ गया की क्या करूँ पर वे इतना रो रहे थे कि मुझे दरगाह जाना पड़ा। वहां पहुँचने पर मैंने सरकारे हुजूर से उसे ठीक करने की प्रार्थना की तो सरकारे हुजूर ने कहा किसने कहा इसे ब्लड कैंसर है इसे केवल खून की कमी है जाओ इसे खून चढ़वा देना और अपनी दवाये दे देना और भविष्य में कभी भी मेरी अनुमति के बगैर किसी को मत लाना। मैंने उनकी आज्ञानुसार उस बच्चे को खून चढ़वाया और अपनी कुछ दवाएं दी, तीन महीने बाद फिर से जांच करने पर उसे कैंसर नहीं निकला।

मेरे गुरु से मेरी मुलाकात

एक दिन सरकार हुजूर से मिलने एक मुस्लिम लड़का आया। लड़के की उम्र २०-२२ के बीच थी। बात करने पर पता लगा कि वे भूत प्रेत से परेशान इंसानो को ठीक भी करते हैं। यह सुनकर मेरे मन में उनके बारे में और जिज्ञासा बढ़ी। मैंने उनसे पूछा क्या मंत्रो में शक्ति होती है। उन्होंने कहा बिलकुल होती है। मैंने उनसे पूछा किसी ने ईश्वर को नहीं देखा तो उसके होने या न होने का विस्वास कैसे हो? उन्होंने कहा ईश्वर बहुत बड़ी शक्ति है उसे देख पाना आसान नहीं। हां भूत प्रेत के प्रभाव को किसी के शरीर पर तुम अनुभव कर सकते हो और जब ईश्वर के मंत्र से वे भाग जायेगे तब परोक्ष रूप से ईश्वर की शक्ति और उनपर तुम्हारा विश्वास हो जायेगा। उनकी यह बात मुझे युक्तिसंगत लगी। मैंने पूछा क्या इस विद्या को लोगो को सीखना चाहिए? तो उन्होंने कहा अवश्य मेरी तो इच्छा है कुछ गरीब विधवा औरतें को मैं यह सिखा दूँ इससे बहुत से लोगों का कल्याण हो जायेगा और उन विधवा औरतों की भी कुछ आमदनी हो जाएगी। यह सुनकर मुझे मालूम पड़ गया कि ये आसानी से अपनी बिद्या सिखा भी सकते हैं। मैंने पूछा

आपकी आय का जरिया क्या है तो उन्होंने बतलाया की इसी विद्या से मेरी थोड़ी बहुत आय हो जाती है पर अक्सर कुछ नयी साधना के लिए मै बाहर निकल जाता हूँ तो यह आय भी नहीं होती। मैंने पूछा बहुत दिनों से प्रेत तंत्र मंत्र और सिद्धियों के बारे में जानने की मेरी बड़ी इच्छा है क्या इनके बारे में और जानने और अपनी शंकाओ के निवारण के लिए मै आपके पास आ सकता हूँ? तो उन्होंने कहा जरूर और उन्होंने मुझे अपना मोबाइल नम्बर दे दिया।

जल्द हीं उनसे समय लेकर मै उनके पास पहुँच गया। मैंने उनसे पूछा आपको सबसे पहले मंत्र की शक्ति पर कब विश्वास हुआ? उन्होंने बताया कि बचपन में मै बहुत ही डरपोक था अंधेरे से, भूत प्रेत की बातों को सुनकर मुझे डर लगता था। अपनी रक्षा के लिए मैंने एक पुस्तक से देखकर रक्षा मंत्र पाठ करना शुरू कर दिया। उस किताब में लिखा था कि इस मंत्र को बिना सिद्ध किये भी काम में लाया जा सकता है। इससे भूत प्रेत से रक्षा तो होती ही है पर इसे अगर किसी भूत प्रेत से ग्रसित व्यक्ति के पास पढ़ा जाए तो वे तुरंत उसका शरीर छोड़कर भाग खड़ी होती है। मै इस मन्त्र को हर रात पढ़ लिया करता था जिससे मै इन बुरी शक्तियों से बचा रहूँ।

मेरे घर से कुछ दूरी पर एक गरीब परिवार था जिन्हे एक १० साल की एक लड़की थी। एक रात करीब 11 बजे वह बहुत डर गयी और काँपने लगी और माता-पिता के पूछने पर उसने बतलाया की उसके नजदीक दो डरावने व्यक्ति खड़े हैं जिससे उसे डर लग रहा वे कह रहे हैं कि हम तुम्हे अपने साथ ले जाएंगे। माता पिता को कुछ नहीं दिख रहा था और लड़की लगातार रोये जा थी और उनको कसकर पकड़ी हुई थी। माता पिता को समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करे। पत्नी ने कहा किसी जानकार मौलवी को बुलाना चाहिए। पर उतनी रात को कोई मौलवी कहाँ मिलता और नजदीक में कोई था भी नहीं। अचानक उनकी पत्नी को मेरी याद आई। उसने कहा की नजदीक में महमूद नाम का एक लड़का रहता है तबतक उसे ही बुलाया जाए मैंने सुना है वह कुछ जानता है। उस लड़की के पिता मेरे पास आये, घटना के बारे में बतलाया और कहा आप कुछ करिये जिससे लड़की का डर कम हो। मैंने कहा मुझे ज्यादा मंत्रो की जानकारी नहीं और मै इस तरह के काम करता भी नहीं पर वे मिन्नतें करने लगे की कम से कम मेरे घर चलकर उसे देख तो लीजिये। उन्होंने इतनी मिन्नत की तो मेरे माता-पिता ने कहा कुछ करो या नहीं कम से देख तो आओ इनको संतोष हो जायेगा। मै उनके साथ उनके घर पहुँचा। लड़की

वास्तव में बहुत डरी हुई थी। मैंने पूछा तुम्हे वे कहाँ दिख रहे है तो वह बोली मेरे पास ही वे खड़े हैं। मुझे बस केवल एक रक्षा मंत्र ही आता था। मुझे याद आया की पुस्तक में यह भी लिखा था किसी भूत प्रेत के ग्रसित व्यक्ति के पास इस मंत्र का पाठ करने पर वे भाग जाते कि इसलिए मैं उसी मंत्र का जाप करने लगा। कुछ ही देर में लड़की ने कहा वे मेरे पास से दूर खिड़की के पास चले गए है। यह सुनकर मेरा आत्मविश्वास बढ़ गया अब मैंने उस मंत्र को पढ़कर खिड़की की तरफ फूंक मारना शुरू किया तो लड़की ने कहा वे वहाँ से भी चले गए है और लड़की का डर खत्म हो गया। इस घटना के बाद मुझे मंत्रो की शक्ति पर विश्वास हो गया की ये वास्तव में काम करते है।

मैंने उनसे कहा इसके बाद का कुछ अनुभव सुनाइये। उन्होंने कहा कुछ दिनों तक मैंने कुछ नहीं किया। एक दिन मैंने एक बुकस्टाल पर सम्मोहन (हिप्नोटिज्म) पर एक किताब देखी और उत्सुकता बस उसे खरीद कर ले आया। उसे पढ़ने के बाद मुझे लगा की इसे सीखना चाहिए और मै सम्मोहन के अभ्यास में लग गया।

सम्मोहन (हिप्नोटिज्म)

सम्मोहन का प्रयोग भारतवर्ष में प्राचीन काल से किया जा रहा है जब बाहरी दुनियाँ के लोगो को इस बिद्या के बारे में कुछ भी जानकारी नहीं थी। इसे उस समय 'प्राण-विद्या',' त्रिकालविद्या', मोहिनी और वशीकरण विद्या के नाम से जाना जाता था। अंग्रेजी में इसे ही हिप्नोटिज्म के नाम से पुकारा जाने लगा। हिप्नोटिज्म यूनानी भाषा हिप्नॉज से बना है जिसका अर्थ होता है निद्रा। भारतवर्ष में प्रयोग किया जाने वाला 'सम्मोहन' शब्द 'हिप्नोटिज्म' से कहीं ज्यादा व्यापक और सूक्ष्म है।

ऐसा कहा जाता है कि दुनिया में कत्लेआम मचा देने वाले हिटलर ने सम्मोहन के प्रभाव में ये कदम उठाए। पहले विश्वयुद्ध के बाद हिटलर कई बीमारियों का शिकार हो गया था, जिसमें से एक थी हिस्टीरियल ब्लाइंडनेस। डेली मेल की एक रिपोर्ट के अनुसार इलाज के दौरान हिटलर डॉ एडमण्ड फॉस्टर (डीआर एडमंड फॉरस्टर) के संपर्क में आया, जिन्होंने उनके इलाज में

सम्मोहन का प्रयोग किया था इलाज के बाद से हिटलर यह मानने लगा कि उसे जर्मनी को सबसे आगे ले जाना है और इसी क्रम में उसने कत्लेआम मचा दिया और लाखों लोगों को उसने अकारण मौत के घाट उतार दिया। इस बात को देखकर डॉ एडमंड को अपने आप पर बहुत ग्लानि हुई और उन्होंने खुदकशी कर ली थी।

ऐसा माना जाता है कि सबसे पहले स्विटरजरलैंड के चिकित्सक परसेलियस (पैरासिलसूस) ने पंद्रहवी सदी में मरीजों को दर्द से राहत देने के लिए उन्हें सम्मोहित करना शुरू किया था। उस वक्त में बेहोश करने की दवा एनस्थीशिया नहीं थी, लिहाजा वे संक्रमित पैर, हाथ या शरीर किसी हिस्से को काटने के लिए मरीज को सम्मोहित किया करते थे। ये एक तरह से दर्द निवारक का काम करता था।

प्राचीन ग्रीस (ग्रीस) में सम्मोहन के लिए बाकायदा मंदिर होते थे, जिन्हें स्लीप टेंपल्स, ड्रीम टेम्पल्स या अस्कलियपीयस का मंदिर के नाम से से जाना जाता था जो ग्रीक के पौराणिक कथाओं के आधार पर सबसे पहले डॉक्टर, असलपियस को समर्पित है जिन्हें ईश्वर का दर्जा प्राप्त था। असलपियस के बारे में कहा जाता था कि वे इतने कुशल डॉक्टर थे कि वे मृतकों को भी जिन्दा कर देते थे। यह एक ऐसी प्रक्रिया थी जिसमे मरीज इस उम्मीद के साथ मंदिर में सो जाते थे कि उन्हें स्वप्न या वास्तव में आस्सिपियस से मुलाकात होगी जो उन्हें ठीक कर देंगे। इन तरीकों को हीलिंग या विश्वास चिकित्सा के रूप में माने जाने के बावजूद, वे अत्यधिक प्रभावी थे, कई लिखित विवरण रोगियों के उपचार से संबंधित विस्तृत विवरण प्रदान करते हैं। 350 ईसा पूर्व लगाए गए तीन बड़े संगमरमर के बोर्ड में नाम केस हिस्ट्री, शिकायत के साथ लगभग 70 रोगियों के इलाज का विवरण है, जो मंदिर में एक समस्या लेकर आए थे और उसे यहाँ ठीक दिया गया था।

भारतवर्ष में इस विद्या का इस्तेमाल साधु-संत सिद्धियां और मोक्ष प्राप्त करने के लिए करते थे। सम्मोहन के लिए भारत में त्राटक का उपयोग किया जाता था जिससे साधक को भूत भविष्य देखने की क्षमता प्राप्त हो जाती थी यह देखकर काला जादू करने इसे सीखकर गलत काम करना शुरू कर दिया जिससे सम्मोहन बदनाम हो गयी और लोग सम्मोहनकर्ता को गलत

समझने लगे और यह कला लुप्त सी हो गयी। सम्मोहन से मिलती-जुलती हैं त्राटक और मोहिनी, इससे वशीकरण कर किसी को अपने वश में किया जाता है। लेकिन इनके करने का तरीका और प्रभाव अलग-अलग होता है इसलिए इन्हे अलग अलग वर्गों में रखा गया है।

सम्मोहन पूरी तरह से हमारे अचेतन मस्तिष्क पर आधारित होता है। यूं तो हमारे अवचेतन मस्तिष्क को शक्तिशाली व एकाग्र करने की अनेक विधियां शास्त्रों में बताई गई है, लेकिन उन विधियों में भी दो विधियां प्रमुख है, ये दो विधियां हैं,

पहली त्राटक तो दूसरी है ध्यान।

त्राटक क्या है - किसी वस्तु अथवा बिंदु को एकटक बिना पलक झपकाए देखने को त्राटक कहते हैं। इससे साधक मन और नेत्रों को वश में करने का प्रयास करते हैं। इसके लिए आंखों के ठीक सामने जलती हुई मोमबत्ती, पेंडुलम या लाल बल्ब को लगातार पलक झपकाए बिना अधिक से अधिक समय तक देखने का अभ्यास जाता किया है। इसके लिए मंत्रोच्चारण का भी सहारा लिया जाता है।

मेरे गुरु ने बतलाया कि किताब से पढ़कर मैंने त्राटक साधना शरू कर दी। शुरू में मै ५ मिनट से ज्यादा त्राटक नहीं कर पाता था क्योकि बिना पालक झुकाये ५ मिनट तक देखना मुश्किल काम था। उससे मुझे किताब में लिखे त्राटक के कुछ भी लाभ नहीं मिल रहे थे तो मैंने अभ्यास करके उसे १ घंटे तक बढ़ा लिया। पर फिर भी मेरे आँखों में कोई शक्ति नहीं आई हाँ मुझे सर और आँखों में लगातार दर्द रहने लगा। तब मैंने यह साधना बंद कर दी। इसके बाद मैंने सोचा की बिना गुरु के कुछ भी सिद्ध नहीं हो सकता इसलिए मैंने गुरु खोजना शुरू किया।

लोना चमारिन

मैंने गुरु की खोज शुरू कर दी। मै बहुतों के पास गया पर कोई मुझे तंत्र मंत्र सिखाने को तैयार न हुआ। अंत में मै एक इस्माइल नामक व्यक्ति से मिला वह मुझे सिखाने को तैयार हो गया पर उसने इसके लिए कहा कि तुम्हें पैसे देने पड़ेंगे। कोई चारा न देखकर मैं पैसे देकर ही सीखने को तैयार हो गया। उन्होंने कहा कि मैं तुम्हे लोना चमारिन का मंत्र दे रहा हूँ। यह मंत्र मैंने खुद सिद्ध कर रखा है। इसके लिए उन्होंने कहा यह मंत्र तुम्हे आधी रात को ४१ दिनों तक अमुक संख्या में पढ़नी होगी। इससे तुम्हे लोना चमारिन सिद्ध हो जाएगी। लोना चमारिन की मदद से तुम भूत प्रेत अथवा रोगो से ग्रस्त व्यक्ति को ठीक कर सकोगे साथ ही साथ इससे वशीकरण भी सिद्ध हो जायेगा और यह तुम्हे किसी के भी भूत भविष्य की जानकारी भी देगी। मै एक ही मंत्र के इतने फायदे जानकार खुश हो गया और अपनी साधना शुरू कर दी। साधना के ७ दिन बीत गए तभी मुझे अपने एक पुराने मित्र से भेट हुई। उसने भी कुछ मंत्रो की सिद्धि कर रखी थी। मैंने उससे लोना चमारिन की सिद्धि के बारे में पूछा।

उसने मुझे बताया की लोना चमारिन की सिद्धि को कई तांत्रिक मना करते हैं और और कहते है कि यह एक पैशाचिक साधना है। साधना के अंत में लोना चमारिन खुद प्रकट हो जाती है। लोना चमारिन एक बदसूरत स्त्री है जिसके दांत बाहर निकले हुए है और जो बहुत गन्दा रहती है। वह नग्न आकर आपके गोद में बैठ जाएगी और आपको सम्भोग के लिए प्रेरित करेगी जिससे आप इंकार नहीं कर सकते। इसके बाद वह हर समय आपके साथ रहती है और आपके सब काम करती है। आपको जब वो चाहे सम्भोग करके उसे संतुष्ट करना पड़ता है जो किसी साधक के बस की बात नहीं होती। वह उसके पारवारिक जिंदगी को भी बर्बाद कर देती है। चुकी यह एक पैशाचिक शक्ति है इसलिए इसके संपर्क में आने के बाद आपके स्वभाव में धीरे धीरे बदलाव आना शुरू हो जाता है। वह आपको कामी, क्रोधी, नशेडी और शराबी बना देती है। यह सुनकर मै बहुत डर गया और मैंने उसी दिन से इस सिद्दी को करना छोड़ दिया और अल्लाह को समय पर बचा लेने के लिए धन्यवाद दिया।

इसी तरह की एक और साधना है "**कर्ण पिशाचिनी साधना**" आपको इसकी सिद्धि के बारे में इंटरनेट पर मंत्र और साधना विधि आसानी से मिल जाएगी। ज्योतिष, हस्तरेखा और भविष्य

बतलाने वाले लोग इसकी साधना की कामना रखते है क्योकि यह किसी के भूत और भविष्य को सही-सही बतला देती है इसलिए पैसा और प्रसिद्धि की चाह में के लोग किताबों या इंटरनेट से पढ़कर इसकी साधना शुरू कर देते है। जैसा कि नाम से जाहिर है कि यह एक पैचाशिक साधना है इसलिए इसका भी अंत वही होता है जो लोना चमारिन की सिद्धि में होता है। एक बात और जान ले की कर्ण पिचाशानि सिद्ध व्यक्ति आपके भूतकाल को तो १०० प्रतिशत बतला देती है पर यह भविष्य नहीं बतला सकती। भविष्य उस ज्योतिष के द्वारा खुद बतलाया जाता है पर वह आपके भूतकाल को इतना सही बतला देता है कि आप उसके बतलाये गए सभी बातों पर विश्वास कर लेते हैं। इसलिए मेरा अनुरोध है की इन सिद्धियों के पीछे न पड़े। यह भी जान ले की एक बार सिद्ध हो जाने के बाद आप इनसे पीछा नहीं छुड़ा सकते। बड़ा से बड़ा तांत्रिक आपको इनसे छुटकारा नहीं दिला सकता।

मेरे गुरु ने कहा कि इसके बाद मैंने निश्चय किया कि अब मै केवल खुद के बनाये मंत्रों का ही सिद्द करूँगा। मैंने सभी मंत्रो को ध्यान से पढ़ना शुरू किया तो मैंने पाया की मन्त्र धर्म ग्रंथो से ही निकाले गए कुछ वाक्य या आयत हैं और उसमे किसी देवता की प्रशंसा की गयी या उनसे किसी चीज का अनुरोध किया गया है। हिन्दुओ में भी यही बात देखने को मिलती है। मिसाल के तौर पर पर बजरंग बाण की एक पंक्ति है -

भूत, प्रेत, पिसाच निसाचर । अगिन बेताल काल मारी

इन्हें मारु, तोहि सपथ राम की। राखु नाथ मरजाद नाम की ॥

आप इसी वाक्य को मन्त्र बना सकते हैं और इससे भूत, प्रेत, पिशाच, वैताल सभी को ख़त्म कर सकते हैं और इस काम में यह पूरे बजरंग बाण से ज्यादा कारगर होगा।

उसी तरह कुरान का हर एक शब्द को मंत्र की तरह इस्तेमाल में लाया जा सकता है। यहाँ तक की अल्लाह के हर नाम मंत्र की तरह काम में लाया जाता है। कुरान में अल्लाह के ९९ नाम का

उल्लेख है उनमे से लोग जरुरत के अनुसार किसी नाम का पाठ करते है। जैसे अल रज्जाक का मतलब है आजीविका इसलिए अगर आप बेकार है तो अल रज्जाक का जाप करे तो आपको रोजी मिल जाएगी।

मैंने उन्ही आयतो को खोजकर अपनी जरुरत के अनुसार सिद्ध किया और अल्लाह की दुआ से मुझे सफलता मिली।

शंका-समाधान

मंत्र सीखने के पहले मैंने उनसे कहा मेरे कुछ प्रश्नो का उत्तर दीजिये।

उन्होंने कहा पूछो तो मैंने पूछा क्या कोई हिन्दू क्या इस्लामिक मंत्रो का जाप कर सकता है?

उन्होंने जवाब दिया क्यों नहीं? सब इंसान ईश्वर के ही तो बनाये हुए है हमने ही उन्हें धर्मों के नाम पर अलग किया है।

इसके बाद मैंने पूछा क्या इस्लामिक मंत्रो का जाप करने के लिए मुसलमान बनना, खतना करवाना जरुरी है?

उन्होंने कहा यह जरुरी नहीं। अगर खतना करना जरुरी होता तो ईश्वर पहले से ही वैसा हमें पैदा करते।

मैंने पूछा क्या पश्चिम की दिशा में ही मुस्लिम मंत्र को जाप करना चाहिए ?

उन्होंने कहा नहीं, आखिर ईश्वर किस दिशा में नहीं है, पूरा विश्व उन्ही का ही है। मै तुम्हे एक वाकया सुनाता हूँ-गुरुनानक एक बार मक्का मदीना गए। उन्हें थकान हुई तो वे जमीन पर लेट

गए। तब एक व्यक्ति ने उन्हें कहा क्या कुफ्र कर रहे हो तुम मक्का की तरफ पैर करके सो रहे हो। इसपर गुरुनानक के कहा भाई मुझे तो पता नहीं मै थका हुआ भी हूँ अगर तुम्हे एतराज न हो तो मेरा पैर उस दिशा में कर दो जिधर मक्का नहीं। उस व्यक्ति ने ऐसा ही किया पर यह देखकर वह आश्चर्य में पड़ की वह जिस दिशा में वह उनका पैर करता था उधर ही उसे मक्का दिखाई पड़ता था। तब उसे ज्ञान मिल गया की अल्लाह हर तरफ है पूरी दुनिया उसी की सल्तनत है।

फिर मैंने पूछा माला किस चीज की बनी होनी चाहिए क्योकि हिन्दुओं में काम के अनुसार तरह-तरह की मालाओं का प्रयोग होता है जैसे हर काम के लिए रुद्राक्ष का, शंकर भगवान् के लिए आक का, लक्ष्मी प्राप्ति के लिए कमल गट्टे का और मारण के लिए हड्डी की उसी तरह इस्लाम में हकीक की माला को उपयोग में लाया जाता है?

उन्होंने कहा तुम किसी भी माला का प्रयोग कर सकते हो, माला का काम सिर्फ मंत्रो की गिनती को सही रखना है। तुम चाहो तो अंगुलियों की मदद से भी गिनती कर सकते हो। मंत्रो की गिनती के लिए एक और तरीका इस्तेमाल में लाया जाता है वह है समय। अगर किसी मंत्र को बताये गयी संख्या में जप करने के लिए तुम्हे २ घंटे लगते है तो तुम बिना किसी माला के घडी की मदद से रोज २ घंटे जप कर लो तो वह भी चलेगा।

मैंने पूछा क्या किसी विशेष दिन या महीने से जप शुरू करना जरुरी है?

उन्होंने कहा नहीं, हिन्दुओ में इसके लिए अच्छे मुहूर्त का उपयोग किया जाता है और इस्लाम में जुम्मे के दिन से, पर मेरे विचार से यह जरुरी नहीं।

मैंने पूछा क्या सिद्धि के लिए गुरु की आवश्यकता है ?

उन्होंने कहा मैंने तो गुरु के बिना ही साधना की पर गुरु रहने से गुरु उस साधना में आने वाली कठिनाईयों को आपको पहले से ही बता देता है और कही आप किसी परेशानी में फ़स जाते हैं

तो उससे उबारने का भी काम करता है। एक बात और गुरु का दिया मंत्र उन्हें सिद्ध होता है इसलिए उनके दिए मंत्र की सिद्धि की सम्भवाना बढ़ जाती है क्योंकि उस मंत्र के देवता और मुवक्किल गुरु को जानते हैं और उन्ही के पास रहने से वे आपको भी पहचानने लगते हैं क्योंकि गुरु ने ही आपको मन्त्र दिया है तो वे समझते हैं ये उनका ही आदमी है और आपको सिद्धि जल्द ही मिल जाती है।

मैंने पूछा क्या मंत्र पाठ के पहले नहाना जरुरी है?

उन्होंने कहा नहीं आप हाथ मुँह धोकर भी पाठ कर सकते है पर नहा लेने में भी कुछ हर्ज नहीं। हां अगर आप रात को हमविस्तर हुये हो तो जरूर नहाए। वास्तव में पवित्र तो आदमी को अंदर से होना चाहिए बाहर से नहीं। हिन्दुओं में पूजा के शुरुआत में ही एक मंत्र पढ़ा जाता जो संस्कृत में होता है इसलिए लोग समझ नहीं पाते। वह मंत्र है

ॐ चाहे अशुद्ध हो या शुद्ध, सभी परिस्थितियों में, जो व्यक्ति कमल-नेत्र भगवान का स्मरण करता है, वह बाह्य और आंतरिक दोनों रूप से शुद्ध हो जाता है।

इसका अर्थ है -- कोई भी मनुष्य जो पवित्र हो, अपवित्र हो या किसी भी स्थिति को में हो, जो भगवान पुण्डरीकाक्ष (भगवान विष्णु) का स्मरण करता है, वह बाहर और भीतर से पवित्र हो जाता है।

इस मंत्र से ही स्पष्ट हो जाता है की केवल ईश्वर का नाम ले लेने से ही मनुष्य पवित्र हो जाता है।

मैंने पूछा की मैंने कई बार सुना है की भूत भगाने गया ओझा ही कभी-कभी वहां से भाग खड़ा होता है क्या मेरे साथ भी कभी ऐसा हो सकता है?

उन्होंने कहा ज्यादातर ओझा यह सब काम करने के लिए किसी प्रेत को सिद्ध करते हैं। भूत हटाने के समय वे उसी को भेजते हैं पर कभी कभी प्रेतप्रत आदमी का प्रेत ज्यादा ताकतवर

होता है उस समय वह उसी को मारकर भगा देता है और ऐसी हालत में ओझा समझ जाता है की इसे भगाना मेरे वश की बात नहीं इसलिए वह भाग खड़ा होता है पर आपके साथ ऐसा नहीं होगा क्योकि आप ईश्वर के मंत्र से उसे भगा रहे है और ईश्वर के आगे कौन ठहर सकता है?

मैंने उनसे पूछा कि मैंने ऐसा देखा है कि शैतान से अधिकतर महिलाएं ही प्रभावित होते है ऐसा क्यों ?

तुमने कभी देखा है जब सर्दी के दिनों में कुछ लोगो को मौसम के जरा सा परिवर्तन होने पर ही जुकाम हो जाता है, वे उस समय दही, मछली, अमरूद आदि खाने से भी परहेज करते हैं पर कुछ लोगों को सर्दी जल्दी नहीं पकड़ती और वे सर्दियों में भी आराम से दही, मछली, और अमरूद खा सकते है। कुछ लोग कुछ भी खाये तुरंत मोटे हो जाते है और कुछ लोग कितना भी घी खा ले पतले ही रहते हैं तुमने कभी सोचा ऐसा क्यों? ऐसा इसलिए होता है की उनके शरीर की बनावट ही ऐसी है। उसी तरह स्त्रियाँ और बच्चे आमतौर पर मानसिक रूप से कमजोर होते हैं इसलिए वे जल्दी इनका शिकार बनते हैं पर कुछ स्त्रियाँ इससे प्रभावित नहीं होती क्योकि वे मानसिक तौर पर बहुत मजबूत रहती है। शैतान भी तो ऐसे शिकार को ढूढ़ता है जिसे बस में करना आसान हो। यही बात वशीकरण मंत्रो में होता है। तुम इनको किसी ऐसे व्यक्ति पर प्रयोग कर दो जो मानसिक रूप से मजबूत है तो उसे कुछ नहीं होगा और तुम समझोगे मेरा मंत्र ही गलत है या सिद्ध नहीं हुआ है। इसी कारण तुमने देखा होगा किताबो में राजा के वशीकरण का अलग से मंत्र दिया रहता है। तुमने यह कहावत सुनी होगी कि गरीब की लुगाई सब की भौजाई होती है इस कहावत का सीधा सा अर्थ यह है कि गरीब, निर्बल और सीधे सादे आदमी का हर कोई फायदा उठाता है, उसका हर कोई इस्तेमाल करता है और प्रायः उसे हर जगह दबाया जाता है। किन्तु किसी बड़े आदमी की संस्कारहीन, गुणहीन, चरित्रहीन बीवी को कोई भी भाभी कहने की हिम्मत नही करता उसको सब बहिन जी, दीदी या मैम कहकर बुलाते हैं। यही बात यहाँ भी लागू होती है।

मंत्र पढ़ने पर कौन मन्त्रिक की आज्ञा पर काम करता है ?

इस्लामी मान्यताओं के अनुसार हर मंत्र का अलग अलग मुवक्किल होता है जो साधक की आज्ञाओ का पालन करता है और उसके कहे सभी कार्यों को करता है। सुलेमानी तंत्र मे इनका बहुत महत्व है। मुवक्किल जिन्न जिन्नात से भी कई गुना ज्यादा शक्तिशाली होते हैं। एक मुवक्किल हजार जिन्नो से लड़ने की ताकत रखता है। मुवक्किल को इस्लाम मे स्वर्गदूत कहा जाता है। मुवक्किल एक प्रकार से देखा जाये तो सबसे बड़ी रक्षात्मक शक्ति होती है, यह सभी कार्यों को पुर्ण करने में सक्षम भी है।

क्या मंत्र तंत्र वास्तव में काम करते हैं और बहुत प्रेत सचमुच होते हैं?

उन्होंने कहा की इस बात पर लोग बहुत से सवाल उठाते हैं। आप उनलोगों से पूछे कभी उन्होंने खुद इस बात की जांच करने की कोशिश की है तो ९० प्रतिशत लोगों का जवाब होगा नहीं। आज भी कई जगह शैतानों को रोज भगाया जाता है कई जगह तो इसके लिए जाने जाते हैं। जैसे बालाजी, कटौझा शरीफ आदि आप वहाँ जाकर तहकीकात तो करें रोगियों के घर जाकर उनके विचार तो पूछे तुरंत दूध का दूध और पानी का पानी हो जायेगा पर आप खुद हीं सोचे यह सब किये बिना किसी विद्या को बदनाम कर देना क्या सही है ?

अधिकतर विदेशी पुस्तकों में लिखा जाता है की यह सब मनोवैज्ञानिक है। ऐसे स्थानों पर अँधेरा रहता है और ये काम अक्सर रात को सन्नाटे में किये जाते हैं। वहाँ अँधेरे को दूर करने के लिए उपयोग में लाये गए दियो की कम रौशनी रहती है, वहाँ धुँवा फैला रहता है, नगाड़े बजते रहते हैं, सामने आग जलता रहता है और उसके पास सिंदूर में लिपटे नरमुंड रहते हैं, ऐसे वातावरण में सामान्य व्यक्ति को भी डर लग जाता है तो एक मानसिक रोग से ग्रस्त रोगी का क्या होगा? वह डर से बेहोश हो जाता है तो वे लोग कहते है इसके शरीर पर भूत आ गया है। कई बार उसे मिर्च का धुँवा भी दिया जाता है और कहीं-कहीं तो मारा भी जाता है जिससे पहले से परेशान रोगी कुछ-कुछ बोलने लगता है कभी झूमने लगता और वे उसे भूत की करतूत बतलाते हैं पर ऐसा कुछ नहीं होता। पर मैं पाठकों को बतला दूँ की अकसर मैं दिन में ही शैतान ग्रस्त रोगी को उसी के घर पर उसे देखने जाता हूँ जहाँ पूरी रौशनी रहती है और मात्र एक या दो अगरबत्ती मैं

जलाता हूँ। वहाँ कोई भी नरमुंड या डरावनी चीज नहीं रहती और वह अपने परिवार के लोगों के बीच ही बैठा रहता है। मै रोगी के बदन को भी नहीं छूता न मारता पीटता हूँ, न ही वहाँ ढोल मजीरे बजते हैं फिर भी रोगी के शरीर पर भूत आते हैं और उसे हटाया भी जाता है, यह कैसे होता है क्या उनके पास इसका जवाब है?

भूत प्रेत किस तत्व से बने होते हैं?

मानव शरीर पांच तत्वों से बना है पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि और आकाश इनमे से दो तत्व स्थूल हैं और तीन सूक्ष्म। इनमे से भूतों का शरीर केवल वायु, अग्नि, आकाश से बना रहता है इसलिए उनमें शरीर नहीं रहता क्योंकि दो तत्व पृथ्वी और जल तो मृत्यु के बाद नष्ट हो जाते है।

क्या भूत प्रेत सामान्य आदमी को दिखाई पड़ सकते हैं?

सामान्य रूप से नहीं पर जिन्न में यह शक्ति रहती है की वे किसी आदमी या जानवर का रूप ले ले।

मैंने पूछा बहुत से ओझा भूत भगाने के नाम पर रोगी को तमाचा मारते है तरह- तरह से पिटाई करते हैं क्या यह सही है ?

यह बिलकुल गलत है ऐसे में चोट तो उस रोगी को लगेगी क्योकि शरीर उसका है। भूत को तो केवल मंत्रो से बाँधा या जलाया जा सकता है। इस लाइन में ९०% लोग धोखेबाज हैं जो ये सब करते हैं और इस विद्या को बदनाम करते हैं।

क्या इस बिधा में पैसा लेना गलत है?

कुछ मंत्रो में सिखाने के पहले यह वादा ले लिया जाता है की आप पैसा नहीं लेंगें जैसे साँप का जहर उतरने का मन्त्र इसलिए वे पैसा नहीं ले सकते पर और मन्त्रिक पैसा क्यों नहीं लेंगे?

आखिर वे पूरे समय यही काम करते हैं तो वे अपना परिवार कैसे चलाएंगे डॉक्टर भी तो पैसे लेते है न?

क्या शैतान झूठ भी बोलते हैं?

ये बहुत झूठ बोलते हैं यहाँ तक की अगर किसी ने प्रेत सिद्ध भी कर लिया हो तो वह कभी भी अपने मालिक से भी झूठ बोल सकता है।

क्या ये चढ़ाई सामग्री को खाते है?

नहीं ये उसे खा नहीं सकते इनका शरीर ही नहीं होता तो खायेंगे कैसे ? इनको इसका केवल स्वाद महसूस होता है।

आपने जो ऊपर बतलाया उसपर विश्वास नहीं होता क्या वास्तव में बिना मुहूर्त, माला और शुद्ध उच्चारण के भी मंत्र सिद्धि की जा सकती है?

उन्होंने कहा यह अच्छा प्रश्न है और लोगो में कई भ्रांतिया फैली हुई है। पहले यह जान ले कि मंत्र कई तरह के होते है जैसे वैदिक, तांत्रिक, साबर, इस्लामिक आदि। सब मंत्रो के नियमो में थोड़ा अंतर होता है। वैदिक मंत्रो में नियमो का बहुत ज्यादा पालन किया जाता है जैसे मुहूर्त, नक्षत्र दिशा, ऋषिन्यास, करन्यास, विनियोग आदि। साथ ही साथ इनका उच्चारण भी शुद्ध होना चाहिए। कुछ मंत्र तो इतने शक्तिशाली है कि उन्हें कीलित कर दिया गया है जिससे उसे हर कोई न इस्तेमाल कर सके जैसे गायत्री मंत्र, दुर्गा सप्तशती आदि इन्हे आप उत्कीलित किये बिना कितना भी जाप कर ले आप इन्हे सिद्ध नहीं कर सकते। संस्कृत के मंत्रो का उच्चारण एकदम शुद्ध करना आवश्यक है क्योकि उसमे जरा सा भी अंतर होने पर उसका अर्थ बदल जाता है। अन्य मंत्रो में ऐसा नहीं। एक समय ब्राह्मण दलितों, छोटे जाती के लोगों को इनसे वंचित कर दिया। नीची जाती के लोगों से संस्कृत पढ़ने का अधिकार छीन लिया गया

ब्राह्मण शुद्धता के नाम पर छुआछूत फैलाने लगे। मंत्र साधना भौतिक बाधाओं का आध्यात्मिक उपचार है इसलिए निम्न जाती के लोग भी मंत्र पाठ कर शक्ति प्राप्त करना चाहते थे। इन्ही बातों को देखकर भगवान् शंकर ने इन मंत्रो की सृष्टि की। तांत्रिक और औघड़ मंत्रो की रचना कर उन्होंने बतलाया कि गन्दगी में रहकर भी मंत्र सिद्ध किये जा सकते है। शाबर मंत्र स्थानीय भाषाओ में बनाये गए ताकि ग्रामीण लोग भी उसे समझ कर पाठ कर सके और उसकी सिद्धियों में ज्यादा नियमो को नहीं रखा गया। साबर मंत्र आम बोलचाल की भाषा के मंत्र है। हालांकि कई साबर मंत्रों में संस्कृत, हिंदी, मलयालम, कन्नड़, गुजराती या तमिल भाषाओं का मिश्रित रूप या फिर शुद्ध क्षेत्रीय भाषाओं की ग्राम्य शैली का समावेश भी दृष्टिगोचर होता है। और उनकी सिद्धि केवल गुरु को प्रसन्न करके भी की जा सकती है। शाबर मंत्रों के जनक शिव, गुरु मत्स्येंद्र नाथ और उनके शिष्य गुरु गोरखनाथ हैं। ये मंत्र शैवपंथ की नाथ परंपरा के अलावा आदिवासी, बंजारा, सपेरा, जादूगर और भारत की अन्य जनजातियों के मंत्र माने जाते हैं। यह भी कहा जाता है कि असल में इन शाबर मंत्रों में वज्रडाकिनी अथवा वज्रतारा आदि से भी निचली तामसिक देवों की प्रार्थना की जाती है, उनकी आन पर ही काम होता है। इसमें किसी भी प्रकार से तर्पन, न्यास, अनुष्ठान, हवन आदि कार्य नहीं किए जाते हैं।

शाबर मंत्रों में जिस प्रकार एक अबोध बालक अपने माता-पिता से गुस्से में आकर चाहे जो कुछ बोल देता है, हठ कर बैठता है बस उसी प्रकार से कोई भक्त अपने देवी या देवता से हठ करता है। कहते हैं कि ये देव व्यक्ति की भक्ति और उसका निष्कपट स्वभाव देखते हैं बस इसी से वे प्रसन्न हो जाते हैं।

क्या ईश्वर के मंत्रो में भी दीक्षा की कोई विशेष जरुरत नहीं? आपको हनुमान चालीसा पढ़ने के लिए दीक्षा लेने की जरुरत है? उसी तरह शब्दों के उच्चारण में गलती हो जाने पर भी कोई प्रभाव नहीं पड़ता आप राम को रामा और कृष्ण को कृष्णा पढ़कर जप करें आपको उतना ही फल मिलेगा।

उनसे मैं प्रश्न पूछता ही रहता था उसी क्रम में मुझे बहुत सी जानकारिया मिली। कभी आपने सोचा है कि मंदिरो के ऊपरी भाग को नुकीला क्यों बनाया जाता था? उन्हें दूसरा आकर भी तो दिया जा सकता था। वास्तव में उनकी बनावट का एक राज था। यहाँ भी ऊर्जा का विज्ञानं ही काम करता है। यह आकर उन्हें ब्रह्मांडीय ऊर्जा को एकत्रित करने में सहायक होता था। पर मैं कह दू तो आप विस्वास तो करेंगे नहीं इसलिए आइये इसे मैं आपको इसका आधार समझाता हूँ। कोई भी पतली नुकीली चीज ऊर्जा को इकट्ठा करने में सबसे ज्यादा कारगर होती है। आपने रेडियो को देखा ही होगा। जब वह रेडियो स्टेशन की आवाज साफ़ नहीं पकड़ता तो हम उसके एंटीना को खोलकर लम्बा और ऊंचा कर देते है। इतना करते ही वह अच्छी सिग्नल पकड़ने लगता है। उसके अंदर कोई उपकरण इस काम के लिए लगा नहीं रहता यह केवल उसकी बनावट का ही असर होता है। कहीं भी अगर हमें ऊर्जा को केंद्रित कर उसे तीब्र बनाना है तो यही आकर सबसर कारगर है। इसलिए मंदिरो के शिखर की ऊंचा और नुकीला बनाया जाता है। मंदिर क्यों बनाये जाते थे? वे ब्रह्मांडीय ऊर्जा को इकट्ठा करने के लिए बनाये गए थे ताकि ब्रह्मांडीय ऊर्जा को संगृहीत कर सके और जब कम ऊर्जा वाले दुखित लोग या नकारात्मक शक्तियों से प्रभावित लोग यहाँ आये तो ऊर्जावान हो जाए। अगर कोई इसके शिखर के नीचे बैठे तो उसे अधिक ऊर्जा मिले जिससे उसे ध्यान करने में आसानी हो। आपने गौर किया होगा की सब धर्म अलग अलग की प्रक्रिया उस शक्ति तक पहुंचने का रास्ता बतलाते है पर उनकी पूजागृहों का आकार मुलभुत रूप से एक ही होता है यानी उनके शिखर पतले लम्बे और नुकीले रखे जाते है चाहे आप मंदिरो को देख ले, या गिरजाघरों या मस्जिदों को देख ले। वे इस आकार को छोड़ नहीं सके क्योकि सभी तो ब्रह्मांडीय ऊर्जा पर काम करते है और उसको इक्कठा करने के लिए यह आकार जरुरी है।

आपने ध्यान के बारे में बहुत कुछ पढ़ा या सुना होगा आखिर ध्यान होता क्या है? चाहे आप किसी भी तरीके से ध्यान करे उसका एक ही मकसद होता है मन के विचारो पर नियंत्रण पाना और उसे शांत करना या कहे मन को अमन करना। लेकिन मन को शांत करने से मिलेगा क्या इससे क्या चीज की प्राप्ति होती है? यह आप जान ले की आपका दिमाग ऊर्जा का भंडार है पर यह ऊर्जा बिखरी हुई है सोचे अगर इसे आप एक जगह पर केंद्रित कर ले तो आप क्या नहीं कर सकते? ध्यान से इसी ऊर्जा को एक जगह केंद्रित कर उससे तरह तरह के काम लेते है।

आपने ध्यान के साधको के बारे में सुना होगा कि उनमे अलोकिक शक्ति आ जाती है वे जो सोचे उसे कर सकते है या दुसरो को प्रभावित कर सकते है। देखिए विचार भी एक ऊर्जा ही जिसे वश में करना बहुत ही मुश्किल है (आप पांच मिनट के लिए ऐसा करे की आपके मन में कोई विचार न आये आपसे यह संभव नहीं होगा) एक जगह केंद्रित कर लेने एक साधारण से दिखने वाली शक्ति भी कई गुना बढ़ जाती है। प्रकाश को आप रोज देखते है वह साधारण सी शक्ति लगती है पर जब उसे एक जगह केंद्रित कर लेज़र के रूप में बना दिया जाता है तो वह किसी चीज को जला सकती है वह धातु को भी काट सकती है और आज तो उसे अनेको तरह से उपयोग में लाया जाता है।

मेरी मंत्र सिद्धि

उन्होंने मुझे सबसे पहले रक्षा मंत्र दिया और कहा की इसकी साधना सबसे पहले जरुरी है जिससे मन्त्र पाठ करते समय कोई गलत चीज आपको परेशान न कर सके। मैंने भी सबसे पहले यही मंत्र सिद्ध किया था। उन्होंने बतलाया की रक्षा के आलावा इस मंत्र से कई काम लिए जा सकते है जैसे भूत प्रेत भगाना, ताबीज बनाना। उन्होंने बतलाया की पाठ शुरू करने के पहले इसे पढ़कर आदमी को चारो दिशाओ में फूक देना चाहिए इससे आदमी सुरक्षित हो जाता है। अगर किसी को भूत प्रेत लगा हो तो इसे पानी पर पढ़कर उसे पिला दो वह ठीक हो जायेगा, अगर किसी को सुरक्षा के लिए ताबीज देना हो तो इस मंत्र को कागज़ पर लिखकर उसके गले में पहना दो।

इसके बाद उन्होंने मुझे **आयतल कुर्सी मंत्र** दिया और बताया की यह कुरान का सबसे श्रेष्ठ मंत्र है। आयतुल कुर्सी को चैथाई कुरान कहा जाता है और कहा जाता है की जो इंसान आयतुल कुर्सी पढ़ता है, उसके लिए जन्नत के दरवाजे खोल दिए जाते हैं।

उन्होंने कहा कोई भी मंत्र पढ़ो उसका अर्थ जरूर जानो तभी उसका पूरा फायदा मिलेगा। हिन्दुओं के अधिकतर मन्त्र संस्कृत में होते है और लोग अक्सर उसका अर्थ जाने बिना उसका पाठ करते हैं उसी तरह अधिकतर मुसलमान कुरान का अर्थ नहीं जानते क्योकि वह अरबी में है

उर्दू में नहीं यह भी गलत है। उन्होंने मुझे आयतल कुर्सी हिंदी में लिखवाया और उसका अर्थ भी लिखकर समझाया जिसे मै नीचे लिख रहा हूँ।

बिसमिल्ला हिर रहमानिर रहीम

अल्लाहु ला इलाहा इल्लाहू अल हय्युल क़य्यूम लातअ'खुजुहू सिनतुव वला नौम लहू मा फिस सामावाति वमा फ़िल अर्ज़ मन ज़ल लज़ी यश फ़ऊ इन्दहू इल्ला बि इजनिह यअलमु मा बैना अयदी हिम वमा खल्फहुम वला युहीतूना बिशय इम मिन इल्मिही इल्ला बिमा शा.. अवसिअ कुरसिय्यु हुस समावति वल अर्ज़ वला यऊ दुहू हिफ्जुहुमा वहुवल अलिय्युल अज़ीम ।

इसका अर्थ है-------

अल्लाह के नाम पर शुरू कर रहा हूँ

अल्लाह जिसके सिवा कोई अमर नहीं वही हमेशा जिंदा और बाकी रहने वाला है न उसको ऊंघ आती है न नींद जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है सब उसी का है कौन है जो बगैर उसकी इजाज़त के उसकी सिफारिश कर सके वो उसे भी जनता है जो संसार के सामने है और उसे भी जो उन से ओझल है बन्दे उसके इल्म का ज़रा भी प्राप्त नहीं कर सकते सिवाए उन बातों के इल्म के जो खुद अल्लाह देना चाहे उसकी हुकूमत की कुर्सी ज़मीन और असमान को घेरे हुए है ज़मीनों आसमान की हिफाज़त उसपर कठिन नहीं वह बहुत बड़ा और पूज्य है।

उन्होंने कहा की देख लो यह इस्लाम का मंत्र है इसलिए अल्लाह की प्रशंसा की गयी है उसी तरह हिन्दुओ के मंत्र में हिन्दुओं के देवी देवताओ की प्रशंसा रहती है और मंत्रो में और होता क्या है? इसे पढ़ने से होने से फायदे के बारे में बतलाया गया है कि कुरआन में सबसे श्रेष्ठ आयत आयतल कुर्सी है।

जो आदमी हर फजर् (सुबह के नमाज़ के बाद आयतल कुर्सी पढ़ ले, उसे जन्नत में जाने से कोई चीज़ नहीं रोकेगी, सिवाए मौत के।

रात को बिस्तर में जा कर जो इसको पढ़ लेगा तो अल्लाह की तरफ और सुबह तक से सुरक्षा प्रदान की जाएगी और शैतान करीब भी न आ सकेगा

इसमे आज़म की बरकत से जो दुआ अल्लाह तआला से मांगी जाए वह कुबूल फरमाता है

आयतल कुर्सी को चौथाई कुरान कहा गया है।

इसके बाद उन्होंने मुझे कुछ और मंत्र सिद्ध करवाया ।

मैंने उनसे पूछा की यह कैसे पता लगाया जाता है कि कोई शैतान से ग्रस्त है या उसे कोई रोग है ?

उन्होंने कहा इसके लिए कुछ तांत्रिक लोग परीक्षा किये जाने वाले इंसान के सामने तीन फूल रखते है और गुरु का नाम लेकर वे एक फूल को शैतान, दूसरे को रोग और तीसरे के लिए स्वथ्य व्यक्ति के लिए निर्धारित करके उनपर फूक मार देते है। अब वह परीक्षा किये जाने वाले व्यक्ति से कहता है की इनमे से कोई एक फूल उठाओ। वह जिस फूल को उठता है उसी के अनुसार तांत्रिक यह कह देता है की इन्हे रोग है या शैतान का शिकार है या यह स्वथ्य व्यक्ति है।

पर यह विधि मुझे सही नहीं लगी ऐसा लगा की तांत्रिक अटकले लगा रहा है। तब मैंने पुरानी किताबो को पलटना शुरू किया और मुझे एक ऐसा नक्स मिला जो मुझे ठीक लगा। मैंने उसे सिद्ध किया और आज तक मैंने उसे सभी जगह पर कामयाब पाया है।

हिन्दुओ में यंत्रो का उपयोग होता है जैसे महाकाली यंत्र, वशीकरण यन्त्र, श्री यन्त्र, बीसा यंत्र आदि। उसी प्रकार इस्लाम में भी यंत्रो का उपयोग होता है और उसे इस्लाम में नक्स के नाम से जाना जाता है।

उसके बाद उन्होंने मुझे यन्त्र बनाना सिखाया और उसे सिद्ध करवाया। नक्सो की सिद्धि के लिए उसे रोज एक निश्चित संख्या में कागज़ पर लिखा जाता है। अंतिम दिन उन सभी कागजों को इकठ्ठा करके उसके छोटे छोटे टुकड़े कर दिए जाते हैं। अब आटे की छोटी-छोटी गोलियाँ बनाई जाती है और हर गोली में नक्स के कागज़ के टुकड़े रख दिए जाते हैं। इसके बाद इन्हे ले जाकर किसी नदी में मछलियों को खिला दिया जाता है। मैंने वह नक्स सिद्ध किया और पूछा इस नक्स को कैसे उपयोग में लाया जाता है।

उन्होंने बतलाया कोई भी व्यक्ति आसेब ग्रस्त है या नहीं इसकी परीक्षा करने के लिया उसे सामने बैठाया जाता और एक अगरबत्ती जला कर उसके दोने हाथो में एक-एक नक्स पकड़ा कर उसे मुट्ठी बंद कर आँखों को बंद कर लेने को कहा जाता है। अगर वह व्यक्ति ठीक है तो उसे कुछ नहीं महसूस होता है न दिखता है। परन्तु अगर वह आसेब ग्रस्त है तो उसके दोनों या एक मुट्ठी गर्म होने लगती है और कभी-कभी किसी को ऐसा लगता है की वह नक्स मुट्ठी के अंदर फड़फड़ा रहा है और मुट्ठी खोलकर उड़ जायेगी। अगर ऐसा होता है तो समझ जाईये वह वयक्ति आसेब ग्रस्त है। इस नक्स उस वयक्ति को तीसरी आँख भी प्रदान करता है इसलिए अगर वह व्यक्ति संवेदनशील है तो उसे किसने उसपर जादू टोना किया है, कहाँ किया है और उसको तंग करने वाला शैतान भी उसे दिख जाता है पर सबको दिखाई नहीं पड़ता इसके लिए उस आदमी का संवेदनशील होना जरुरी है। फिर आसेब का पता लग जाने पर आप उसे जला सकते हैं या गिरफ्तार कर सकते हैं।

मुझे यह विस्वास नहीं आया की ऐसा हो सकता है तो मैंने उनसे पूछा आपने ऐसा होते देखा है तो उन्होंने कहा सैकड़ो बार मैंने यह प्रयोग किया है बल्कि हर रोगी पर पता लगाने के मुझे इस नक्स का इस्तेमाल करना ही पड़ता है। आप भी यह करामात स्वयं देखेंगे। हाँ एक बात ध्यान

रखें कोई कोई शैतान बहुत शातिर होते हैं और यह प्रयोग करते समय मरीज के बदन को छोड़कर भाग जाते हैं और आपको लगता है यह व्यक्ति ठीक है।

पर यदि उस वयक्ति के ब्यवहार से अगर हमें शक हो जाता है तो दूसरी विधियाँ अपनानी पड़ती है।

यह बात कहने के बाद उन्होंने कहा की जब मरीज को जांचने की ही बात चली है तो मुझे एक आसान विधि याद आ गयी। इस विधि का उपयोग घरो में खास तौर पर स्त्रियाँ उपयोग में लाती है। सबसे बड़ी बात इसमें कोई खतरा नहीं और अगर छोटा नजर दोष हो तो वह भी उतर जाता है। इसके लिए ७ तीखी सूखी लाल मिर्चे ली जाती है। अब इन मिर्चों को उस व्यक्ति के ऊपर नीचे चारो तरफ ७ बार घुमाया जाता है इसे निहुचना भी कहा जाता है। इसके बाद इन मिर्चियों को एक कागज़ में लपेटकर जला दिया जाता है। अगर व्यक्ति को कोई टोना या नजर दोष है तो जलाने के समय मिर्च महकती ही नहीं पर अगर रोग नहीं है तो मिर्च बहुत महकती है। यह प्रयोग आप भी कर करके इसकी सत्यता की परीक्षा कर सकते हैं।

जादू टोने को अंधविस्वास कहने वालो का तर्क होता है की अगर आप तेज आंच में मिर्चे जलायेगे तो आपको कोई महक नहीं आएगी पर अगर कोई उसी मिर्चों को धीमी आंच पर जलाएगा तो वे बहुत महकेगी। पर मै उनसे कहना चाहता हूँ कि अगर किस पर जादू टोना किया गया है तो उन मिर्चों को आप धीमी आंच में भी जलाये वे नहीं महकेगी और जिनका कहना है की तेज आंच पर मिर्चे नहीं महकती तो मै उनसे कहूँगा कि मिर्चों को आप गैस पर जलाकर उस कमरे में रहकर तो दिखाए, वे वहाँ खड़े नहीं रह सकेंगे।

मैंने उनसे पूछा की कि सीखने के बाद ये मुझे दिखाई नहीं पड़ते क्या मुझमे कोई कमी है?

बिलकुल नहीं ये मुझे भी नहीं दिखते मुझे भी मीडियम का सहारा लेना पड़ता है। वास्तव में कुछ लोगों की आत्म शक्ति इतनी मजबूत होती है की शैतान उसके आत्मा को अपने अधिकार में नहीं ले सकते इसलिए ये उसे नहीं दिखते।

इसके बाद मैंने पूछा की मैंने जान लिया की इस व्यक्ति पर भूत है अब मै उसे हटाऊंगा या जलाऊंगा कैसे ?

उन्होंने बतलाया की इसके लिए पलीता बनाया जाता है और उसे दिए में जलाया जाता है तो पलीते के मुवक्किल उसे पकड़ कर लाते है और जला डालते है। तब उन्होंने मुझे पलीता बनाने और सिद्ध करने की विधि बतलाई और मैंने उसे सिद्ध किया।

उन्होंने तब कहा की तुम काम लायक सभी चीजे सीख गए हो। तो मैंने पूछा मुझे तो कुछ महसूस नहीं होता तो वे हँसने लगे उन्होंने मुझसे पूछा जब तुमने स्नातक की परीक्षा पास कर ली तो क्या तुम्हे कुछ महसूस हुआ था ? जब तुम इनका इस्तेमाल करोगे तब इनकी शक्ति का तुम्हे अंदाज होगा।

तुम बार बार कहते हो अपना कोई अनुभव सुनाइये। इतने लोगों को मैं ठीक कर चूका हूँ कि याद ही नहीं रहता पर एकाएक एक घटना मुझे याद आ गयी। मैं वह तुम्हे सुना देता हूँ।

ठंढ का मौसम था और मै अपने घर पर बैठा हुआ था। तभी एक आदमी मेरे पास पहुँचा और कहने लगा कि आपको बुलाने ने मुझे भेजा है। वह एक प्रतिष्ठित मुस्लिम के लिए परिवार के मालिक का नाम ले रहा था।

मैंने पूछा आखिर क्या बात है ? तो उसने बताया की उनकी लड़की पर शायद किसी आसेब का साया है और वह ऊलजलूल बातें बोल रही है, सर हिलाकर झूम रही है और इधर उधर भागने की कोशिश कर रही है। मैं समझ गया इस लड़की के ऊपर कोई सवार है। मैंने उससे पूछा वे तो मुझे जानते भी नहीं, और भी बहुत से नामी ओझा हैं उनको उन्होंने क्यों नहीं बुलाया। तो उसने कहा पहले से ही कई ओझाओं, औलियो और मौलवियों को बुलाया जा चुका है पर सभी थक कर बैठ गए हैं तब एक व्यक्ति ने आपका नाम सुझाया है इसीलिए मुझे आपको बुलाने के लिए भेजा गया है। यह सुनकर मैं सोच में पड़ गया और अंदर से थोड़ा डर भी गया की जब

इतने ओझा हार गए तो इसका मतलब है यह साया बहुत मजबूत है, कही यह मुझे भी न पटक दे। उस समय मै जवान था तुम्हें जितना सिखाया है उससे कही अधिक जानता था पर मुझमे अनुभव की कमी थी। फिर मैंने सोचा कि ज्यादा से जयादा मैं सफल नहीं होऊंगा पर जब इतने सारे मौलवी हार मान चुके हैं तो अंतर क्या पड़ता है और एक नया अनुभव होगा। लड़की के व्यवहार से मुझे पता लग गया था की कोई शैतान उसपर सवार था, इसलिए उसे परीक्षा करने की भी जरुरत नहीं है। मैंने मन में यह सोच लिया की मुझे क्या करना है। मैंने कुछ पलीते बनाये और अपने पास रख लिए और उस आदमी के साथ रिक्से पर चल दिया। मैं रास्ते भर सुरक्षा मंत्र का जाप करता रहा और वहाँ पहुँच कर अपने ऊपर और अपने हथेलियों पर दम कर लिया।

उस जगह पर मजमा सा लगा था। लड़की आँगन में बैठकर झूम रही थी और हंगामा कर रही थी। चारो तरफ आस पास के लोग, मौलवी बैठे हुए थे। मुझे देखकर सब आपस में बात कर रहे थे की जब इतने अनुभव वाले मौलवी हार मान गए तो इस बच्चे को बुलाया गया है। मैं रिक्से से उतरा और पहले से सोचे अनुसार लड़की को एक तमाचा जड़ दिया और कहा एकदम शांत हो जाओ। मैंने तलहथियों को तो पहले से ही मंत्र से दम कर रखा था। मेरे ऐसा करते ही वह लड़की शांत हो गयी। मै मरीजों को पीटने के खिलाफ हूँ पर वहां उसे शांत करने के लिए यह करना जरुरी था। फिर मैंने औरतो से कहा बिना डरे इसे दोनों तरफ से जकड कर रखे। इसके बाद मैंने सरसो तेल से भरा एक दिया मँगवाया। मैंने उन औरतों से उस लड़की का एक बाल तोड़कर देने को कहा। मैंने उस बाल को एक पलीते के अंदर रखा फिर उसे दिए में रखकर उस लड़की के सामने जला दिया। इसके बाद मै आराम से बैठ गया और इंतज़ार करने लगा।

मुझे चुपचाप बैठे देखकर कई लोग फुसफुसाने लगे यह तो कुछ कर ही नहीं रहा पर मैं इत्मीनान से बैठा रहा। लगभग १५ मिनट बाद लड़की बेहोश होकर गिर गई। मुझे पता चल गया की शैतान इसे छोड़ कर जा चूका है। मैंने तब अभिमंत्रित जल उसके चहरे पर छिड़का। लड़की होश में आ गयी। अब वह सामान्य लड़कियों की तरह शांत थी और पूछ रही थी की यहाँ इतनी भीड़ क्यों लगी है। मैंने उसको चाय, कॉफी या होर्लिक्स पिलाने को कहा। मेरा काम ख़त्म हो गया था पर मैंने कहा यहाँ

जितने लोग है अपना नाम पता लिखकर मुझे दे जिससे मै उनको सुरक्षित कर दूँ क्योंकि शैतान बहुत बदमाश है और उनपर भी आक्रमण कर सकता है। लोगों ने तुरंत मेरी बात को मानकर यह किया और कागज़ मुझे पकड़ा दिया। फिर मै वहाँ से लौट आया। कहने की बात नहीं इस घटना से मेरी बहुत प्रसिद्धि बढ़ी और मझे अच्छा इनाम भी दिया गया। आप शायद यह सोच रहे होंगे की उन नामो का मैंने क्या किया तो जान ले उसे मैंने लौटते समय ही फाड़कर फेक दिया वह तो केवल उन्हें थोड़ा डराकर सबक देने के लिए किया था।

मेरे शुरुआती दिनों के कुछ अनुभव

मेरी सिद्धि तो पूरी हो चुकी थी अब मुझे इसे किसी रोगी पर उसे इस्तेमाल करके देखना था। पर इसके लिए मुझे कोई रोगी मिलता तब तो मै उसपर प्रयोग करता। मै इस पेशे में था नहीं न ही इस लाइन के ज्यादा लोगों से मेरी जान पहचान थी। मै इसके लिए विज्ञापन भी नहीं दे सकता था क्योकि ये सब करना समाज में गलत समझा जाता है, मेरे अपने जान पहचान वाले लोग और रिस्तेदार ही मुझे टोकने लगते इसलिए मैंने इसके विशेष प्रयत्न भी नहीं किया।

एक दिन मैंने ऑफिस में गौर किया की मेरा एक स्टाफ बहुत उदास दिख रहा है तो मैंने उससे पूछा क्या बात है? उसने कहा उसकी बीबी की तबियत बहुत ख़राब है इसलिए वह परेशांन है। मैंने कहा किसी अच्छे डॉक्टर से दिखाओ और इसमें मेरे किसी सहयोग की जरुरत हो तो बोलो। वह बोला एक वर्ष से उसकी तबियत खराब है और शहर के सभी नामी डॉक्टर्स से वह परामर्श ले चुका है। तब मुझे भी उत्सुकता हुई मैंने पूछा आखिर उसे हुआ क्या है? तो उसने कहा यही तो डॉक्टर्स भी पता नहीं लगा पा रहे। मैंने पूछा उसे तकलीफ क्या है? तो उसने कहा

कि उसके पुरे शरीर में दर्द होता है और लगता है की कोई पूरे शरीर में सुई चुभो रहा है, टेस्ट में उसकी यूरिक एसिड और अन्य चीजे भी ठीक निकली है इसलिए हर डॉक्टर अंदाज से दवा दे रहा है पर फिर भी उसे कोई आराम नहीं। उसकी दुनियाँ बिछावन में सिमट कर रह गयी है। बच्चे और मै मिलकर खाना बनाते है और हर समय एक आदमी उसकी देखभाल के लिए चाहिए।

मैंने उससे कहा मुझे उनके पास ले चलो शायद तुम्हारी कुछ मदद कर सकूँ। उसने मुझे कहा चलिए। शाम को मैं उसके घर पहुंचा। मैंने देखा उसकी पत्नी बिछावन पर लेटी है। मैंने उनसे पूछा भाभीजी आपको क्या तकलीफ है? तो उसने कहा पुरे शरीर में दर्द है और लगता है पुरे शरीर में कोई सुईया चुभा रहा है। मेरे सहयोगी ने अपनी बेटी से चाय लाने को कहा पर मैंने मना कर दिया की बेटी को परेशान नहीं करो। तब मैंने उन्हें उठाकर बैठवाया। मैंने यह जांचने के लिए की इसे कोई ऊपरी बाधा तो नहीं दो नक्स बनाये और उसकी पत्नी से कहा की इसे अपने दोनों हाथो में रखकर मुट्ठी बंद कर ले और हाथो में कुछ गर्म ठंढा महसूस हो तो बतलाये। थोड़ी देर में वह बोली बाई मुट्ठी में गर्मी महसूस हो रही है। मैंने कहा और कुछ तो उसने कहा कि ऐसा लग रहा है की आपका दिया कागज़ मुट्ठी खोलकर भाग जायेगा। यह सब सुनकर मै अस्वस्त हो गया की इसपर जरूर कोई ऊपरी बाधा है। मैंने उनसे कहा आप अपनी आखे बंद कर ले और कहे मुझे यह दिखलाये की किसने मुझपर ऐसा जादू कर दिया है। कुछ देर बाद वह बोली एक औरत एक मैदान में खड़ी है। मैंने पूछा उसकी साड़ी का रंग क्या है तो उसने बतलाया की वह लाल रंग की साड़ी पहनी है। फिर मैंने उससे पूछा क्या इस मैदान को और इस औरत को तुमने कही देखा है? कुछ देर तक वह चुप रही उसके बाद आश्चर्य से बोली यह तो धोबिन है और हमारे घर के सामने के ही मैदान में खड़ी है।

मैंने उससे कहा इसी औरत ने तुमपर टोना का प्रयोग किया है। इसके बाद मैंने उससे कहा अब कहो की इसने कैसे मुझपर यह प्रयोग किया यह दिखलाइये। उसने वैसा ही कहा और कुछ देर के बाद उसने कहा एक झोपड़ी है जिसमे दिया जल रहा है और नीचे पूजा का सामान रखा है वह औरत और एक काळा कपडे पहने हुए आदमी के साथ खड़ी है। मैंने अपने सहयोगी से कहा इस औरत जगह पर इस काले रंग के कपडे पहने हुए आदमी की मदद से यह काम

किया है। मैंने तब उससे कहा की कहिये मुझे उस शैतान को दिखाइये जो मुझे परेशान कर रहा है। उसने ऐसा ही किया और कुछ देर बाद बोली एक छोटा काले रंग का बच्चा दिख रहा है। तब मैंने अपने सहयोगी कहा इसी बच्चे को मंत्र बाँध कर आपकी पत्नी को परेशान करने के लिए भेजा गया है। इसके बाद मैंने कहा भाभी जी अपने आँखे खोल दे और उसकी हाँथो से दोनों नक्स हटा दिए।

मैंने उनसे कहा अब तो आप समझ ही गई होगी की किसलिए आप बीमार है और कौन आपको परेशान कर रहा है। क्या आपको इस औरत से कभी लड़ाई हुई थी तो उन्होंने कहा की मेरे गेट के अंदर एक फूल का पेड़ है और ये उस पेड़ से सवेरे अँधेरे में ही सब फूल तोड़ कर ले जाती थी तो मै एक दिन सवेरे ही जगी और इसे रंगे हांथो पकड़ा और डाटा था। मैंने कहा यह उसी का बदला आप से ले रही है। पूरा परिवार यह सब देखकर हैरान था। अब मैंने सोचा इस बाधा को ख़त्म करना जरुरी है इसलिए एक कागज़ मॅगवाकर उसपर मैने पलीता बनाने के नक्स को बनाया। मैंने एक बड़ा दिया सरसो का तेल भरकर मँगवाया और उस पलीते को एक कपडे में रखकर उससे दिए की बत्ती बनाई। मैने अपने सहयोगी से कहा भाभीजी का एक बाल लाये और उस बाल को मैंने उस बत्ती के अंदर रख दिया और अपने सहयोगी से कहा इस पलीते को अपनी पत्नी के चारो ओर सात बार घुमा कर लाइये। उसके ऐसा कर लेने के बाद मैंने कहा इस पलीते को इस दिए की बत्ती बना कर जला दे और भाभीजी के सामने रख दे। दिया जल जाने के बाद मैंने भाभीजी को उस दिए की बत्ती को देखने को कहा।

५ मिनट बाद वह बोली मुझे कुछ नहीं दिख रहा तो मैंने उनसे कहा आंखे बंद कर ले और बंद आँखों से फिर से दिये को देखे। कुछ देर बाद वह बोली वह काला बच्चा इस दिए में जल रहा है। जिस समय वह जल रहा था भाभी जी बोली मेरी जलन और दर्द बहुत बढ़ गयी है मैंने उन्हें कहा घबराइए नहीं यह जलन और दर्द धीरे धीरे कम हो जाएगा। कुछ देर बाद वह बोली हाँ अब मेरा दर्द और जलन कम हो रहा है। मैंने उनकी आँखे खुलवा दी और पलीते को वैसे ही जलने दिया और मै अपने सहयोगी से बात करने लगा। करीब ४५ मिनट बाद मैंने पूछा जलन और दर्द कैसा है? उनहोने थोड़ी बाद आश्चर्य से कहा दर्द और जलन तो बिलकुल ही ख़त्म हो गयी है। मैंने उनसे कहा तब आप बिछावन पर क्यों बैठी हैं उठकर मेरे लिए चाय बनाकर

लाइये आज मै आपके हाथो से ही चाय पियूँगा। वे थोड़ी डरते-डरते उठी और जब उन्होंने देखा की वे बिलकुल ठीक हैं तो रसोई घर में जाकर खुद अपने हाथों से मेरे लिए चाय बनाकर लाई। उसका पूरा परिवार यह करिश्मा देखकर चकित था।

इस सफलता से मै बहुत ही खुश और उत्साहित था। दूसरे ही दिन मै मिठाई लेकर अपने गुरु के पास पहुँचा और उन्हें अपने केस के बारे में बतलाया। इस पर वे भी बहुत खुश हुए और कहा अब तुम्हे मंत्र और नक्स की शक्ति पर विस्वास हो गया न? उस दिन तुम कह रहे थे मुझे लग ही नहीं रहा की मै आमिल हो गया हूँ आज तुम्हे विश्वास हो गया न। वैसे मै तुम्हे बतला दू की तुम बहुत भाग्यवान थे की तुम्हे पहली बार में ही एक ऐसा मरीज मिला जिसमे देखने की योग्यता थी इसलिए तुम्हे सब चीजों का अनुभव हो गया।

लोग अक्सर ऐसा सोचते हैं कि कोई बिमारी अगर शैतानी हरकत है तो मरीज को डर लगता होगा या डरावने सपने दिखते होंगे, उसकी मानसिक अवस्था भी ठीक नहीं होगी पर तुम्हे भी अनुभव हो गया कि ऐसा नहीं होता। मेरे तो अनुभव है की ४०% जिस्मानी रोग भी शैतानी हरकत होते है।

ऐसे रोगो को आसानी से पहचाना भी जा सकता है। अगर किसी रोगी को टेस्ट में सब ठीक निकलता है फिर भी उसे तकलीफ रहती है, दवाये फायदा नहीं करती, छोटी सी बिमारी ठीक होने में जरुरत से ज्यादा समय ले रही होती है तो आदमी का शक तुरंत इस दिशा में जाना चाहिए अब जाओ लोगों की सेवा करो।

इसके बाद मैंने कई और रोगियों को ठीक किया पर बार-बार एक ही चीज के बारे में बार बार लिखना आपको बोर कर देगा।

हां दो मरीजों का मै और बर्णन यहाँ कर रहा हूँ। मुझे चिकित्सा शास्त्रों का भी ज्ञान है इसलिए मै कभी-कभी अपने दोस्त के होम्योपैथिक डिस्पेंसरी में जाकर बैठता हूँ। एक दिन मै बैठा हुआ था उसी समय एक जवान लड़की पिता के साथ आई।

उसके पिता वही बगल में काम करते थे और मेरे दोस्त के अच्छे दोस्त थे। उनके दूकान में कुछ काम आया हुआ था इसलिए वे मेरे दोस्त को उसे देख लेने को कहकर चले गए। थोड़ी देर बाद मेरा दोस्त मुझसे बोला की इस लड़की का मर्ज मुझे कोई रोग नहीं लगता मै सब तरह की दवाये देकर थक गया हूँ पर फायदा नहीं हो रहा। इसलिए आज आप हैं तो इसकी परीक्षा करके बतलाइये की यह कोई शैतानी करिश्मा तो नही? मैंने पूछा इसे क्या तकलीफ है तो उसने बतलाया की इसे घुटने में दर्द है इसके कारण यह चल भी नहीं सकती। मैंने कहा यह तो रोग ही लग रहा है तो भी वह उसे चेक करने की जिद करने लगा तो हम दोनों उसे लेकर पीछे बने एक कमरे में आ गए जिसमे मरीजों की जांच की जाती है। मैंने जांच करने के लिए दो नक्स बनाये और देने के पहले उसे बोला कि अगर तुम्हे अपने मुट्ठी में गर्म या ठंडा लगे या यह ताबीज हिलता डुलता लगे तो मुझे बतलाना।

लड़की एक कुर्सी पर बैठी थी। मैंने उसके हाथो में नक्स देकर उसे मुट्ठी बंद कर लेने को कहा और इंतज़ार करने के लिए बैठ गया पर हम तो हैरान हो गए वह नक्स उसके हाथ में देते ही वह बेहोश हो गयी। गनीमत थी की वह कुर्सी से गिरी नहीं। हमलोग घबड़ा गए क्योकि वह लड़की थी और उस समय उसके परिवार को कोई सदस्य वहाँ नहीं था। मैंने तुरंत उसकी मुट्ठी से नक्स निकला और उसके चेहरे पर पानी के छींटे मारे। गनीमत थी कि उसे तुरंत होश आ गया और हमलोगो ने चैन की सांस ली। मैंने कहा इसके पिता को बुलवा लो। उसके पिता बगल में ही थे वे तुरंत आ गए। हमलोगों ने उन्हें सारी घटना बताई और कहा की यह काम अब हम आपके सामने करना चाहते है तो वे तैयार हो गए।

मैंने उनके पिता को भी बगल में बैठाया और कहा की ये दोनों कागज़ अपने दोनों हाथो में रख ले और आखे बंद कर ले और कोइ अनुभव हो तो बतलाये, उन्होंने ऐसा ही किया और मै १० मिनट तक इंतज़ार करता रहा पर उन्हें कुछ भी अनुभव नहीं हुआ तो मैंने उन्हें आखे खोल लेने को कहा। उसके बाद मैंने उनसे कहा की आप अपने नक्स को अपनी बेटी के हाथो में दे दे और उसे आँखे बंद कर लेने को कहे। मैंने जानबूझकर उसी नक्स को उन्ही की हाथो से उनकी लड़की की हाथो में दिलवाया था। और इस बार भी वही हुआ लड़की के हाथो में नक्स देते ही

वह बेहोश हो गयी। हमलोगो ने उसे होश में लाया। मै समझ गया की यह शैतान २४ सो घंटे इसकी बदन पर रहता है और जब मै नक्स इसकी हाथों में देता हूँ तो वह भाग जाता है चुकि लड़की उसके कब्जे में है इसलिए उसके हटते ही लड़की को झटका लगता है और वह बेहोश हो जाती है। मैंने उनको ७ पत्नीता देकर उसे जलाने की बिधि बतलाई और उन्हें सात दिन बाद आने को कहा। मै ७ दिनों बाद क्लिनिक पर उनसे मिलने पंहुचा पर वे नहीं आये और बाद में भी उन्होंने मुझसे भेट करने की कोशिश नहीं की। मुझे भी एक सबक मिल गया की मुफ्त में तो किसी को सलाह भी नहीं देने को कहा गया है, उसका कोई मोल नहीं होता इसलिए उसने भी मेरे कामों का कोई मूल्य नहीं समझा।

इसी तरह छठ पूजा के दूसरे दिन एक दिन दोपहर को घूम रहा था तो मुझे मेरा एक दोस्त मिला। वह बहुत उदास लग रहा था मैंने पूछा क्यों इतने उदास हो तो उसने कहा आज ठीक से खाने को भी नहीं मिला आप तो जानते हैं आज के दिन कोई दूकान भी नहीं खुलती। मैंने कहा क्यों तुम्हारे घर में तुम्हारी पत्नी खाना नहीं बनाती ? तो उसने कहा वह तो ९ सालो से बीमार है खाना कैसे बनाएगी? मैंने पहले उसे अपने घर लेजाकर खाना खिलाया और पूछा कि तुम्हारी पत्नी को क्या हुआ तो उसने बताया उसे किसी ने एक बार कहा कि ध्यान लगाया करो तो एक दिन वह एक कैलेंडर पर छपे श्री यन्त्र पर ध्यान लगाने लगी पर उसके बाद उसे अपना कोई होश ही नहीं रहा। उसे कभी भगवान् दिखाई देते है वह उनसे बात करती रहती है अब वह अपना कुछ काम भी ठीक से नहीं कर पाती बस सोइ रहती है। डॉक्टर्स से दिखाया उन्होंने दवाएँ, दी पर उससे कोई फायदा नहीं। अब भी उसे भगवान् दिखाई देते हैं और वह उनसे बात भी करती है। मै समझ गया वह सिजोफ्रेनिया बीमारी से ग्रस्त है।

सिजोफ्रेनिया (शिजोफ्रेनिया) एक गंभीर मानसिक

बीमारी है। सिजोफ्रेनिया के मरीज को ज्यादातर भ्रम और डरावने साए दिखने की शिकायत होती है। सिजोफ्रेनिया के मरीज को दिखाई देने वाले मायावी दृश्य और भ्रम इतने असली होते हैं कि उसे यकीन ही नहीं होता है कि वह बीमार हैं। सिजोफ्रेनिया को मानसिक रोगों में सबसे खतरनाक समस्या माना जाता है।

सिजोफ्रेनिया के ज्यादातर मरीज दूसरों पर निर्भर हो जाते हैं क्योंकि वह अपनी देखभाल भी नहीं कर पाते हैं। वे इस बात को मानने के लिए भी तैयार नहीं होते हैं कि उन्हें कोई समस्या है। सिजोफ्रेनिया के मरीज को अजीब सी आवाजें सुनाई देती हैं। उन्हें ऐसी चीजें दिखाई और महसूस होती हैं जो असल में होती ही नहीं हैं। इसके अलावा कई मामलों में उन्हें ऐसी चीजों का स्वाद और खुशबू महसूस होने की शिकायत होती है जो वहां होती ही नहीं हैं।

मै उसके घर गया उसकी दवाइयाँ देखी और उन्हें कम कर दिया क्योकि मुझे अनुभव था की ऐसी स्थिति में डॉक्टर्स रोगी को नीद की गोली का अधिक डोज दे देते है जिसके कारण वह हरदम सोइ रहती है। टेस्ट करने पर मुझे शैतानी साया होने के कोई लक्षण नहीं मिले। तब मैंने उसे १५ मिनट तक प्राणिक हीलिंग दी। उससे भेट मुझे फिर तीन दिनों बाद हुई तो उसने बतलाया उसने आज नास्ता भी बनाया है। पर वह अब भी देवी देवताओ से बात करती है। मुझे एक हीलिंग से इतना लाभ होगा इसका अंदाजा नहीं था। मैंने उससे कहा की मै रोज आकर हीलिंग तो नहीं दे सकता तुम आकर कुछ दिनों तक उनकी हीलिंग करवा लो। उसने कहा आजकल मेरा काम बहुत बढ़ गया है इसलिए समय निकालता हूँ पर वह आया नहीं और बहुत दिनों तक उससे भेट भी नहीं हुई।

बूढ़े बाबा और विकलांग लड़का

मैं जब अपने गुरु से मिला था तो मेरा पहला प्रश्न यही था की क्या ईश्वर सचमुच में होते हैं तो उन्होंने जबाब दिया था की ईश्वर बहुत बड़ी शक्ति है जिसे जान पाना बहुत ही मुश्किल है। बहुतों की तो सारी जिंदगी साधना में गुजर जाती है पर उन्हें भी कुछ अनुभव नहीं हो पाता। पर ईश्वर की शक्ति का अनुभव करने का एक उपाय है। भूत, प्रेत, शैतान सभी उनके सामने बहुत ही छोटी शक्ति हैं। अगर किसी ब्यक्ति पर इनका साया हो और तुम ईश्वर के मंत्रो से इन्हे भगा देते हो तो तुम्हें प्रत्यक्ष न सही परोक्ष रूप से ही यह विश्वास हो जाएगा की ईश्वर हैं हैं तभी तो उनके मंत्रो से ये नकरत्मक्त शक्तियां भाग जाती हैं। इसी बात की सत्यता के जांच के लिए मैंने खुद मंत्रो की सिद्धि की और पाया की उनकी बात बिलकुल सही है।

पर मेरे तो बहुत से ऐसे प्रश्न थे जिनका उत्तर देने वाला कोई नहीं था जैसे मान लिया निराकार ब्रह्म हैं पर हिन्दुओं में जो ब्रह्मा, विष्णु, महेश का जिक्र है वे हैं की नहीं? सुना जाता है की बहुत से संत ऐसे हैं जो आज इस दुनिया नहीं हैं, पर याद करने पर वे प्रकट हो जाते हैं जैसे महावतार बाबाजी, इसमें कितना सत्य है? मै अब आपको अपने जीवन की एक ऐसी घटना को बतलाने जा रहा हूँ जो पारलौकिक दुनियाँ के कुछ रहस्यों को उजागर करेगी ।

मेरा एक दोस्त है, उसके लड़के को बचपन में ही पोलियो हो गया और देर से इस रोग की पहचान होने के कारण वह ठीक नहीं हो पाया। जिस समय की यह घटना आपको मै बतला रहा उस समय लड़के की उम्र लगभग १६ साल की होगी। लड़के के दोनों पंजे अंदर की ओर मुड़े थे। उसके घुटनों में कोई ताकत नहीं थी और उसके कमर की हड्डी भी कमजोर थी इसलिए वह खड़ा और बैठ नहीं सकता था। हां उसे बात करने और खाने पीने में कोई परेशानी नहीं थी। वह व्हील चेयर पर ही कहीं जा सकता था। कहने की जरुरत नहीं उसकी देखभाल करने के लिए हर समय एक आदमी की जरुरत थी। मेरे दोस्त की पत्नी एक स्कूल में टीचर थी और मेरा दोस्त हर समय अपने बच्चे की तीमारदारी में लगा रहता था। जहाँ भी मेरे दोस्त को रोग ठीक होने की थोड़ी भी आशा दिखाई पड़ती वहाँ वह दौड़ जाता था। दिल्ली में उसका घर था। एक बार उसे पता लगा कि दिल्ली के बगल में एक गाँव है जहाँ एक आदमी खास तौर पर इसी रोग की चिकित्सा हर ग्रहण के दिन किया करता था। उसके मन में एक आशा जगी कि कहीं उसका लड़का ठीक हो जाए इसलिए वह ग्रहण के एक दिन पहले अपने बेटे को लेकर वहाँ पहुँच गया।

वहां जाने पर उसे पता लगा कि उस आदमी में अपनी कोई शक्ति नहीं। उसके खानदान में बरसों से एक बाबा को जगह देकर रखा गया है और वही सभी रोगियों को उस आदमी के माध्यम से ठीक करते हैं। शाम को उनकी गद्दी लगती है तब वे उसके शरीर पर आते हैं और सभी की समस्याओं का हल उस आदमी के माध्यम से बतलाते हैं।

उसे यह भी पता लगा की बाबा भूतग्रस्त रोगियों को भी ठीक करते हैं। शाम को वह व्यक्ति एक पलंग पर लेट गया। उसकी पत्नी ने ५ अगरबत्तियां लगा दी। सभी लोग उसको घेरकर बैठ गए। कुछ ही देर में वह व्यक्ति काँपने लगा और उसके ऊपर बाबा आ गए। सबो ने उनको प्रणाम किया। वे एक-एक करके सबके समस्याओं का हल बतलाते रहे। अपनी बारी आने पर मेरे दोस्त ने अपनी समस्या उनके सामने रखी। उन्होंने कहा इसके लिए तुम्हे ३ साल पुराना गोबर का खाद लेना पड़ेगा। ग्रहण के दिन मैदान में इस लड़के के गर्दन की उचाई का एक गड्ढा खोदना पड़ेगा। जब ग्रहण लगेगा उस समय लड़के को उस उस गड्ढे में खड़ा करना पड़ेगा और उसके चारो तरफ गर्दन तक गोबर की खाद से भर देना पड़ेगा, जिसके बाद उसको इसी हालत में जब तक ग्रहण चलेगा उस गड्ढे में रहना पड़ेगा।

ग्रहण के समय ऐसा ही किया गया। दूसरे दिन सबेरे मेरे दोस्त को कोई फर्क मालूम नहीं पड़ा तो इनसे कहा गया कि शाम को बाबा को फिर बुलाकर इसका कारण पूछना पड़ेगा।

शाम को फिर बाबा आये और उनके सामने इस समस्या को रखा गया तो बाबा ने थोड़ी देर तक ध्यान लगाया और बोले वह गोबर ३ साल पुराना नहीं था इसी लिए फायदा नहीं हुआ। तब यह पूछा गया की अब क्या किया जाय तो उन्होंने कहा अगले ग्रहण तक इन्तजार करना पड़ेगा। अगला ग्रहण आने में बहुत समय था इसलिए मेरे दोस्त ने पूछा क्या इसके अलावा कोई उपाय नहीं। तब उन्होंने कहा कल भी कर सकते हो पर इसके लिए बच्चे को रात में ८ घंटे उस गड्ढे में रहना पड़ेगा। ८ घंटा बहुत ज्यादा समय था पर लड़का इसके लिए तैयार हो गया।

दूसरे दिन फिर अच्छी तरह खोजा गया तो एक जगह ३ साल पुरानी खाद मिल ही गयी। रात को यही प्रक्रिया दुहराई गयी। कुछ देर तो सब ठीक था पर ४ घंटे बाद लड़का रोने लगा की कमर

में दर्द हो रहा है। कोई और उपाय न देखकर लोगो ने सलाह दी उसे कहो कि बाबा से ही प्रार्थना करे। उसने ऐसा ही किया और उसने १० मिनट बाद कहा मेरा दर्द गायब हो गया। पर उस दिन की प्रक्रिया के बाद भी उसे फायदा नहीं हुआ।

बाबा से पूछने पर उन्होंने कहा इसकी उम्र बहुत ज्यादा हो चुकी है इसलिए इसे फिर अगले ग्रहण में ही आना ही पड़ेगा। मेरा दोस्त तब लौट आया ।

लौटने के बाद बच्चे ने मेरे दोस्त को एक विचित्र बात बतलायी। उसने कहा उस दिन जब उसने प्रार्थना की तो उसे एक बूढ़े बाबा दिखाई दिए। उन्होंने ही मंत्र पढ़कर उसके दर्द पर फूक मारी तो दर्द गायब हो गया। उसके बाद वे उससे आकर बीच बीच में उसका हाल पूछते रहे। यह बात सुनकर मेरे दोस्त को बहुत आश्चर्य हुआ। उसने कहा बाबा को एक बार याद करो देखो फिर उनके दर्शन होते है या नहीं? उसने ऐसा ही किया। थोड़ी देर बाद उनका लड़का बोला कि बाबा आ गए हैं और सामने के बिछावन पर लेटे हुए है। मेरे दोस्त को समझ में नहीं आया की अब क्या करे तो उसने एक अगरबत्ती जलाई और बाबा को प्रणाम किया। थोड़ी देर बाद बाबा अंतर्ध्यान हो गए। मेरा दोस्त जानता था कि मै इन पारलौकिक शक्तियों की जानकारी का में शौक रखता हूँ, इसलिए उसने मुझसे पूछा क्या इसका कुछ फायदा उठाया जा सकता है? मैंने पूछा क्या मेरे सामने ऐसा होगा और क्या वे मुझसे बात कर सकते है? तो उसने कहा इसके बारे में मै कुछ कह नहीं सकता आप आकर खुद कोशिश कर सकते हैं। मै इस घटना से बहुत हैरान था इसके बारे में और जानने की इच्छा मुझमे जागृत हो गयी थी इसलिए दूसरे दिन शाम को मै उसके घर पहुंच गया।

जब लड़का भी आ गया तो मैंने दोस्त से कहा अगरबत्ती जला दो और कुछ मीठा खाने का सामान और एक गिलास पानी भी उनके लिए रख दो। उसने ऐसा ही किया। तब तब मैंने लड़के से कहा कि अब बाबा को याद कर उनसे आने का आग्रह करो और कहो अंकल आपसे मिलाना चाहते है। उसने ऐसा ही किया और थोड़ी देर में बाबा हाजिर हो गए।

लड़के ने बतलाया कि वे आकर उसी कमरे के बिछावन पर लेट गए हैं। मैंने उनको प्रणाम किया और अनुरोध किया कि आप कुछ ग्रहण करे तो लड़के ने बतलाया की वे खा रहे हैं। मै उनसे उस लडके के माध्यम से ही बात कर रहा था। मैंने लड़के को उनसे पूछने को कहा की पूछो की क्या मै उनसे कुछ प्रश्न पूछ सकता हूँ ? तो उन्होंने अपनी सहमति दे दी।

मैंने उनसे लड़के के माध्यम से पुछवाया कि बाबा से कहो कि वे अपने बारे में कुछ बतलाये। उन्होंने अपने बारे में बतलाया कि लोग मुझे बड़े बाबा कहकर पुकारते है। मै उस लोक में एक अस्पताल चलाता हूँ जिसमे घायल लोगों की चिकित्सा की जाती है। २० और आदमी मेरी सहायता करते हैं। ज्यादातर काम मैं उन्हें ही सुपुर्द कर देता हूँ और जहाँ मेरे बिना काम नहीं चलता वहाँ मैं भी जाता हूँ। बाबा बूढ़े थे और एक बार में ज्यादा समय नहीं देते थे। उन्होंने कहा अब मै जाता हूँ और गायब हो गए।

पाठकों को मैं ये भी बतला दूँ कि इस पूरी बातचीत के दौरान लड़का एक कुर्सी पर बैठा था और पूरे होशोहवास में था। लड़के को बाबा को देखने के लिए आँखे बंद करने की जरुरत नहीं पड़ती थी। केवल बाबा जब कुछ बोलते थे तो वह आँखे बंद कर ध्यान से उसे सुनता था तब फिर आँखे खोलकर हमें बतलाता था।

पाठको के मन में यह सब सुनकर अनेको प्रश्न उठ रहे होंगे जिसका मैं अनुमान लगा सकता हूँ क्योंकि मुझे भी इन बातों को सुनकर बहुत सी बातों पर फिर से सोचना पड़ गया था। इसलिए उनका मै अपने सिमित ज्ञान, अनुभव और शास्त्रों के आधार पर जवाब दे रहा हूँ।

आप सोचते होंगे क्या वहाँ भी आदमी बूढ़ा होता है? देखिये एक बात समझ लें, जो आदमी जिस उम्र में इस लोक में मरता है वह वहाँ अपने आप को उसी उम्र का मानने लगता है, जैसे

अगर कोई आदमी बचपन में मरता है तो वह वहाँ बच्चा ही रहता है वह न उससे बड़ा होता है या छोटा। अगर किसी आदमी की हत्या सर काटकर की गयी हो तो वह वह हमेशा सर कटा ही दिखेगा। वह अपने आप को शारीरिक रूप से उतना ही मजबूत या कमजोर समझता है जिस हालत में वह मरा था। बड़े बाबा बूढ़े होकर मरे थे इसलिए वे अपने आप को बूढ़ा और कमजोर समझते थे इसलिए वे आते ही लेट जाते थे। यहाँ तक कि उसकी आदते भी वही रहती हैं जो इस दुनिया में थी जैसे बड़े बाबा को इस लोक में तम्बाकू खाने की आदत होगी इसलिए जब भी वे उस लडके के शरीर पर आते थे वह ऐसा करता था जैसे उसकी हथेली पर तम्बाकू हो और वह उसे वह थोड़ा रगड़ता था और उसे मुँह में डाल लेता था। ऐसा वह थोड़ी-थोड़ी देर में करते रहता था उसी तरह उनके साथ रहने वाले बंगाली बाबा जब लडके के शरीर पर आते थे तो लड़का थोड़ी थोड़ी देर पर ऐसा करता था जैसे उसकी अंगुलियों में सिगरेट हो और वह उसके कश लगाता था।

आप यह भी सोच रहे होंगे कि क्या वहाँ भी चिकित्सालय होते हैं अगर होते हैं तो किसके लिए? अगर कोई आदमी दुर्घटना में मरता है तो अपने आप को वहां घायल समझता है उन्ही की चिकित्सा वहाँ की जाती होगी।

मैंने उनसे बहुत सारे प्रश्न पूछे। मैंने उनसे ये सब प्रश्न एक ही बार में नहीं पूछा। बड़े बाबा एक बार में इतना समय नहीं देते थे । कभी-कभी तो कुछ देर बाद ही वे बोलते थे एक मरीज अभी-

अभी आया है उसे देखने मुझे अभी जाना होगा और वे चले जाते थे। इसलिए जब मुझे समय मिलता था मै अपने दोस्त के पास जाता था और करीब २ महीने में ये सब प्रश्न मैंने उनसे पूछा

एक बार मैंने उनसे पूछा इस लोक में आप कहाँ रहते हैं? उन्होंने जबाब दिया था कि तुम्हारे लोक में मेरा स्थान यहाँ केवल उसी घर में है जहाँ तुम्हारे दोस्त गए थे और मै वही रहता हूँ। वहीं रहकर मै इस लोक के लोगो के कष्ट को दूर करता हूँ। मेरे साथ काम करने वालो की संख्या बढ़ती रहती है क्योकि इस काम के योग्य लोगों को मै अपने साथ जोड़ लेता हूँ। मेरे मुख्य सहायकों में बंगाली बाबा और मंगल बाबा हैं। अब मंगल बाबा को ही ले लो वे पहले एक

पहलवान थे। मरने के बाद वे एक प्रेत बने और एक घर के लोगो को परेशान करने लगे। जब कोई उन्हें वहाँ से हटा नहीं पाया तो मुझे बुलाया गया तब मैंने उन्हें अपने ब्रह्मपाश में बांध लिया । इसके बाद मैंने उससे पूछा अब तुम सदा बंधे रहना चाहते हो या मेरे साथ रहकर लोगो की सेवा करोगे? तो उसने मेरे साथ रहना चुना और तब से वह मेरे साथ है।

एक दिन मेरे दोस्त ने मुझसे कहा कि जब बाबा यहाँ आ रहे है तो क्या उनसे लड़के को यही ठीक करने की बात नहीं की जा सकती? मैंने कहा कोशिश करके देखने में कोई हर्ज नहीं। उस दिन शाम को मैं उसके घर पहुंचा, जब बाबा आये तो मैंने कहा आप यहाँ आ ही जाते हैं तो बच्चे के ठीक होने के लिए कुछ उपाय करते तो बड़ा अच्छा होता। इसपर बाबा कुछ सोच में पड़ गए। उन्होंने कहा मेरी पूरी शक्ति मेरे स्थान पर रहती है यहाँ मेरी शक्ति कम हो जाती है। फिर उन्होंने सोचकर कहा अच्छा मै इसे ले जाकर इसकी रोज कसरत करवा देता हूँ, इससे इसे लाभहोगा। फिर उन्होंने कहा लिखो मैं एक मालिश का तेल बनाने की विधि लिखा देता हूँ। इस तेल की मालिश से इसे फायदा होगा। इसके बाद उन्होंने तेल में डाले जाने वाले औषधियों की लिस्ट लिखाई और बनाने की विधि बतलाकर चले गये। मैंने दवाओं की लिस्ट देखी की कही लड़का अपने मन से तो कुछ नहीं लिखा रहा तो मैंने देखा की उसमे ऐसे जड़ी बूटियों का जिक्र था जिसका नाम भी साधारण आदमी को पता नहीं होता। बाद में मैंने लड़के से पूछा तुहारा व्यायाम कैसे होता है? तो उसने बतलाया की रोज सवेरे बाबा आते हैं और मुझे एक दूसरे शहर ले जाते है जहाँ एक अच्छा व्यायामशाला है। वहाँ कई बाबा रहते हैं जो मुझे व्यायाम करवाते है, फिर मै लौट आता हूँ। बच्चा शारीरिक रूप से यहाँ सोया रहता था और शायद उसकी रूह वहां व्यायाम करने जाती थी। इन सबसे लगभग ४ महीने में बच्चे के पंजो में लचक आ गयी और घुटनो में भी उसे थोड़ा बल मिला। सुनने में ऐसा लग सकता है की ज्यादा फायदा नहीं हुआ पर यह जान ले की इस रोग में इतना होना भी बहुत बड़ी बात है खास तौर पर इस उम्र में।

एक दिन मेरे दोस्त ने कहा की बाबा का स्थान मेरे घर पर नहीं बनाया जा सकता? इससे बच्चे के ठीक होने और मदद मिल जायेगी और इसे वहाँ ले जाना नहीं पड़ेगा। तो मैंने कहा बाबा की गद्दी वहाँ है इसलिए वो वहाँ से अपना स्थान कैसे छोड़ेंगे? वे वहाँ से बंधे हुए है फिर भी तुम जिद कर रहे हो तो मैं उनसे आग्रह करूँगा। शाम को बाबा से बातचीत हुई तो मैंने उनसे पूछा

क्या आपकी गद्दी यहाँ नहीं बन सकती? तो उन्होंने सीधा इंकार कर दिया और कहा मेरा स्थान वहाँ है मैं वहाँ से कही और कैसे जा सकता हूँ? तब मैंने दिमाग लगाया और कहा की मैं आपको वह स्थान छोड़ने को कहाँ कह रहा हूँ, आप वहाँ भी रहें और यहाँ भी, आप तो एक समय के कई जगहों पर रह सकते हैं। इससे आप दो जगह रहकर और भी अधिक लोगों की सेवा कर पाएंगे। इसपर उन्होंने कहा मैं सोचूंगा। मेरी बहुत मिन्नतों से कई हफ्तों के बाद वे तैयार हो गए और उनको मेरे दोस्त के मकान में ही एक स्थान दे दिया गया। अब उनको रोज दोनों समय अगरबत्ती दिखाई जाती थी और भोग लगाया जाता था।

बड़े बाबा आयुर्वेद के बड़े अच्छे जानकार थे। अब लड़के का उपचार भी बढ़ गया। उनके उपचार का मुख्य तरीका आयुर्वेदिक दवा और हवन था इसके अलावा वे कभी कहते थे की आज ५ मंदिरो में अगरबत्ती लगा कर आओ। कभी वे बच्चे को बाहर कही से ३०-४० किलोमीटर घुमा कर लाने को भी कहते थे। अलग- अलग समय पर उनके कहने के मुताबिक बच्चे को घुटनो पर और कमर में ब्रेस लगवाकर खड़ा भी किया जाता था। लड़के को बार-बार बाहर घुमाने ले जाना पड़ता था। एक दिन मेरे दोस्त का पुराना घुटनों का दर्द उभर आया। बाबा ने उस दिन उसे बच्चे को बाहर घुमाकर लाने को कहा। मेरे दोस्त ने कहा की पहले मेरे घुटनो को ठीक कीजिये तो बाबा ने उन्हें एक मंत्र की ५ माला फेरने को कहा और उसके घुटनो पर फूक मार दी। मेरे दोस्त के अनुसार वह दर्द उसी समय गायब हो गया और उनमे काम करने की नयी ऊर्जा भी आ गयी। लड़के को अक्सर अब बाहर ले जाना पड़ता था बाबा अब जगह का नाम भी बताते हैं जहाँ से घूमकर आना पड़ता था। सबसे बड़ी बात थी कि बाबा यह भी बतला देते थे की कौन सी ट्रेन उस समय स्टेशन पर मिलेगी। बार-बार जाने पर टिकट का खर्च भी लगता था। एक दिन मेरे दोस्त ने कहा की आज मेरे पास पैसे नहीं तो बाबा ने कहा कि मै जिस डिब्बे में बतलाऊं उसी में बैठ जाना। मजेदार बात थी की उस डिब्बे में उन्हें सीट भी मिल जाती थी और उस डिब्बे में कभी चेकिंग नहीं होती थी।

मेरे दोस्त की आर्थिक हालत ठीक नहीं थी। एक दिन मैंने उससे कहा बाबा से इसका उपाय पूछो। उसके पूछने पर बाबा ने कहा की तुम रोगियों को हवन के माध्यम से ठीक करो इसमें मै तुम्हारी सहायता करूँगा और हवन भी करावा दूँगा साथ हीं साथ आयुर्वेदिक दवाएं भी बतला

दूँगा। उसने वैसा ही किया। आज की तारीख में उसने बहुत से रोगियों को ठीक किया और आज उसकी माली हालत पहले से अच्छी है। एक दिन मेरे दोस्त ने कहा बाबा लंगर करवाने को कह रहे है वे कहते है की वहा भी वे साल में एक बार लंगर कराया करते है। मैंने कहा की लंगर में उतने लोगों को खिलाना पड़ता है उसमे तो बहुत पैसा लगेगा। मेरे दोस्त ने कहा मैंने बाबा से यह बात कही थी की मैं इस समय ज्यादा पैसा खर्च नहीं कर सकता तो बाबा ने कहा की तुम केवल अपने उस दोस्त के परिवार बुला कर खिला दो वह भी चल जायेगा। इसलिए मेरे दोस्त ने दूसरे दिन शाम मुझे खाने पर आने को कहा।

मै दूसरे दिन अपनी पत्नी के साथ उसके घर पर गया। हम सब लोग एक साथ खाने पर बैठे। पहले बाबा ने उस लड़के के माध्यम से खाना शुरू किया और उसके बाद हमने भी खाया। मेरे दोस्त ने कहा मै आपको एक मजेदार बात दिखता हूँ। उसने बतलाया की बाबा मिर्च बहुत खाते है पर मेरा लड़का मिर्च खा नहीं सकता। अभी इस लड़के हे माध्यम से बाबा खा रहे है और देखिये मै उन्हें मिर्च खाने को दे रहा हूँ और उसने बाबा को दो हरी मिर्चे खाने को दिया। बाबा ने खुशी खुशी उसे ले लिया और देखते ही देखते कुछ देर में वे दोनों मिर्चे लड़के के माध्यम से आराम से खा गए। लड़के को तीता भी नहीं लगा। मेरे दोस्त ने बतलाया की चुकी इस समय लड़के के शरीर पर बाबा है इसलिए बाबा इस समय भोग लगा रहे हैं इसलिए लड़के को तीता महसूस नहीं हो रहा। लड़का आज के दिन तक पूरा तो ठीक नहीं हुआ पर उसके पंजे सीधे हो गए हैं घुटनो में भी शक्ति आ गयी है और सबसे बड़ी बात उसके रीढ़ की हड्डी और कमर में बहुत सुधार हुआ है। पहले उसे जब बैठाया जाता था तो वह कमर पर से नीचे झुक जाता था पर आज वह सीधा बिना सहारे बैठ जाता है। १८ साल की उम्र में इतना सुधार हो जाना भी चमत्कार से कम नहीं।

तारा माँ का वह साधक

एक दिन मेरे एक मित्र घोषाल बाबू मुझसे भेट करने आए। बातचीत के क्रम में उन्होंने मुझसे पूछा आप सुशील बाबू को तो जरूर जानते होंगे? मैंने कहा नहीं तो उन्हें बहुत आश्चर्य हुआ। उन्होंने कहा वे यहीं एक ऑफिस में काम करते हैं और विशेष बात यह है की वे तारा माँ के बहुत बड़े उपासक हैं। तारापीठ में तो सभी लोग उन्हें बामा कहकर भी बुलाते है। वे लगभग २५ सालों से लगातार दीपावली में तारापीठ जाकर वहां शमशान में साधना करते हैं। घर भी उनका समझिये मंदिर ही है। हर अमावश्या वहाँ हवन भी होता है। चुकि इन सब बातो से जुडी सभी चीजों से आपको लगाव रहता है इसलिए मैंने सोचा आप उन्हें आवश्य जानते होगें। पर वे लोगों से ज्यादा मिलना जुलना पसंद नहीं करते इसलिए बहुत से लोग उन्हें नहीं जानते। शायद इसीलिए आजतक आपको उनके बारे में जानकारी नहीं हुई। तारापीठ, पश्चिम बंगाल के बीरभूम जिले में स्थित है और इस स्थान को यहां स्थित तारा देवी के तांत्रिक मंदिर के कारण जाना जाता है।

किंवदंती के अनुसार, यज्ञ में ना बुलाये जाने से और स्वयं पहुँचने के बाद उपेक्षा के कारण अपमानित होने बाद सती ने यज्ञकुण्ड में कूद कर आत्मदाह कर लिया था। पत्नी की मृत्यु से व्याकुल भगवान शिव ने उनके शव को लेकर सारी दुनिया में तबाही मचानी शुरू कर दी और तांडव नृत्य करने लगे ताकि वह सृष्टि का विनाश कर दें। इसके बाद भगवान विष्णु ने सृष्टि को बचाने के लिए माता सती के शव के अंगों को अपने चक्र से काटना शुरू कर दिया ताकि भगवान का मोह भंग किया जा सके। कटे हुए अंग जिन जिन स्थानों पर गिरते गए वहां - वहां शक्तिपीठ की स्थापना होती गई। तारापीठ में देवी की आंखे गिरी थी, बंगाली में तारा का अर्थ, आँख होता है। इसलिए इस स्थान का नाम तारापीठ पड़ा।

इस मंदिर के पास में ही शमशान स्थित है जहां वर्षों से कई तांत्रिक गतिविधियां चलती आ रही है। महाश्मशान में तारा देवी का पादपद मंदिर है। तारापीठ की यही मुख्य जगह है। यहाँ पर आकर यात्री लोग मनोकामना के लिए ध्यान करते है। वामाक्षेपा, तारा पीठ के सिद्ध अघोरी और माता के परम भक्त थे।

सुशील बाबू के बारे में जानकर मै उनसे मिलने को उत्सुक हो गया। एक दिन रविवार को मै उनके घर पहुंचा और उन्हें अपना परिचय दिया। मेरे बारे में जानकार वे थोड़े नम्र हुए अन्यथा मुझे लग गया कि उन्हें अपरिचितों से बातचीत करना पसंद नहीं। धीरे-धीरे हमलोगो की घनिष्ठता बढ़ती गयी। जब मैं उनके बहुत करीब आ गया तो उनके बारे उनसे मैंने बहुत से प्रश्न पूछे।

मैंने उनसे पूछा की आप कैसी साधना करते है? तो उन्होंने बतलाया कि मै तो केवल माँ की पूजा करता हूँ। मेरे गुरु ने तारापीठ में ही उनका मंत्र बतलाया था। उन्होंने ही मुझे सबसे पहले शमशान में हवन करवाया और उनके देहान्त के बाद मै खुद अकेले हवन करता हूँ। मैंने उनसे पूछा क्या आपने शव साधना की है? तो उन्होंने बतलाया की एक बार उन्होंने शव साधना की है। उस समय इन सबके लिए इतनी सरकारी कड़ाई नहीं थी तो शव भी मिल जाते थे। एक अमावश्या की आधी रात यहाँ के लोगों ने मेरे लिए एक शव का इंतजाम कर दिया

तब मैंने यह पूजा संपन्न की थी। आमतौर पर शव पूजा में पाठ और हवन शव पर बैठकर ही की जाती है पर मुझे यह बात ठीक नहीं लगी की किसी मरे हुए आदमी की छाती पर बैठा जाए इसलिए मैंने यह पूजा शव को सामने रखकर की थी।

मैने उनसे पूछा की क्या आपने भैरवी पूजा भी की है तो उन्होंने कहा हाँ एक बार। उस समय तारापीठ में इस काम के लिए पैसे देने पर युवतियाँ मिल जाती थी इसलिए एक अमावश्या की रात मैंने वह पूजा भी की पर वैसा नहीं जैसा किताबों में लिखा रहता है। आम तौर पर इस पूजा में साधक और भैरवी दोनों नग्न रहते हैं और पूरा मन्त्र पाठ भैरवी को गोद में बैठाकर किया जाता है और शर्त यह रहती है है की पूजा के दौरान साधक को कामोतेजना नहीं होनी चाहिए नहीं तो साधना असफल हो जाती है। मैंने इस पूजा को तो किया पर मैंने भैरवी को गोद में बैठने के बजाय सामने बैठाया था।

मैंने पूछा आप इतने दिनों से साधना कर रहे हैं तो इस बीच कुछ तो अद्भुत अनुभव आपको जरूर हुए होंगे? तो उन्होंने कहा पुरानी बाते अब मुझे याद नहीं रहती पर इतना कह रहे हो तो याद करके बतलाता हूँ। एक बार मुझे गाँव के एक छोटे ब्रांच में पोस्ट कर दिया गया। उस ब्रांच

को चलाने वाले दो ही आदमी थे मै और मेरा सहायक इसलिए वहाँ छुट्टी मिलना बहुत मुश्किल था। इसलिए उस साल दीपावली में मै माँ के दरवार में नहीं जा पाया जिसका मुझे बहुत अफ़सोस था। एक दिन इसी दुःख से रोते हुए मैंने माँ को याद करके कहा की माँ मै कितना अभागा हूँ की मुझे इस बार आपसे मिलने का अवसर भी नहीं मिला क्या मेरा इतना भी सौभाग्य नहीं की मुझे कम से कम आपका प्रसाद भी मिल जाता तो भी मुझे संतोष हो जाता। कुछ दिनों बाद एक आदमी गाँव में आया उसे केवल मेरा नाम पता था और यह कि वे किसी ऑफिस में काम करते हैं। गाँव के लोगों ने कहा की इस नाम के एक ही आदमी है जो किसी ऑफिस में काम करते हैं और उसे मेरे पास पंहुचा दिया। वह आदमी तारापीठ से आया था मै उसे पहचानता भी नहीं था उसने आकर मुझे माता का प्रासाद दिया और कहा अब कभी माँ से ऐसी प्रार्थना नहीं कीजियेगा जब तक मै उसकी खातिरदारी करता उसने कहा मै अभी आता हूँ पर उसके बाद वह नहीं लौटा। मै मां की दयालुता पर रो पड़ा कि वे अपने बच्चो का कितना ख्याल रखती है।

बहुत याद करने पर उन्हें एक और घटना याद आयी। उन्होंने कहा एक अमावश्या मैं तारापीठ में ही था। वहाँ हवन करते-करते सवेरे के तीन बज गए। उसके बाद मुझे माँ के चरणों की पूजा के लिए पादपद मंदिर में जाना था। वहाँ पहुंचकर मैंने देखा की उतने सवेरे भी वहाँ लम्बी लाइन लगी थी। मै थका हुआ था, मैंने सोचा क्या मै इतनी देर लाइन में खड़ा रह पाउँगा? पर माँ के चरणों की पूजा तो करनी ही थी इसलिए मैं लाइन में पीछे खड़ा हो गया। उस मंदिर का काम ज्यादातर औरते ही संभालती है। कुछ देर बाद एक औरत आकर मुझसे बोली यहाँ क्यों खड़े हो आगे चलो ? मैंने कहा इतनी बड़ी लाइन है तो वह बोली मेरे साथ चलो। उसने मुझे सबसे आगे ले जाकर खड़ा कर दिया। आश्चर्य की बात थी की किसी ने कुछ नहीं कहा। उन्होंने कहा चलो पूजा करो और कुछ चाहिए तो बोलो, मैंने कहा पानी मिल जाता तो अच्छा रहता तो उन्होंने कहा मिल जायेगा और एक लड़के को बुलाकर उसे पानी लाने को कहा। थोड़ी देर बाद वह एक बाल्टी में पानी लेकर आ गया। मैंने उससे वहाँ की जमीन साफ़ कर अच्छी तरह पूजा की। पूजा में करीब आधे घंटे लग गए। आश्चर्य की बात थी लाइन के किसी आदमी ने कुछ नहीं कहा। पूजा करके मैं बाहर आ गया और अपना सामान समेटने लगा। उसके बाद मैंने सोचा इस औरत को अच्छा पैसा देना चाहिए क्योकि इसने इतनी भीड़ में मुझे आगे ले जाकर पूजा करवा दी है।

मैंने पैसा निकाल कर अगल-बगल देखा तो वह नहीं थी तो मैंने वहाँ की सेविकाओं से उसके बारे में पूछा पर वे उसके बारे में नहीं बतला सकीं तो मैंने सोचा कही और कमाने चली गयी हैं पर उसको धन्यवाद् और उसका मेहनताना देना जरुरी था। मैंने पूरा शमशान और मंदिर में उसे तलाशा पर वह कही नहीं दिखी। तब मेरे दिमाग में आया की वे तो माँ ही थी। मै अपनी बदकिस्मती पर रोने लगा की माँ मेरे इतने पास थी और मै न उन्हें पहचान पाया न ही उन्हें प्रणाम कर पाया।

मैंने उनसे पूछा की आपने इतने दिनों तक शमशान में साधना की क्या आपको कभी भूत प्रेत या शैतान से सामना हुआ? उन्होंने कहा कभी नहीं। हाँ एक बात तुम्हे बतलाऊ, ८-९ साल पहले मुझे अचानक ये अदृश्य शक्तियाँ दिखाई पड़ने लगीं। ये एकदम साये की तरह दीखते थे। ये आकर मेरा पैर भी दबाते थे और पंखा भी झलते थे पर मै इन्हे डांटकर भगा देता था और कहता था की अगर मुक्त होने की कामना से आये हो तो जाओ पहले किसी गरीब का कुछ उपकार करके आओ। बाद में ये अक्सर आने लगे जिससे मुझे परेशानी होने लगी तो मैंने एक दिन माँ से कहा की मेरी इन्हे देखने की शक्ति ख़त्म कर दे तो मुझे दिखना बंद हो गया।

मैंने पूछा आपने इतने लोगों का के दुःख दर्द दूर किये हैं उसके बारे में बतलाये। तो उन्होंने कहा ऐसी तो बहुत सी घटनाएं है किस-किस को बतलाऊं। कितने लोग अपने बेटी की शादी या अपने नौकरी के लिए मेरे पास आते थे और मैं उनकी प्रार्थना माँ के सामने रख देता था और ९० प्रतिशत केसेस में वह काम हो जाता था पर कुछ ऐसे भी केस मिले जिसे मैं हल नहीं कर पाया तो मैंने निष्कर्ष निकाला की या तो इसने कोई बहुत बड़ा अपराध किया है या इसके नसीब में यह नहीं। उस हाल में मैं उनसे अपनी असमर्थता जता देता था।

एक बात तुम्हे मै और बता दू तुमने भूत प्रेत को पकड़ने और उन्हें कैद करने या उन्हें जलाने के कई मंत्र सिद्ध किये हैं पर मैंने कभी ये सब सीखा ही नहीं। जब कोई इस तरह की समस्या मेरे सामने आती है मैं उन्हें माता के सामने रख देता हूँ और उसे हवन की भभूत लगाने को दे देता हूँ इसी से वे ठीक हो जाते हैं।

मैंने उनसे कुछ घटनाओं के बारे में बताने को कहा तो उन्होंने बताया की एक बार मै ऑफिस से अपने घर लौट रहा था। रास्ते में मुझे एक मकान से मेरे जान पहचान की औरत ने टोक दिया की सालों से आप कभी आये नहीं? मैंने कहा ऐसी कोई खास बात नहीं अभी आ जाता हूँ। बातचीत में मैंने उनका हाल चाल पूछा तो उन्होंने कहा भाईसाहब के जाने के बाद बस ऐसे ही धीरे धीरे जन्दगी गुजर रही है बस एक लड़की है उसी की चिंता है। मैंने पूछा की क्या शादी नहीं हो रही है तो उन्होंने कहा की आपको शायद मालुम नहीं ८ सालो से वह मानसिक रूप से बीमार है। मैंने कहा बेटी को बुलवाइए वह बेटी को ले आई। उसकी बेटी सर झुककर मेरे सामने एक कुर्सी पर बैठ गयी। तब वह बोली मैं चाय बनाकर लाती हूँ तो मैंने कहा अपने और इसके लिए भी लाइये। थोड़ी देर में वह चाय बनाकर ले आई। मैंने सबसे पहले एक चाय उठाई और माँ को मन ही मन याद कर उस लड़की को दिया और पीने को कहा और कुछ देर बाद मैं वहाँ से लौट आया। सबेरे सबेरे पत्नी ने आकर कहा कि एक औरत मिठाई लेकर आई है। मेरी पत्नी जानती है की मैं किसी से मिठाई नहीं लेता इसलिए उसने कह दिया था खुद ही उनको दीजियेगा। मैं हॉल में पहुँचा तो देखा वही औरत है। मुझे देखकर वह बोली भाई साहब आपने क्या कर दिया मेरी बेटी तो चाय पीने के बाद से एकदम ठीक हो गयी तो मैंने कहा इसके लिए माता को धन्यवाद् दीजिये।

इससे मिलती जुलती कई घटनाएं हैं। मेरे ऑफिस में एक चपरासी था वह देवी देवता को नहीं मानता था और माता की शक्ति की और मेरी पूजा का माखौल मेरे पीठ पीछे उडाता था जो मुझे पता था। एक बार उसकी पत्नी को पेट में भयंकर दर्द हुआ। वह ऑफिस से छुट्टी लेकर उसका इलाज कराने चला गया। ऑफिस के अन्य साथियों से मैने दो तीन दिन बाद उसकी पत्नी का हाल पूछा तो उन्होंने बताया की उसका दर्द ठीक नहीं हुआ बल्कि और बढ़ गया है। अगले दिन वह खुद आया और मुझसे कहा की डॉक्टरों को कुछ समझ में नहीं आ रहा और दर्द दूर नहीं हो रहा है और उसकी हालत ऐसी नाजुक है की उसके बचने के आसार कम नजर आ रहे है अगर आप चलकर उसे देख लेते तो बड़ी मेहरबानी होती। अपने पिछले व्यबहार के कारण वह बहुत शर्मिंदा लग रहा था। मै उसके साथ चल दिया। वहां पहुँच कर मैंने देखा कि वह बिछावन पर लेटी है और कराह रही है। मैने स्टाफ के माताजी से कहा इसे यही बैठाइये तो उसने कहा कि यह बैठ नहीं पाएगी तो मैंने कहा जरूर बैठेगी और उसे बैठा दिया और एक ग्लास पानी

मँगाया और अपने हाथ में लेकर उसे पीने को कहा और मन ही मन माता को याद किया। उसने अभी थोड़ा सा पानी पिया था ही कि वह बेहोश हो गयी। सभी घबड़ा गए। मैंने कहा इसके मुँह पर पानी छिड़किये यह होश में आ जाएगी। ऐसा ही किया गया और वह थोड़ी देर में होश में आ गयी। मैंने उससे बैठने को कहा तो वह खुद बैठ गयी। मैंने उससे पूछा दर्द कैसा है तो उसने कहा दर्द नहीं है। वास्तव में जो शैतान उसके शरीर पर सवार था वह भाग गया था उसी से वह गिर गयी थी और उसके जाते ही वह ठीक हो गयी। मै वहाँ से लौट आया। कहने की बात नहीं उसके बाद से वह स्टाफ भी माता का भक्त बन गया।

अभी हाल की ही एक घटना है मेरे यहाँ काम करने वाली बाई छुट्टी मांगने आई मैंने पूछा क्यों तो उसने अपना बायीं बांह दिखाई मैंने देखा वह सामान्य से दो गुनी ज्यादा फूली हुए थी। मैंने कहा लगता है फ़ाइलेरिया का अटैक है जाओ दिखा कर दवा ले लो। मेरी पत्नी वहीं थी उसने कहा थोड़ा भभूत लगा दीजिये तो मैंने कहा बिमारी है इसे दिखा कर आने दो पर पत्नी

भभूत लेकर आ गयी और उसकी बांह पर लगा दिया। वह वही बैठ कर चाय पीने लगी। जब वह जाने लगी तो हमलोगो का ध्यान गया की बांह तो पिचक कर आधी हो गयी गयी है और उसने कहा दर्द भी कम हो गया है। उस दिन उसने हॉस्पिटल जाना टाल दिया। शाम तक उसकी हाथ पूरी ठीक थी। इस घटना के बाद मै सोचने लगा ऐसा कैसे हुवा क्या कुछ टोनो का असर रोग के रूप में भी होता है?

मेरी उनसे अच्छी दोस्ती हो गई थी और मै अक्सर उनसे मिलने जाता था। इसके बाद भी बहुत सी घटनाएं हुई जिसका विवरण आप बाद में पढ़ेंगे।

सरकारे हुजूर

इसके पहले के एक अध्याय में मैंने एक स्किज़ोफेरेनिआ से पीड़ित एक औरत का जिक्र किया था। उसी औरत का पति लगभग दो साल बाद मुझसे मिलने एक बार फिर आया। आप सोचते होंगे कि पहले की घटना का जिक्र कर मैंने उसे खूब सुनाई होगी, पर ऐसा कुछ नहीं हुआ। मै उससे सामान्य रूप से मिला क्योकि मैंने ऐसा कई बार देखा है कि पीड़ित के घरवाले समय लेकर गए पर उस समय पर नहीं पहुंचे। इस लाइन में ऐसा कई बार होता पर क्यों आइये मै आपको बतलाऊ।

कभी-कभी शैतान पीड़ित के शरीर पर हर समय रहता है। ऐसे पीड़ित के सामने अगर आप उसे किसी के पास दिखाने को ले जाने की बात की चर्चा गलती से कर बैठते हैं तो इनको आपकी योजना पता चल जाती है और पीड़ित वहाँ न जा पाए इसके लिए वे तरह- तरह के कारनामे करते हैं। जैसे आप जब उसे वहां ले जाने कोशिश करेगें तो वे पीड़ित की हालत इतनी ख़राब कर देंगे की आप उसे उस जगह पर न ले जा पाए। कभी- कभी तो वे गाडी की दुर्घटना भी करवा देते हैं।

आइये आपको एक घटना सुनाऊं। एक औरत को लेकर एक बार कुछ लोग मेरे पास आये। देखते ही मुझे पता चल गया की शैतान इसके शरीर पर २४ सो घंटे सवार रहता है। मै उस समय कहीं और जाने की तैयारी में था इसलिए मैंने उसे एक ताबीज पहनने के लिए दिया और दूसरे दिन आने को कहा। पर दूसरे दिन केवल उसका पति आया और उसने कहा आपने कैसी ताबीज दे दी थी? उसे घर जाकर पहनते ही उसकी तबियत बहुत खराब हो गयी। पूरे शरीर में जलन होने लगी और अंत में उसने ताबीज निकाल कर फेक दी तो थोड़ी देर में वह ठीक हो गयी और अब वह यहाँ आने को तैयार नहीं। मै समझ गया कि क्या हुआ होगा। ताबीज पहनते ही ताबीज के मुवक्किलों ने शैतान को मारना शुरू किया। शैतान जाना नहीं चाहता था इसलिए उसने पीड़िता को तरह-तरह से तकलीफ देना शुरू कर दिया जिससे वह किसी तरह ताबीज को निकाल कर फेक दे और वह तकलीफ से बच जाए और अपनी इस चाल में वह सफल हुआ।

मैंने अपने दोस्त से उसकी पत्नी का हालचाल पूछा। उसने बतलाया आपसे दिखाने के बाद ६ महीने तक वो कुछ ठीक रही पर फिर उसके बाद उसकी तबीयत ज्यादा ख़राब रहने लगी तब मैंने उसे दूसरे डॉक्टर से दिखाया उसने दवा बदल दी पर उससे भी कोई फायदा नहीं हुआ। तब मैंने उसे यहाँ के शमशान के काली मंदिर में रहने वाले एक तांत्रिक से दिखलाया। उसने बताया की इसको किसी ने टोना कर दिया है जिसको ठीक करने के लिए आपको अमावश्या की रात १२ बजे यहाँ इसी मंदिर में लाना होगा। मेरी गोतनी मकान और संपत्ति का मालिक हो जाने के कारण मुझसे बहुत जलती है और कहती थी की तुमको बर्वाद कर दूँगी मेरा शक सबसे पहले उसी पर गया। मैं नियत समय पर अपनी पत्नी को वहाँ ले गया भी पर उसके झाड़ने का कोई फायदा नहीं हुआ। तब उसने कहा की इसे मेरे घर पर कुछ दिनों के लिए भेजिए वहाँ हवन करना होगा तब फायदा होगा। यह सप्ताह में २ दिन वहाँ जाने लगी और इसी तरह ६ महीने हो गए पर मुझे कोई विशेष फायदा नहीं दिखा। एक दिन यह वहाँ से पैदल लौट रही थी। रास्ते में एक रेलवे की लाइन पार करनी होती है। अचानक इसके पीछे आने वाली औरत ने देखा की यह पटरियों के बीच चलती जा रही है और ट्रैन आने को है। उसने जल्दी से इसे खींचकर वहाँ से हटाया नहीं तो यह खत्म थी। तब से मैंने इसका वहाँ जाना भी बंद करवा दिया। अब आप ही कुछ कीजिये। तब मैंने कहा कल आकर देखता हूँ।

दूसरे दिन मै उसे देखने गया। मैंने पाया की वह अर्धनिन्द्रित अवस्था में है और चुपचाप बैठी है। मैं समझ गया की दवा का डोज अधिक है तब मैंने दवा कम की और कहा इसे एक सप्ताह के बाद देखेगें तभी इसकी असली हालत का पता चलेगा। एक सप्ताह बाद मैंने उसे देखा अब वह बात करने लायक है। मैंने उसे टेस्ट किया पर उसे हाथ में केवल हल्की गर्मी मालूम पड़ी इसका मतलब था की अगर कोई शैतान है तो वह बड़ा शातिर है और टेस्ट के समय शरीर छोड़कर भाग जाता है। मैंने तब और ज्यादा टेस्ट नहीं किया और उसके पति को ७ पलीते दिए हर दिन एक जलाने के लिए और उसके इस्तेमाल का तरीका बतला दिया। सात दिन बाद मैंने उसे देखा वह लगभग सामान्य थी। लेकिन एक महीने बाद फिर उसकी तबियत पहले जैसी होने लगी तो मैं समझ गया की इसको ठीक देखकर उसने फिर से टोना कर दिया है तो मैंने उसे फिर ७ पलीते दिया और फिर वह ठीक हो गयी। यह सिलसिला महीनों चला और मैं भी आजिज आ गया। मैंने सोचा इसे स्थाई रूप से तब ही ठीक किया जा सकता है जब इस टोना करने वाली

औरत को बाँध दिया जाय जिससे वह टोना ही न कर सके। मुझे शैतान को बांधना तो आता था पर एक जिन्दा औरत क्या क्या करूँ मुझे सूझ नहीं रहा था न ही मुझे इसका उपाय बताया गया था। मुझे तब पता चला की क्यों ओझा लोग ऐसे केस में बाद में अपना हाँथ खींच लेते हैं क्योकि ऐसे रोगी को कोई भी ओझा अपना कितना समय दे। मेरे गुरु महीनों से बाहर थे और जल्दी उनके आने की संभावना भी नहीं थी इसलिए मुझे दिशानिर्देश देने वाला भी कोई नहीं था।

एक दिन मैंने सोचा क्यों न टोना करने वाली औरत को ही बुलवाया जाय पर मैं निश्चित नहीं था की वो आएगी या नहीं पर वो आ गयी। मैंने उससे पूछा तुम क्यों इसको तंग कर रही हो? तो उसने कहा इसने मेरी संपत्ति हड़प ली है और अपने किसी कार्यक्रम में मुझे बुलाती भी नहीं। मैंने उसे समझाया की कानूनन वह संपत्ति उसी की है पर वह समझने को तैयार नहीं थी तो मैंने उसे धमकाया पर उसपर कोई असर नहीं हुआ और वह उलटे मुझे ही धमकी देने लगी। मैं अब क्या करूँ मुझे सूझ ही नहीं रहा था तब मैंने उसे मुक्त कर दिया।

ऊपर का वकाया पढ़कर पाठक शायद सोच रहे होंगे की टोना करने वाली औरत तो जिन्दा थी फिर उसकी रूह कैसे आ गयी? और जब वह यहाँ थी तब उसके शरीर को कौन चला रहा था? यह प्रश्न शुरू में मेरे मन में भी उठा पर मुझे किताबे पढ़ने पर इसका जवाब मिल गया।

उस दिन मेरी बातचीत उस औरत के हमजाद से हुई थी। मैं जानता हूँ की अधिकांश पाठको ने हमजाद के बारे में नहीं सुना होगा। इसलिए मै आपको हमजाद या छाया पुरुष के बारे में बतलाता हूँ, हमजाद एक फारसी शब्द है जिसका अर्थ होता है साथ पैदा होने वाला। जैसा की नाम से ही जाहिर है हमजाद हर इंसान के साथ उसी से पैदा होती है जब आदमी जन्म लेता है लेकिन हम को सारी उम्र इस शक्ति का पता नहीं चलता जिसके कारण यह शक्ति सारी उम्र सोयी रहती है। जिस तरह आपकी अपनी छाया कभी आपसे दूर नहीं होती उसी तरह हमजाद भी आपकी छाया है बिलकूल हुबहू आपकी शक्ल का होता है फर्क ये है की छाया तो अँधेरे में दूर भी हो जाती है लेकिन ये कभी भी आपसे दूर नहीं होती। जब किसी जिन्दा आदमी को बुलाया जाता है तब उसका हमजाद ही हाजिर होता है। इसके कही रहने, बात करने का उस आदमी को पता नहीं चलता। साथ ही साथ जिसका वह हमजाद है न ही उसके बोलने, चलने या

काम करने पर कोई अंतर पड़ता है। उस दिन मेरी बातचीत उस औरत के हमजाद से ही हुई थी।

मेरा दोस्त बार-बार मुझसे इस झंझट से छुटकारा दिलाने को कहता था। एक बार फिर मैंने उस औरत को मीडियम के शरीर पर बुलवाया और उसे महिला को आजाद करने को कहा पर फिर वह मुझे चुनौती देकर अपनी शक्तियों का बयां करने लगी और मैं भी गुस्से में आकर उसे ख़त्म करने की धमकी देने लगा पर वह और गन्दी गन्दी बाते बोलने लगी। मै कुछ कहने ही वाला था की एक रोबदार आवाज ने कहा तुम चुप रहो अब मैं इससे बात करता हूँ। उन्होंने उससे कहा की यह अंतिम चेतावनी है तुम्हें अगर अब भी तुम नहीं मानती तो मैं तुम्हारे हाथ पैर में कील ठोक दूँगा पर इससे उस औरत पर कुछ असर नहीं हुआ। तब उन्होंने मुझसे कहा अब तुम आराम करो मैंने इसे कील ठोक दिया है अब यह कुछ नहीं कर पाएगी। मैंने पूछा आप कौन हैं तो उन्होंने कहा मै सरकार हुजूर हूँ। मैंने पूछा आपको तो मैंने नहीं बुलाया था आप कैसे आ गए? तो उन्होंने कहा यह औरत स्वामी जी के पास जाती थी और मैं उसी के पास रहता था। उन्होंने ही इसकी तकलीफ देखकर मुझे इनके पास भेज दिया था आज तुम्हे परेशान देखकर मै तुम्हारे मदद को आ गया। मैंने पूछा क्या भविष्य में मैं आपको अपनी मदद के लिए बुला सकता हूँ तो उन्होंने थोड़ी देर में कहा सोचूँगा और वह रुख़सत हो गए। इसके बाद वह औरत कभी बीमार नहीं पड़ी।

इस घटना से मैं बहुत ही रोमांचित था और बार-बार मेरे दिमाग में यह वाकया घूम रहा था। बाद में मैंने सोचा की अगर सरकारे हुजूर किसी तरह मेरी सहायता को राजी हो जाए तो मुझे किसी और सिद्धि की क्या जरुरत है? और मै कुछ दिनों बाद फिर उनसे मिलने चल पड़ा। मैंने कुछ अगरबत्तियां और मिठाई साथ में ले ली। मैंने मीडियम के सामने अगरबत्ति जलाई और मिठाई रख दी और सरकार हुजूर को याद करने लगा। कुछ मिन्नतों के बाद वे हाजिर हो गये और पूछा क्यों बुलाया है मुझे ? मैंने कहा बस आप से मिलने की तमन्ना थी तो मैंने याद कर लिया। कृपया कुछ मिठाइयां ग्रहण करे। उन्होंने कहा मै अपरचितो के हाथ के कुछ नहीं खाता। मैंने कहा आपसे क्या छुपा है आप तो मेरे बारे में सब कुछ जानते हैं। मै थोड़ा तंत्र-मंत्र जानता हूँ और इसी से पीड़ितों की सेवा करता हूँ। पर कहीं कहीं मुझे कमी महसूस होती है जहां मुझे बतलाने

वाला कोई नहीं होता। मेरी दिली इच्छा है की आप मेरे पास रह जाते और मेरे आध्यात्मिक संरक्षक और गुरु बन जाते। मेरा दिल धड़क रहा था पर आज वे बड़े अच्छे मूड में थे थोड़ी देर बाद उन्होंने कहा ठीक है। मै अभी दो आदमियों के पास रहता हूँ आज से मैं तुम्हारे पास भी रहूँगा। एक बात तुम्हे और बतला दूँ मेरे लिए हमेशा १ ही अगरबत्ती जलाया करो और अगर मिठाई लाओ तो हमेशा तीन की संख्या में। फिर उस दिन वे चले गए। मेरी ख़ुशी का कोई ठिकाना नहीं था आज मैं अपने आप को बादशाह समझ रहा था।

इसके बाद अलग-अलग माध्यम पर उनसे बात होने लगी पर कभी-कभी माध्यम मिलती ही नहीं थी। मेरे उनसे बातचीत कई महीनो तक बीच-बीच में होती रही और उनसे हुए बातचीत के कुछ अंश मैं आपसे बाँट रहा हूँ। मैंने उनसे पूछा अच्छे कर्म करने वाले तो मुक्त हो जाते हैं फिर भी आपको उसी लोक में देखकर आश्चर्य होता है? इसपर उन्होंने कहा मैं मुक्त ही तो हूँ पर पीड़ितों की सेवा के लिए मैंने अभी इस दुनियाँ में रहने का निर्णय लिया है मैं जब चाहूँ उस दुनियाँ को भी छोड़ सकता हूँ। मैंने पूछा क्या भूत प्रेत, भगवन संत सभी एक ही जगह रहते है? उन्होंने बताया वे रहते तो एक ही जगह में हैं पर अलग- अलग आयामों में जो एक जगह पर रहकर भी अलग- अलग है। मैंने पूछा क्या सब एक दूसरे को देख सकते हैं तो उन्होंने कहा ऊंची आयाम के लोग नीची आयाम के लोगो को देख सकते है पर नीची आयाम वाले लोग अपने से नीचे के लोगो को तो देख सकते है पर ऊंची आयाम के लोगो को नहीं। फिर उन्होंने कहा बहुत प्रश्न पूछते हो, उस दुनियाँ के राज खोलना मना है।

मैंने एक दिन उनसे पूछा जिन्न तो रूप भी बदल सकते है क्या कभी ऐसा नहीं हो सकता की मैं बुलाऊ आपको पर आपके बदले कोई दूसरा माध्यम के ऊपर आपके रूप में आ जाये ? ऐसे समय तो वो भी धोखा खा जायेगी। और हो सकता है वह मुझसे गलत काम करावा ले। सरकार हुजूर ने कहा यह संभव है इसलिए आज से जब मैं आऊंगा "आदाब" कहूँगा और जाने के वक्त "आमीन" इससे तुम्हे पता लग जाएगा की मैं ही हूँ। मैंने कहा ऐसा तो देवताओं के साथ भी हो सकता है मैं बुलाऊं दुर्गा माता को और उनके बदले कोई और गलत चीज रूप बदल कर आ जाए? उन्होंने कहा इसकी भी संभावना है। तब उन्होंने कहा अगर तुमने दुर्गा माँ को बुलाया और तुम्हे शक हो तो तुम उनसे कहना आप अपने असली रूप में आ जाये तब वे अपने असली

रूप में आ जाएंगे और माध्यम उसे पहचान लेगा। मैंने कहा ऐसा कैसे होगा? तो उन्होंने कहा तुम्हें जो शक्ति प्रदान की गयी है यह उसके कारण होगा।

मैंने एक बार उनसे पूछा की परमात्मा साकार है या निराकार ? उन्होंने बताया वे निरकार होते हैं। मैंने पूछा क्या देवी देवता होते हैं ? तो उन्होंने बताया हां सभी देवी-देवता है और वे साकार होते है।

मैंने उनसे पूछा क्या ये सब काम आपको खुद करना पड़ता है जैसे शैतानों को पकड़ना, सजा देना। उन्होंने कहा नहीं मेरे नीचे मेरी आज्ञा का पालन करने वाले बहुत से बन्दे हैं जो मेरा काम करते हैं। मैंने कहा मै आपको अपनी सहायता के लिए हर वक्त बुलाऊ यह मुझे ठीक नहीं लगता कोई ऐसी सिद्धि बताये जिससे मेरे पास भी कोई बन्दा हो जिससे मैं काम ले सकूँ। तो उन्होंने कहा सिद्धि की क्या जरुरत है अल्लाह से ऐसे ही मांगो तुम्हे मिल जायेगा। मुझे विश्वास नहीं हुआ कि यह काम इतना आसान होगा। मैंने पूछा कैसे मांगू तो उन्होंने कहा अभी अल्लाह को याद करो और कहो मुझे एक बन्दे की आवश्यकता है जो मेरे लिए काम करे। मैंने वैसा ही किया और ४-५ मिनट बाद उन्होंने कहा तुम्हारा बन्दा हाजिर है। मैंने आश्चर्य से कहा पर मुझे तो दिख नहीं रहा तो उन्होंने कहा कि तुम्हारे सामने खड़ा है तुमको कैसे दिखेगा हां माध्यम को दिख रहा है। मैनें पूछा बन्दे तुम कहाँ हो तो उसने कहा आपके सामने खड़ा हूँ।

मैंने पूछा तुम्हारा नाम क्या है तो उसने कहा मैं तो अभी पैदा हुआ हूँ मेरा कोई नाम नहीं आप चाहे जो रख दे। मैंने पूछा सरकार हुजूर इनका क्या नाम रखा जाए तो उन्होंने कहा अल्लाह के पास से आये हैं इसलिए इनका नाम अल्लाह के बन्दे रख दो। मैंने पूछा अल्लाह के बन्दे तुम क्या काम कर सकते हो तो उसने कहा आप जो भी कहेगे। मैंने पूछा क्या तुम अपने अनेक रूप बना सकते को तो उसने कहा हाँ। मैंने पूछा अगर जिन्नो की एक फ़ौज हो तो क्या तुम उन्हें अकेले ठिकाने लगा सकते हो उसने कहा हाँ । मैंने पूछा मैं तुम्हे कैसे बुलाऊंगा तो उसने कहा बस तीन बार नाम लेकर बुलायेंगे तो मैं हाजिर हो जाऊंगा। मैंने उससे कहा जाओ जब जरुरत होगी तुम्हे बुला लिया जायेगा। वह आदाब करके चला गया। बाद में सरकार हुजूर ने कहा इसे

कभी गलत काम करने को नहीं कहना नहीं तो यह गायब हो जायेगा। इस तरह इतनी आसानी से बन्दा हासिल हो जायेगा मैंने कभी सोचा न था। मेरा दिमाग काम नहीं कर रहा था मैं सन्न था।

एक दिन मैंने सरकार हुजूर से पूछा क्या आप देवी देवताओ से बात करते है तो उन्होंने कहा हां हम साथ रहते है। मैंने उनसे पूछा मरने के बाद क्या होता है? क्या उसका पुनर्जन्म हो जाता है। तो उन्होंने बताया नहीं वे कभी कभी सालो तक भी प्रेत योनि में रहते है फिर उनके कर्मों के हिसाब से उन्हें शरीर दिया जाता है। मैंने पूछा क्या स्वर्ग नर्क होता है तो उन्होंने कहा की स्वर्ग नरक तो इसी दुनियाँ में है। जब तुम अच्छे कर्म किया होता है तो तुम्हे अच्छा शरीर, सुख सुविधा मिलती है पर जब तुमने बुरा कर्म किया होता है तो तुम्हे उसी के अनुसार रोगी या विकलांग शरीर मिलता और दुःख यही तो है स्वर्ग नर्क।

एक दिन मैं सरकार हुजूर से बात कर रहा था, अल्लाह का बन्दा भी वही था। तभी उनलोगो के मुँह से आश्चर्य से निकला अरे और उसके बाद वे शांत हो गए। मैं घबरा गया की ऐसी क्या बात हो गयी जो ये शांत हो गए खासकर सरकार हुजूर क्या कोई और बड़ी हस्ती आई है। यह सन्नाटा लगभग ३-४ मिनटों तक रहा उसके बाद अल्लाह का बन्दा बोल उठा आप तो धन्य हो गए। मैंने कहा क्या हो गया तो उसने कहा अभी सरकार हुजूर के गुरु आ गए थे। उन्होंने आपको आशीर्वाद दिया और आपके गले में सिद्ध माला डाल दी है। मैंने सरकारे हुजूर से पूछा मुझे तो कुछ पता नहीं चला तो उन्होंने कहा तुममे इन सबको महसूस करने या देखने की शक्ति जो नहीं। मैंने पूछा गुरुदेव कैसे हैं तो उन्होंने कहा उनका केवल नीचे का आधा शरीर मुझे दिखता है। मैंने कहा यह माला कैसी है तो उन्होंने कहा यह माला तुम्हे हर संकट से बचाएगी और तुम्हे सिद्धि भी प्रदान करेगी। मैं हर दिन इन सब नई बातों से हैरान था।

एक दिन मैंने बोला कुछ लोग बोलते है देवी देवता दिखते हैं और उनसे बाते किया जा सकता है क्या यह सही है उन्होंने कहा बिलकुल। उन्होंने पूछा किसी से बात करना है ? मैं इस प्रश्न से हैरान था मैंने पूछा क्या यह हो सकता है उन्होंने कहा जिससे बात करना है उन्हें याद करो। मैंने कहा सामने मंदिर में दुर्गा माता है क्या उनसे बात होगी ? उन्होंने कहा उन्हें याद करो, मैंने ऐसा ही किया। थोड़ी देर में माध्यम ने कहा माता सामने खड़ी है मैंने तुरंत उन्हें प्रणाम किया। उन्होंने

पूछा क्या बात है मैंने कहा बस सिर्फ आपका आशीर्वाद लेना है। मैंने पूछा क्या मैं कभी मुसीबत में हूँ तो आपको फिर बुला सकता हूँ? तो उन्होंने कहा याद करना

मैं आ जाऊगी। इसके बाद से तो मुझे हनुमान जी, गणेश जी, काली माँ और भी बहुत देवताओं से बात हुई ।

मै समझता हूँ आपको इन सब बात विश्वास नहीं होगा की इन सबसे मेरे बाते हुई होगी। अगर मैं आपकी जगह होता तो मुझे भी नहीं होता पर क्या करू मै सत्य बात को कैसे छुपाऊ।

एक दिन मैंने पूछ ही लिया बिना सिद्धि किए इतने सारे देवताओं से मेरी मुलाकात कैसे हो गयी। तो उन्होंने कहा यह सब तुम्हारे पिछले जन्म की अर्जन की हुई सिद्धि है। इस समय तुम्हे इसे देने का समय आया है इसलिए तुम्हे दी जा रही है। इसके बाद मेरे बुलाने पर बाद में भी सभी देवता आये भी वह भी एक माध्यम पर नहीं अनेको माध्यम पर। इसके बाद मुझे और भी अनेकों अलौकिक अनुभव हुए जिन सबका जिक्र यहाँ करना ठीक नहीं और यह अध्याय भी बहुत बड़ा हो जाएगा इसलिए अब मैं सरकार हुजूर की मदद से ठीक किये हुए कुछ मरीजों के बारे में आपको बताऊंगा।

एक दिन मेरे एक परिचित की पत्नी ने मुझे फ़ोन किया की उनके पति की तबियत ख़राब है आप आकर उन्हें देख ले। मैंने पूछा क्या हुआ है तो उन्होंने बताया की अभी वे गाँव जाने के लिए तैयार हो रहे थे कि अचानक उन्हें कमजोरी महसूस हुई और फिर चक्कर भी आने लगे। मैंने कहा उन्हें तो शुगर और ब्लड प्रेशर दोनों है किसी में गड़बड़ी होगी वो पहले चेक करवाइये। उन्होंने कहा घर पर ही मशीन है चेक करने पर दोनों ठीक निकला है। एक बात मैं आपको और बतलाऊं ऐसा यह तीसरी बार हुआ है। ऐसे वे एकदम ठीक रहते है पर गाँव जाने के समय ही यह होता है। तब मैंने कहा मैं आ रहा हूँ। मैंने उनके घर जाकर उन्हें देखा। अब मुझे काम करने के लिए एक माध्यम की जरुरत थी। मैंने देखा की एक १३-१४ वर्ष की एक लड़की वहां खड़ी है।

मैंने उसी को माध्यम बनाने के लिए सोचा। मैंने उसे बैठा दिया और उसके हाथों में नक्स दे दिया और कहा बोलो की जिसने अंकल को परेशान किया है उसे दिखाइए। उसने थोड़ी देर में कहा तीन आदमी दिखाई दे रहे है। मैंने तब अल्लाह के बन्दे को याद किया और लड़की से कहा एक आदमी लम्बा चौड़ा आदमी आएगा जब वह दिखने लगे तो मुझे बताना। थोड़ी देर में उसने कहा वो दिख रहे हैं।

तब मैंने अल्लाह के बन्दे को कहा देखो लगता है तीन आदमी इनको परेशान कर रहे है उन्हें बांध कर लाओ। थोड़ी देर में अल्लाह की बन्दा उन्हें बाँध कर ले आया। मैंने उनसे पूछा तुमलोग कौन हो और इनको क्यों परेशान कर रहे हो? तो उन्होंने कोई जबाब नहीं दिया। तब मैंने उन्हें डराया नहीं बतलाने पर मार पड़ेगी। फिर भी वे कुछ नहीं बोले। तब मैंने अल्लाह के बन्दे को उन्हें उल्टा लटकाकर चाबुक से पिटाई करने को कहा। पिटाई खाने के कुछ देर बाद ही वे बोलने को तैयार हो गए तो मैंने पिटाई रुकवा दी। उनमे से एक ने कहा रिश्ते में मैं इनके दूर का चाचा लगता हूँ और मैं यहाँ शांति से रहता था। इधर लगभग ६ महीने पहले ये दोनों मेरे पास आये। बरसों पहले ये मेरे दोस्त थे। इन्होने ही आकर इन्हे तंग करना शुरू कर दिया। अब ज्यादा पूछने से कोई फायदा नहीं था मैंने तब हनुमान जी को याद किया। कुछ देर बाद वे आ गए। तब मैंने उन्हें प्रणाम किया और वहाँ उपस्थित लोगो से भी आशीर्वाद ले लेने को कहा। चुकी ये तीनो साधारण प्रेत थे इसलिए मैंने कहा की इन्हे ले जाकर गंगा नदी में डुबो दे जिससे इनकी मुक्ति हो जाए और अपनी मदद के लिए उन्हें धन्यवाद दिया। मैंने लड़की से पूछा क्या हनुमान जी उन्हें लेकर चले गए तो उसने कहा हां उन्हें वो पूछ में लपेट कर ले गए हैं। इसके बाद मैंने बच्ची की आँखे खुलवा दी। इसके बाद पीड़ित को यह परेशानी कभी नहीं हुई। मैंने उनसे कहा शाम को अगरबत्ती जलाकर हनुमान जी का ध्यान कर लीजियेगा और उन्हें लड्डू भोग लगा दीजियेगा।

इसी तरह एक बार एक जवान लड़का मेरे पास आया और कहने लगा चलकर मेरे चाचा को देख ले। मैंने पूछा उन्हें क्या हुआ है तो उसने कहा मेरे चाचा एक ऑफिस में काम करते है। उन्हें लगभग ६ महीने पहले सर में दर्द हुआ फिर उन्हें ऑफिस का काम करने में दिक्कत होने

लगी। वे अपने काम का निबटारा करने में असमर्थ हो गये। यहाँ के डॉक्टर्स बीमारी को समझ नहीं पाए। तब हमलोग उन्हें एम्स दिल्ली में ले गए। वहाँ उनकी पूरी जांच हुई। उनके सर का सिटी स्कैन किया गया, इइजी किया गया और इसके अलावा न जाने कौन-कौन सी जांच की गयी पर वे भी किसी रोग का पता नहीं लगा पाए। उनलोगों ने २ महीने इन्हे वहां रखा फिर कुछ दवाएं दी और कहा फिलहाल आप इन्हे ले जाए और इन्हे ऐसे काम न करने दे जिससे इनके सर पर जोर पड़े। तब से वे यही हैं। मैं उनके घर गया और देखा उन्होंने दवा के नाम पर विटामिन की गोलियाँ और लैक्टोबैसिलस की गोलियाँ दी थी। मैंने कहा इन्हे देखना पड़ेगा और इसके लिए मुझे एक माध्यम चाहिए देखता हूँ आपके घर में इस लायक कोई है या नहीं। मैंने पहले उनकी लड़की को बैठाया पर १५ मिनट बाद भी उसे कुछ नहीं दिखा तो मैंने उसे उठा दिया और मैंने उनकी पत्नी को लेटने को कहा। भाग्यवश उन्हें अल्ला के बन्दे दिख गये। मैंने उन्हें पीड़ित को दिखाकर कहा की इन्हे कोई परेशान कर रहा है तुम इनके शरीर, घर और आसपास को देखो यदि कुछ मिले तो बांधकर ले आओ। थोड़ी देर में वे एक मर्द और औरत को बांधकर ले आये। ये दोनों पति पत्नी थे और इन्होने पूछने पर आनाकानी नहीं की और बतलाया की इनके घर से थोड़ी दूर पर एक खाली जगह है वे वही रहते थे।

एक दिन ये पास से इत्र लगाकर जा रहे थे तो ये उन्हें पसंद आ गए और वे इसपर सवार हो गए। ज्यादा समय न बर्वाद करते हुए मैंने सोचा इन्हे ख़त्म करवा दिया जाए तो मैंने काली माँ का आह्वान किया। माध्यम ने बतलाया की एक रास्ता है जिसपर आग बिछी हुए है उसी पर चलकर क्रोध में काली माँ आ रही हैं। उनके आने पर मैंने उनका आशीर्वाद लिया और दोनों ख़त्म करने का अनुरोध किया। वे दोनों को उठाकर चली गयी। कहने की जरुरत नहीं उसके बाद से वे ठीक हों गए।

एक बार मेरी पत्नी ने कहा कुछ दिनों से हमारे दूर की एक रिस्तेदार हैं खास तौर पर आपको बुला रही है उनकी उम्र भी ज्यादा है और छड़ी के सहारे थोड़ा चल लेती हैं। हमलोग कुछ दिनों बाद उनके घर पर पहुंचे जो उसी शहर में था। घर में केवल पति पत्नी रहते थे। एक नौकरानी उनका खाना बनाकर चली जाती थी। हम दोनों उनके घर पहुंचे तो वह घर में हमें अजीब सी दुर्गन्ध मिली। चुकी नौकरानी कुछ दिनों से नहीं आ रही थी और ये लोग भी शरीर से लाचार थे

तो हमलोगो ने सोचा शायद मकान कई दिनों से साफ़ नहीं हुआ है इसलिए ये दुर्गन्ध है। वहाँ चाची ने बतलाया की चाचा की तबियत आजकल कुछ ठीक नहीं रहती और आज कल तो वे गुस्सा भी बहुत करने लगे हैं। आज ही की बात ले लें, मैं पूजा करने जा रही थी तो इन्होने फूल का डलिया उठाकर फेक दिया और कहा पूजा नहीं करना है। इसपर मैंने कहा उन्हें देखना पड़ेगा तो उन्होंने कहा इन बातो को ये मानते ही नहीं और कहने पर वे भड़क जायेंगे। तब मैंने कहा इस हालत में मैं क्या करूँ। तो वे बोलने लगी कुछ तो कीजिये। मैंने सोचा क्या किया जाए? तब मैंने थोड़ा पानी मंगाया, उसपर मंत्र पढ़कर फूका और उसे शक्तिकृत किया और कहा इस पानी को उन्हें पिला दीजियेगा। तब उन्होंने कहा पिलाऊंगी कैसे अगर उन्हें पता चल गया तो वे हंगामा खड़ा कर देंगे। तब मैंने उनसे कहा उनके पानी में इसकी कुछ बुँदे डाल दीजियेगा।

इसके बाद उन्होंने कहा मुझे भी देख दीजिये। मेरी तबियत भी ठीक नहीं रहती, ख़ुशी मानो मुझसे छिन गयी है। कुछ दिनों पहले मैं नीचे चापाकल के पास से गुजर रही थी की मुझे लगा की किसी ने मुझे उठाकर पटक दिया है और उसी में मेरी टाँगे टूट गई।

किसी और को वह न देखकर मैंने उनको ही माध्यम बनाया और मैंने पाया की वे माध्यम बन सकती हैं।

मैंने उनपर अल्लाह के बन्दे को बुलवाया और कहा इस परिवार को कौन परेशान कर रहा है उसे बांध कर लाइए तो थोड़ी देर में वे एक आदमी को पकड़ कर ले आये। वह कुछ बतलाने को तैयार नहीं था । बांधकर पिटवाने के बाद उसने बोलना कबूल कर लिया और बताया वह की पीड़िता के मायके से ही आया है। वह बहुत सालो से उनपर है। उसने बतलाया की नल के पास मैंने ही इन्हे पटका था जिससे इनके पैर टूट गए थे। मैंने अल्लाह के बन्दे से उसे ठिकाने लगवा दिया।

बाद में हमें पता चला उनके पास बहुत संपत्ति थी। उसके रिस्तेदार चाहते थे ये गुजर जाए जिससे जमीन पर वे कब्ज़ा कर सके। इस काम के बाद फिर हम दोनों ड्राइंग रूम में पहुंचे तो हमने गौर किया कि कमरे की दुर्गन्ध गायब हो चुकी थी तब हमें समझ में आया की वो दुर्गन्ध

उस गन्दी चीज के कारण ही थी। उन्होंने हमें फिर कुछ दिनों बाद बुलवाया। तब उन्होंने बतलाया की चाचा तो पानी पिलाने के बाद ही ठीक हो गए और दूसरे दिन खुद फूलों की डलिया मांगकर और दिनों की तरह फूल लेने गए। हमने गौर किया कि चाची के चेहरे पर रौनक आ गयी थी और वे ख़ुशी से चहक रही थी वे छड़ी के सहारे ही खूब इधर-उधर दौड़ रही थीं और उस हालत में भी खुद हमारे लिए नाश्ता बनाया था। बातचीत के दौरान उन्होंने बताया की यह ख़ुशी १० साल पहले उनसे जुदा हो गयी थी और उस दिन के बाद ही लौटी है।

आपको मैं विकलांग बच्चे और बूढ़े बाबा के बारे में पहले ही बतला चुका हूँ। एक दिन उस विकलांग बच्चे के पिता यानी मेरे दोस्त ने मुझसे अनुरोध किया कि अगर काली माँ से बात हो जाती तो हम इस बच्चे के ठीक होने के लिए उनसे प्रार्थना करते क्या पता बच्चे का कुछ कल्याण हो जाए। मैं इसके लिए एक दिन उसके घर गया। यहाँ मैं एक बात आपको और बतला दू कि उस लड़के को केवल उन बाबाओ को देखने की शक्ति थी और कुछ वह नहीं देख सकता था। मैंने उसी को माध्यम बनाया और काली माँ का आवाहन किया। कुछ देर बाद बच्चे ने हाथ जोड़ लिया और कहा काली माँ आ गई है। हमलोगो ने भी उन्हें प्रणाम किया। मैं कुछ मिठाईयां अपने साथ ले गया था वह मैंने उन्हें अर्पित किया और लड़के ने बतलाया वे उसे ग्रहण कर रही है। इसी समय मुझे ख्याल आया क्यों न इस बात की पुष्टि की जाए की ये वास्तव में काली माँ है या नहीं। सरकारे हुजूर ने कहा था कि तुम उन्हें अगर असली रूप में आने को कहोगे तो उन्हें आना पड़ेगा। इसलिए मैंने काली माँ से कहा माता अपने असली रूप को दिखाइए। लड़के ने कहा काली माँ अब माँ भवानी के रूप में बदल गयी है। मुझे तुरंत ही याद आ गया की सब देवियाँ माँ भवानी से ही तो उत्पन्न हुई हैं। कुछ देर बाद वे फिर काली माँ के रूप में आ गयी और पूछा क्यों बुलाये हो? तब मैंने कहा इस हैं बच्चे को आप माँ देख ही रही हैं यह न खड़ा हो सकता है न बैठ सकता है आपकी इसपर कुछ कृपा हो जाती। इसपर उन्होंने कहा देखूँगी। इसके बाद हमने उन्हें बिदा कर दिया। उनके जबाब से मुझे अंदाजा हो गया था की शायद वे ज्यादा कुछ नहीं करेंगी और हुआ भी यही।

एक सप्ताह से मेरी तबियत खराब थी। किसी काम में में मन नहीं लगता था गुस्सा आता था। इसके अलावा बिना बात के पत्नी से भी मेरी कहा सुनी हो गयी थी। मै सरकार हुजूर की शरण

में आया। मैंने उनसे इसका कारण पूछा। थोड़ी देर तक उन्होंने सोचा फिर कहा तुम्हारा दोस्त है न जिसका बच्चा बिकलांग है उसी के बाबा का यह कारनामा है। मुझे विश्वास नहीं हुआ। मैनें कहा बाबा को ही हाजिर करवाइये और मेरी उनसे बात करवाइये। थोड़ी देर बाद सरकार हुजूर ने कहा लो बाबा आ गए है और सामने के तख्त पर लेटे हुए है। मैंने उनसे पूछा बाबा क्या यह आपका काम है ? उन्होंने कुछ नहीं बोला। मैंने पूछा मैंने आपका क्या बिगाड़ा था आपने ऐसा क्यों किया ? तो उन्होंने कहा मैं चाहता था तुम उसके साथ मिलकर काम करो जिससे उसकी माली हालत सुधर जाए। मैंने कहा इसके लिए ये करने की क्या जरुरत थी आप मुझसे कह भी तो सकते थे? मैं बहुत गुस्से में था मैंने सरकार हुजूर से कहा इनको क्या सजा दी जाए। तो उन्होंने कहा मैं इनको अपने यहाँ लेजाकर कील ठोक देता हूँ। और वे उसे ले गए।

बाद में मैंने सोचा की बड़े बाबा अगर कीलित हो गए हैं तो वे तो आएंगे नहीं इसकी जांच करनी चाहिए। मैं १५ दिनों बाद अपने दोस्त के पास गया और कहा बड़े बाबा से बात करवाओ तो उसने कहा आजकल वे कुछ दूसरे काम में व्यस्त है इसलिए १०-१५ दिनों से वे नहीं आ रहे हैं उनका काम मंगल और तूफानी बाबा कर रहे हैं। एक बात मैने यहाँ जाना की गन्दी चीजों की सिद्धि भी कर ली जाए तब भी वे कुछ हानि पहुंचाते ही हैं पर छोटे बाबा जिनको हम अच्छा समझते हैं वे भी हानि पंहुचा सकते है।

एक बार मेरा एक परिचित मेरे पास आया और उसने मुझसे सहायता मांगी। मेरे पूछने पर उसने बतलाया की उसके जीजा दिल्ली में रहते थे। जब वे अपने मकान से नीचे आते थे तो कई बार उन्हें तीसरी मंजिल पर अपने कमरे में कोई चलता दिखाई देता था। एक दिन वे बाथरूम में थे तो उन्हें लगा उनकी बहन ने नीचे से उन्हें दो बार तेज आवाज में पुकारा है। वे जल्दी से बाहर आकर नीचे गए पर उनकी बहन ने कहा मैंने तो पुकारा नहीं। इसी तरह की घटना परिवार के अन्य सदस्यों के साथ घटी।

उसके जीजा ने बताया की उनकी तबियत भी आजकल ठीक नहीं रहती, थकान रहती है। मैंने कहा उनका फोटो और मकान का फोटो व्हाटस एप्प पर मँगा लो। उसने मँगा कर मुझे दिया। इस किस्से में में एक अलग बात यह थी की पीड़ित दूसरे शहर में था पर मैं जनता था इन्हे

पकड़ने के लिए दूरी कोई मायने नहीं रखती। मैंने परिचित के घर के ही एक बच्चे को माध्यम बनाया और जब अल्लाह के बन्दे आ गए तो मैंने उन्हें वह घर और उसके जीजा का फोटो दिखाया और कहा इनके घर को और इनके शरीर को देखो और जो भी इन्हे परेशान कर रहा हो पकड़ कर लाओ। उसे कुछ देर में एक आदमी को बांधकर हाजिर कर दिया। उस दिन मैं कुछ थका हुआ भी था इसलिए मैंने सोचा इससे ज्यादा पूछतास करने से क्या फायदा। मैंने अल्लाह के बन्दे से उसका काम तमाम करवा दिया तब से वे लोग बिलकुल ठीक हैं।

एक दिन मेरा वो दोस्त जिसकी पत्नी को स्किज़ोफ्रेनिया था मेरे पास आकर बोलै मेरी पत्नी की हालत फिर से खराब रहने लगी है। मैंने सोचा इस टोना करने वाली को तो कील ठोक दिया गया था इसलिए लगता है यह किसी तरह छूट गयी है तभी वह यह काम कर रही है। मै एक बार फिर उसके घर पर गया और उसकी पत्नी को माध्यम बनाया। मैंने अल्लाह के बन्दे से कहा इसको जो परेशान कर रहा है उसे पकड़ कर लाओ तो वह एक लगभग बीस साल की लड़की को बांध कर ले आया। मैंने उससे पूछा किसने तुम्हे भेजा तो वह बतला नहीं रही थी। जब मैंने उसे पीटने की धमकी दी तो वह रोने लगी और कहा मेरी माँ भी उसके कब्जे में है अगर मैंने बतला दिया तो वह उसे पीटते पीटते जान ले लेगी। तब मैंने उसे समझाया मैं उसे भी छुड़ा लाउँगा तो फिर उसने पीड़िता के देवरानी का नाम लिया। मैं तो पहले से यह जानता था। मैंने माध्यम कहा देखो इसकी माँ कहाँ है तो उसने बताया की एक कमरे में ७ घड़े रखे है जिनपर लाल कपडे बंधे है उन सबमे एक-एक औरत बंद है। उसी सबमे में एक उसकी माँ भी है।

मैंने अल्लाह के बन्दे को कहा जाकर उन सबको आजाद करो और माध्यम को कहा अल्लाह के बन्दे को देखते रहो और यह क्या कर रहा है मुझे बतलाते रहो। उसने बताया की वे उस कमरे तक पहुंच गए है। वे अंदर जाने ही वाले थे की उस औरत ने अपने महावारी का गन्दा पानी दरवाजे पर डाल दिया जिससे अल्लाह के बन्दे वही रुक गए है। इससे मुझे गुस्सा आ गया तो मैंने अल्लाह के बन्दे को कहा पहले इस औरत को बंदी बनाओ और सरकार हुजूर के ऊपर बाले कमरे में इसके हाथ और पैर में कील ठोक दो। माध्यम ने बतलाया अल्लाह के बन्दे ने उसे कील से ठोक दिया है। तब मैंने अल्लाह के बन्दे को कहा उसी कमरे के पास जाओ और एक बाल्टी पानी गंदे पर डाल कर उसे बहा दो और अंदर जाओ मै मंत्र भी पढ़ रहा हूँ। उसने ऐसा

ही किया और अंदर चला गया। मैंने उन सब बंदी प्रेतों को वहाँ से आजाद करवाया और अल्लाह के बन्दे से कहा इन्हे मुनासिब जगह पर रख आओ। इन सबके बाद वह औरत भी ठीक हो गयी।

इसके पहले के अध्याय में मैंने तारा माँ के भक्त घोसाल बाबू के बारे में आपको बताया था। एक दिन मैं उनसे मिलने गया तो वे बोले मुझे एक चिंता सता रही है मैंने पूछा क्या तो उन्होंने कहा अब मेरी उम्र ६५ साल के करीब हो गयी है और मेरे शरीर में पहले इतनी ताकत भी नहीं रही। पहले मैं रात-रात भर पूजा करके सवेरे ऑफिस भी चला जाता था पर अब तो पूरी पूजा करने में भी मुझे दिक्कत होने लगी है और मैं सोच रहा हूँ आगे मैं कैसे इसे कर पाउँगा? अब मेरे गुरु शास्त्री जी भी नहीं रहे जो मुझे कुछ बताये। थोड़ी देर के बाद मैंने कहा आपको मैंने सरकार हुजूर के बारे में बतलाया था चलिए मैं आपको उनके पास ले चलता हूँ आपको इसका उत्तर उन्ही से मिल जायेगा तो वे वहाँ जाने को तैयार हो गए।

मैं उन्हें माध्यम का सहारा लेकर सरकार हुजूर से मिलवाया। फिर मैंने सरकारे हुजूर से कहा इनकी एक समस्या है कि अब ये पहले जितनी तारा माँ की पूजा करने में समर्थ नहीं, ये क्या करे? सरकार हुजूर थोड़ी देर चुप रहे और फिर बोले बतलाना क्या है लो तारा माँ खुद आ गयी हैं उन्ही से पूछ लो। तारा माँ आ गयी थी उन्होंने पूछा घोसाल क्या परेशानी है? घोसाल बाबू की हालत उस समय देखने लायक थी लगता था वे गिर जाएंगे वे बार- बार माँ को प्रणाम कर रहे थे, उनके मुँह से आवाज नहीं निकल रही थी। उनकी आंखों से आंसू बह रहे थे। आखिर जिसकी सेवा लगभग उन्होंने तीस वर्षों तक की थी वही उनके सामने खड़ी थी। उन्होंने सपने में भी नहीं सोचा था की एक दिन ऐसा भी हो सकता है। मैं समझ गया वे कुछ पूछ नहीं पाएंगे। ऐसे भी वे माँ को बहुत गुस्सैल समझते थे और उनसे डरते थे। तब मैंने माँ से कहा यह अभी शायद कुछ बोल नहीं पाएंगे। इनके बदले मै इनके प्रश्न आपसे पूछ रहा हूँ। मैंने कहा माँ अब इनसे पहले जैसी पूजा नहीं होती तो भविष्य में ये आपकी सेवा कैसे कर पाएंगे? माँ ने बड़े प्यार से कहा घोषाल तुम मेरी काली के रूप में और माँ तारा दोनों के रूप में पूजा करते हो न? घोषाल बाबू ने कहा हां। क्यों करते हो दो बार पूजा जब मैं एक ही हूँ ? और क्या तुम जिंदगी भर पूजा ही

करते रहोगे आखिर तुम्हे चाहिए क्या? तुम्हारी तो पूजा पूरी हुई अब जाकर लोगों की सेवा भी तो करो ।

माता ने उनसे पूछा अब मेरे एक सवाल का जवाब दो पूजा में तुम्हारे साथ हवन की तैयरी करने में और हवन होने तक तुम्हारे साथ कौन रहती थी? तु म्हरो पत्नी ना पर तुमने कभी भी उसकी क़द्र की उसकी भावनाओं को समझा? तुम उसे अपने बिस्तर पर भी जगह न दी उसे थोड़ा सम्मान भी नहीं दिया ऐसे में क्या तुम समझते हो मैं तुमसे प्रसन्न होऊगी? आखिर मैं भी स्त्री हूँ। आज के बाद से उसे पूरा सम्मान दो नहीं तो मैं भी तुम्हे छोड़ कर चली जाऊंगी। और तब उन्होंने उन्हें छोटा सा मन्त्र लिखाया और कहा अब से तुम केवल इसी मंत्र की दो माला पढोगे और यही तुम्हारी पूजा होगी। क्या तुम्हे कुछ और पूछना है? किसी ने कुछ नहीं पूछा तो वे चली गयी। इसके बाद घोषाल बाबू की जिंदगी ही बदल गयी और वे इसके बाद मुझसे बहुत प्यार करने लगे। एक दिन घोषाल बाबू ने मुझे बुलाया। जब मैं उनके घर गया तो उन्होंने कहा एक समस्या है जो तुम ही सुलझा सकते हो इसीलिए तुम्हे याद किया है। मैंने पूछा क्या हुआ तो उन्होंने बताया की उनकी बहु आई हुई है और लड़का असम में रह कर ऑफिस का काम देख रहा है। उसे वहाँ कॉलोनी में एक फ्लैट मिला हुआ है। कल उसने बताया है की रात में उसे एक औरत की छाया दिखती है और यह भी लगता है की छत पर बहुत से लोग धमाचोकडी कर रहे है। मेरी बहु परेशान है की उसे कुछ हो न जाए इसलिए तुम कुछ करो। तुम तो जानते ही हो माँ की सेवा के अलावा मैंने और कुछ नहीं सीखा।

मैंने उनकी बहु को ही माध्यम बनाकर लिटाया और शुक्र था कि उसे दिखाई देने लगा। मैंने उससे कहा देखो तुम्हारे घर में कौन है। तब उसने बताया की एक औरत इधर से उधर टहल रही है और वह लगभग ६ महीने की गर्भवती भी लग रही है। मैंने तब उसके माध्यम से अल्लाह के बन्दे को बुलाया और कहा देखो कौन औरत है और उसे बांध कर लाओ। वे तुरंत उसे बांधकर ले आये। तब मैंने औरत से पूछा तुम क्यों इस घर में आई हो। तो उसने कहा मैं किसी को कुछ परेशान थोड़े ही कर रही हूँ। जब मैं ६ महीने की गर्भवती थी तो मेरे आशिक और उसके पिता ने मिलकर मेरा क़त्ल कर डाला। अभी वह यहाँ बगल के फ़्लैट में ही रह रहा है और मैं वही रहती हूँ। कभी-कभी यहाँ टहलने चली आती हूँ। मैंने कहा तुम्हारे आने से यहाँ के

लोगो को परेशानी होती है इसलिए आज के बाद तुम यहाँ नहीं आओगी। वह आसानी से मान गयी तो मैने उससे वादा लेकर उसे छोड़ दिया।

फिर मैंने अल्लाह के बन्दे को कहा देखो जो लोग छत पर है उन्हें बांध के लाओ। वह उन सभी को बांध कर ले आया। तब मैंने उनके सरदार से बात की। उसने कहा यह कॉलोनी एक श्मशान घाट के ऊपर बनाई गयी है। हमलोग यही रहते थे अब कहाँ जाये तो यही घूमते हैं। मैंने कहा कही जाओ पर इस छत पर तुम्हे नहीं आना है। उसने कहा यहाँ हमारे जैसे कई लोग है आप किस-किस को हटाइएगा? मैंने कहा इसकी चिंता करना तुम्हारा काम नहीं। पर वे हटने को तैयार नहीं थे इसलिए तब मैंने सबको क़त्ल करवा दिया।

इस तरह के कितनी और कहानियाँ हैं किस-किस का मै बर्णन करूँ इसलिए मै अपनी लेखनी को यहीं बिराम देता हूँ।

मै कोई लेखक नहीं और मेरी यह पहली पुस्तक है इसलिए गलतियों का होना लाजिमी है इसलिए आशा है आप उन्हें नजरअंदाज कर देंगे। अगर कोई बात आपको इस पुस्तक में गलत करे तो आप मेरे इ-मेल पर उसे मुझे बता सकते हैं आपके टिप्पणी और सुझाव का मुझे इन्तजार रहेगा। किसी खोज का कभी अंत नहीं होता इसलिए मेरी यात्रा भी जारी है अगर कुछ आपके साथ बाँटने के लिए मिला तो फिर मै आपसे मिलूंगा। तब तक के लिए मुझे आज्ञा दे।

चलते चलते

पुस्तक तो ख़त्म हो गया आप सोचेंगे की अब फिर से क्या? अब तक आपने जो भी पढ़ा वे मेरे अपने सत्य अनुभव थे। पर मैंने आपसे कभी अपने विचार तो कहे नहीं। ऊपर के पन्नो पर मैं जो भी लिखता आप उसे मेरा अनुभव समझ लेते। इसलिए मैंने एक अध्याय और जोड़ दिया ताकि मैं आपको इन सबपर अपने विचार बतला सकूँ।

इस पुस्तक में ऐसी कुछ बाते है जो अविश्वसनीय लगती है आपको क्या मैं भी अगर आपकी जगह पाठक होता तो मुझे भी ऐसा लगता इसलिए आप गलत नहीं। आपने बहुत सी अन्य इसी तरह की किताबे पढ़ी होगी जिसमे इसी विषय पर कुछ और लिखा होगा और आप असमंजस में पड़ जायेगे कौन सत्य बोल रहा है? मैंने ऊपर पुस्तक में लिखा है कि ये मेरे अपने सत्य अनुभव है याद रखे मैंने यह कही दावा नहीं किया की मेरे अनुभव के अलावा जो भी लिखा गया वो गलत है। अगर किसी और के अनुभव मुझसे अलग है तो वे भी सत्य हो सकते है। वास्तव में पारलौकिक दुनियाँ इतनी बड़ी है की इसे आप जिस कोण से और जिस माध्यम से देखेंगे यह अलग अलग लगेगी ही क्यों हर ने केवल अपने नजरिये से देखा और वह नजरिया अलग था तो उनको कुछ और दिखाना लाजिमी था।

पारलौकिक दुनिया स्थूल नहीं एक ऊर्जा है और हमें यही समझकर उसकी खोज की चाहिए। जितने भी धर्म के मनीषी थे

वे एक वैज्ञानिक थे पर उन्हें चुकि हम उन्हें ऋषि मुनि के नाम से बुलाते है तो हम उन्हें धार्मिक व्यक्ति समझने लगते है और यहीं से ग़लतफ़हमी शुरू हो जाती है। इस पारलौकिक दुनिया को उन्होंने एक वैज्ञानिक के नजरिये से देखा और इसे अपने लिए कैसे उपयोग में लाया जाय इसके लिए उन्होंने तरह तरह के यंत्रो का भी आविष्कार किया।

आज हर चीजों के विशेषज्ञ अगल अलग होते है पर पहले एक ही व्यक्ति सभी चीजों का विशेषज्ञ होता था। इसीलिए तो आप सुनते है वे मन्त्र भी सिखाते थे तो लड़ना भी सिखाते थे। भगवान शंकर ने इन ऊजाओं को तो तंत्र के माध्यम से वश में करना सिखाया और वे हमेशा इसमें सुधार करने की कोशिश करते रहे। इसी खोज का नतीजा अघोरी विद्या, तंत्र विज्ञानं, साबर तंत्र आदि है। एक तरफ तांत्रिक उन्हें अपने गुरु मानते है तो संगीत सीखने वाले भी भगवान को अपना गुरु मानते है, नृत्य करने वालो के भी वो गुरु है। अगर पारलौकिक ऊर्जा को वश में करके उसे उपयोग में लाने का यंत्र आपको चाहिए तो भी आप उन्ही के पास जाते। ये

सब चीजे अपनी अपनी जगह पर ठीक दिखने लगेगी अगर आप उस शक्ति को ईश्वर का विशेषण न देकर उसे ऊर्जा समझ ले। ऊर्जा का कोई आकार नहीं होता। बिजली एक ऊर्जा है क्या उसका कोई आकार है पर हम कितने बड़े बड़े काम उससे ले लेते है। वह परमात्मा भी एक ऊर्जा है फर्क इतना है की वह ऐसी विशिष्ट ऊर्जा है जिसमें समझ भी है। इसीलिए तो उसको सबसे ऊपर है रखा गया है। ऊर्जा को आप कैसे काम में लाएंगे? इससे काम लेने के लिए यंत्रो की जरुरत पड़ती है जैसे विद्युत एक ऊर्जा है ऐसे यह कुछ नहीं करेगी पर आपके पास उपयुक्त यन्त्र है तो आप इससे काम ले सकते है जैसे आज हम एक, फ्रिज, हीटर, बल्ब को बनाके इससे मनचाहा काम लेते हैं। अगर ये यन्त्र न होते तो आप इनसे कैसे काम लेते ? उसी तरह प्राचीन काल के संतो (वैज्ञानिकों) ने बहुत सा यन्त्र बनाकर इस ऊर्जा से हर तरह के काम लेना शुरू किया और तब से एक नई शाखा ही बन गयी यन्त्र विज्ञान। कभी आपने गौर किया यन्त्र के बाद विज्ञानं शब्द का उपयोग किया गया था। प्राचीन काल से ही इसे विज्ञानं माना जाता था पर आज इसे धर्म, तंत्र मंत्र के साथ जोड़ दिया गया है।

ऊर्जा का कोई लिंग नहीं होता। क्या आप बता सकते है विद्युत पुरुष है या स्त्री? भगवान शंकर के अर्धनारीश्वर रूप में भी इसी नपुंसक लिंग को दर्शा कर यही बताने की कोशिश की गयी थी। ऊर्जा न तो अच्छी होती है न बुरी यह आप पर है की आप उसका कैसा इस्तेमाल करते है। उसी बिजली से आप फ्रिज बनाकर ठंढक पैदा कर सकते है और उसी से हीटर बनाकर हम गर्मी भी पैदा कर सकते है। आप जो भी करे यह विरोध नहीं करेगी बस आपको इसको वश में लाने की विधि आनी चाहिए। यह ये भी नहीं देखेगी की इसको इस्तेमाल करने वाला अच्छा आदमी है या बुरा। कभी कभी आपने सोचा होगा भगवान ने रक्षसो को कैसे सिद्धिया दे दी अगर ऐसा वे नहीं करते तो कोई गड़बड़ी भी पैदा नहीं होती? पर वे ऐसा नहीं कर सकते क्योकि ऊर्जा अपने इस्तेमाल करने वाले को नहीं देखती। यन्त्र का आविष्कार जो भी कर लेगा वह उसका उपयोग कर सकता है।

अक्सर लोग कहते है प्राचीन किताबों में कितनी अविश्वसनीय बातें कही गयी है जैसे ब्रह्म के बायें भाग से ब्रह्मा और दाहिने भाग से विष्णु की उत्पत्ति की हुई। किसी चीज के उत्पत्ति के लिए एक

औरत और एक मर्द की जरूरत होती है और उत्पत्ति के लिए विशेष अंग होता है पर देखिये यहाँ दाहिने और बाएं भाग से ही उत्पत्ति हो गई।

यही पर हम भूल कर बैठते है परमात्मा एक ऊर्जा है मानव नहीं। कभी सोचा है क्या सूर्य से धरती की उत्पत्ति तभी होगी जब उन्हें एक अर्धांगिनी मिलेगी और उनकी संतान के रूप में धरती का जन्म होगा? ऊर्जा का नियम अलग है भाई।

लोग कहते है आखिर ये दिखाई क्यों नहीं देते। कैसे दिखेंगे ये तो एक ऊर्जा है ऊर्जा को क्या आप देख सकते हैं? कभी प्रकाश को आपने देखा है नहीं न आप केवल उसके प्रभाव को अनुभव कर सकते है।

हमने कभी वैज्ञानिक ढंग से सोचा ही नहीं। हम परमात्मा को अलग अलग कोण से देखे तो वह अलग अलग दिखेगा ही। मन्त्रिक मंत्र का सहारा ले रहे है और योगी ध्यान का क्या वे कभी एक चीज देख सकते है? दोनों एक दूसरे की निंदा करेंगे पर कभी उनसे पूछिए क्या कभी आपने दूसरे के मार्ग पर चलकर उनकी बात की सत्यता परखने की कोशिश की तो उनका उत्तर नकारात्मक होगा। विज्ञान में ऐसा नहीं होता। अगर कोई वैज्ञानिक कोई नई खोज ले कर आता है तो उसे ठुकराया नहीं जाता उसे परिकल्पना (हाइपोथीसिस) कहा जाता है वे उसके कथनानुसार अन्य लोग उसकी प्रयोग कर देखते है तब अपना कुछ निर्णय देते है। हम सभी तो वैज्ञानिक ही है इसलिए हमें भी वही तरीका अपनाना होगा।

दुनियाँ में बहुत सारे धर्म है पर उनमे एक समानता है वह कभी आपने गौर किया। सभी ईश्वर को निराकार ही मानते है। हिन्दुओ के बेदो में ईश्वर को निराकार माना गया है तो मुस्लिम भी अल्लाह को निराकार मानते है। बुद्ध ने भी ईश्वर को निराकार ही माना, ईसाईयों में भी गॉड निराकार है। सिक्खो में भी ओंकार को ही सबसे बड़ा माना है और वह भी निराकार की तरफ ही इशारा करता है आखिर क्यों, क्योकि ईश्वर निराकार ही है। अलग धर्मो ने अपनी खोज के मुताबिक अपने विचार दिए है।

इसके बाद भी विचार कीजिये हिन्दुओ में तीन मुख्य देवता है, ब्रह्मा, विष्णु और महेश जिनका काम उत्पत्ति, पोषण और नाश है और मुस्लिमों में भी तीन मुख्य फरिश्ते है जिब्रील, मिकाइल और इस्राफील। तीनो के केवल नाम अलग है पर काम वही है जो ब्रह्मा, विष्णु और महेश करते है।

आखिर इन सबकी खोज में अंतर क्यों है? अगर परमात्मा एक है तो क्यों लोगो का अलग अलग मत उनके बारे में क्यों है? यह प्रश्न सदियों से सभी धर्म के महात्माओ से पूछा गया और इसका उत्तर सबने एक नीति कथा के माध्यम से दिया है चाहे वह हिन्दू धर्म का ऋग्वेद हो, बौद्ध धर्म हो, जै न धर्म हो या सूफी मत हो। स्वामी विवेकानन्द ने भी पश्चिम देशो की यात्रा के दौरान लोगो के इस प्रश्न का उत्तर देने के लिए इस कथा का उल्लेख किया है इसलिए अगर यह कथा आपने नहीं पढ़ी है तो नीचे इसको मैंने दिया है इसे जरूर पढ़े।

हाथी और छह अंधे व्यक्ति

बहुत समय पहले की बात है, किसी गांव में 6 अंधे आदमी रहते थे। एक दिन गाँव वालों ने उन्हें बताया आज गांव में हाथी आया है। उन्होंने आज तक बस हाथियों के बारे में सुना था पर कभी छू कर महसूस नहीं किया था। उन्होंने ने निश्चय किया की भले ही हम हाथी को देख नहीं सकते, पर आज हम सब चल कर छूकर उसे महसूस तो कर सकते हैं। और फिर वो सब उस जगह की तरफ बढ़ चले जहाँ हाथी आया हुआ था ।

सभी ने हाथी को छूना शुरू किया.

मैं समझ गया, हाथी एक खंभे की तरह होता है, पहले व्यक्ति ने हाथी का पैर छूते हुए कहा ।

अरे नहीं, हाथी तो रस्सी की तरह होता है दूसरे व्यक्ति ने पूंछ पकड़ते हुए कहा ।

मैं बताता हूँ, ये तो पेड़ के तने की तरह है, तीसरे व्यक्ति ने सूंढ़ पकड़ते हुए कहा ।

तुम लोग क्या बात कर रहे हो, हाथी एक बड़े हाथ के पंखे की तरह होता है चौथे व्यक्ति ने कान छूते हुए सभी को समझाया ।

नहीं-नहीं, ये तो एक दीवार की तरह है पांचवे व्यक्ति ने पेट पर हाथ रखते हुए कहा ।

ऐसा नहीं है हाथी तो एक नुकीले छुरे की तरह होता है छठे व्यक्ति ने उसके दाँत को छूते हुए अपनी बात रखी।

और फिर सभी आपस में बहस करने लगे और खुद को सही साबित करने में लग गए.... उनकी बहस तेज होती गई और ऐसा लगने लगा मानो वो आपस में लड़ ही पड़ेंगे ।

तभी वहां से एक बुद्धिमान व्यक्ति गुजर रहा था उसने उनसे रुककर पूछा, क्या बात है तुम सब आपस में झगड़ क्यों रहे हो ? उन्होंने ने उत्तर दिया, हम यह नहीं तय कर पा रहे हैं कि आखिर हाथी दिखता कैसा है। और फिर बारी बारी से उन्होंने अपनी बात उस व्यक्ति को समझाई ।

बुद्धिमान व्यक्ति ने सभी की बात शांति से सुनी और बोला "तुम सब अपनी-अपनी जगह सही हो। तुम्हारे वर्णन में अंतर इसलिए है क्योंकि तुम सबने हाथी के अलग-अलग भाग छुए हैं, पर देखा जाए तो तुम लोगों ने जो कुछ भी बताया वो सभी बातें हाथी के वर्णन के लिए सही बैठती हैं।

अच्छा ऐसा है सभी ने एक साथ कहा उसके बाद कोई विवाद नहीं हुआ और सभी खुश हो गए कि वो सभी सच कह रहे थे। कई बार ऐसा होता है कि हम अपनी बात को लेकर अड़ जाते हैं कि हम ही सही हैं और बाकी सब गलत है। लेकिन यह संभव है कि हमें सिक्के का एक ही पहलू दिख रहा हो और उसके अलावा भी कुछ ऐसे तथ्य हों जो सही हों। इसलिए हमें अपनी

बात तो रखनी चाहिए पर दूसरों की बात भी सब्र से सुननी चाहिए, और कभी भी बेकार की बहस में नहीं पड़ना चाहिए । वेदों में भी कहा गया है कि एक सत्य को कई तरीके से बताया

जा सकता है तो जब अगली बार आप ऐसी किसी बहस में पड़ें तो समझ लीजियेगा कि कहीं ऐसा ही तो नहीं कि आपके हाथ में सिर्फ हाथी की सिर्फ सूढ़ आया है और बाकी हिस्से दुसरो की हाथों में है इसलिए वे अगल तरह से हाथी की व्याख्या कर रहे है।

धन्यवाद और आभार

मैं अपनी पत्नी का तहेदिल से शुक्रगुजार हूँ जिसने हर कदम पर मेरा साथ दिया, उसके असीम प्यार, सहयोग और उत्साहवर्द्धन के बिना यह काम पूरा करना नामुमकिन था।

अपने तीनो बच्चो का आभारी हूँ जिन्होंने अपने काम के बीच में समय निकल कर मुझे सहयोग किया।

विशेष रूप से मैं अपने प्रिय मित्र श्री सुमन श्रीवास्तव का आभारी हूँ, जिन्होंने मेरा हर मोड़ पर मेरा उत्साहवर्धन किया, मेरे लेखो को पढ़ा और उसमे सुधार भी किया। साथ ही साथ उन्होंने पुस्तक की प्रूफरीडिंग भी की और हर कदम पर मेरे साथ रहें। अगर वे मुझे उत्साहित न करते तो शायद मैं इस पुस्तक को लिखने के बारे में सोचता रह जाता।

इसके अलावा और भी बहुत से लोग है जिन्होंने प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से मेरी सहायता की उन्हें भी मेरा दिल से धन्यवाद।